पुस्तक-सार

1. अपने भाग्य-निर्माता आप ही हैं। आप सफल या असफल होने के लिए, पूर्णतया स्वतंत्र हैं।
2. जो काम एक जीवात्मा कर सकता है, उसे दूसरा भी कर सकता है।
3. आपके विचार-वचन-व्यवहार आपके भाग्य का निर्माण करते हैं। इसलिए पहले किए गए कर्मों के अतिरिक्त , भाग्य क्या है? कुछ भी तो नहीं।
4. ईमानदार, बुद्धिमान और पुरुषार्थी व्यक्ति का भविष्य, उज्जवल है।
5. आप चाहें तो ज्ञान, बुद्धि व बल बढ़ाकर धन, मान व सहयोगियों को बढ़ा लें या फिर आलस्य, लापरवाही, जुआ-शराब व कामचोरी से इन साधनों को खो दें, ये दोनों विकल्प आपके ही हाथों में हैं।
6. पूर्वकाल या पूर्व जन्म में किया गया कर्म, भाग्य है और अभी और आगे किया हुआ कर्म, पुरुषार्थ है।
7. पुरूषार्थ अच्छा तो, भविष्य भी अच्छा। पुरूषार्थ खराब तो, भाग्य भी खराब।
8. अच्छे कर्म का अच्छा फल....., बुरे कर्म का बुरा फल....., और मिश्रित कर्म का मिश्रित फल, मिलता है।
9. भविष्य को ढालने की शक्ति से सम्पन्न हम लोग, अपने ऐश्वर्य स्वयं रचकर, अपनी तकदीर स्वयं बनाते हैं।
10. 'कर्म में उसका फल' 'पुरुषार्थ में उसका भाग्य', छिपा हुआ होता है।
11. इस जन्म में किया कर्म, इस जन्म में और फल देने से बाकी रह गया कर्म, अगले जन्म में हमें फल देता है।
12. सुख की कामना करने वाले व्यक्ति को, ऐसा ''व्यवहार'' करना चाहिए, जिससे निश्चितत: ''भाग्य'' बनता है।
13. अगर समाज-पंचायत-राजा ने आपको आपके किए गए कर्म का पूरा फल नहीं दिया तो अंत में आपका बचा हुआ फल, ईश्वर देगा।
14. मरते ही.... घर व घरवाले, घर पर ही रह जाते हैं, केवल पाप और पुण्य ही.... हमारे साथ में चले जाते हैं।
15. पाप का त्याग व पुण्य का अर्जन करते-करते..... अपना लोक भी सुधार लीजिए और परलोक भी।

प्रकाशक

दर्शन योग महाविद्यालय

आर्यवन, रोजड़, पत्रा. सागपुर, ता. तलोद, जि. साबरकांठा (गुजरात) 383307

अपने भाग्य निर्माता आप

लौकिक-पारलौकिक जीवन-निर्माण हेतु कर्मफल सिद्धांत विषयक प्रवचन

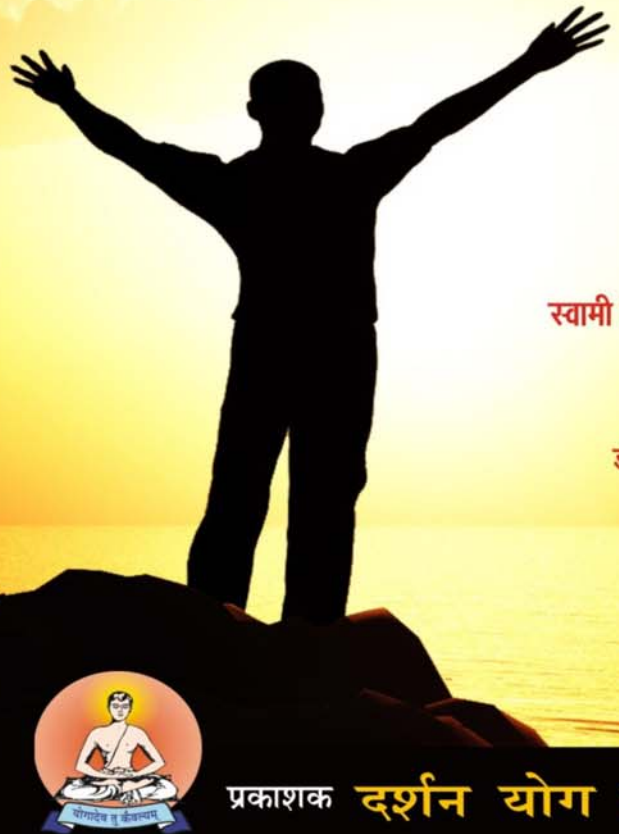

प्रवचनकर्ता

स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक

सम्पादक

डॉ. राधावल्लभ चौधरी

प्रकाशक **दर्शन योग महाविद्यालय**

ओ३म्

अपने भाग्य-निर्माता आप

लौकिक–पारलौकिक जीवन निर्माण हेतु
कर्मफल सिद्धांत विषयक प्रवचन

❖

प्रवचनकर्ता

स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक

सम्पादक

डॉ. राधावल्लभ चौधरी

प्रकाशक

दर्शन योग महाविद्यालय

आर्यवन, रोजड़, पत्रा. सागपुर, ता. तलोद, जि. साबरकांठा (गुजरात) ३८३३०७

दूरभाष : (०२७७०) २८७४१८, २८७५१८ • चलभाष : ९४०९४ १५०११, ९४०९४ १५०१७

Email : darshanyog@gmail.com • Website : www.darshanyog.org
Facebook : darshanyog • Youtube : darshanyog2009
Orkut : darshanyog • Skype : darshanyog

पुस्तक	:	अपने भाग्य–निर्माता आप
प्रवचनकर्ता	:	स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक
संपादक	:	डॉ. राधावल्लभ चौधरी (एम.बी.बी.एस.) पता – ट्यूलिप 20, सुख सागर वैली, पोलीपाथर, ग्वारीघाट, जबलपुर (म.प्र.) Mob.-9424306170,Email : cdrradhavallabh@yahoo.in
संपादन सहयोग	:	डॉ. रेखा चौधरी, सुरेन्द्र दुबे (वरिष्ठ पत्रकार)
टाइप व डिजाइन	:	मोहित ठाकुर (राजा)
प्रकाशन	:	फरवरी 2014
संस्करण	:	प्रथम
लागत मूल्य	:	20 रूपये मात्र

प्रकाशक

दर्शन योग महाविद्यालय

नोट– कोई भी व्यक्ति अथवा संस्था इस पुस्तक का स्वयं प्रकाशन कर सकती है। अतएव इच्छुक सज्जन कृपया पुस्तक की निःशुल्क साफ्ट कापी को प्राप्त करने के लिए विद्यालय से संपर्क करें।

प्राप्ति स्थान

अहमदाबाद : वैदिक संस्थान : **ओढव** – 079–22972340, आर्यसमाज, रायपुर दरवाजा बाहर– 079–25454373, आर्य समाज सैहजपुर, वोधा– 079–22815216, थलतेज–09825307630, **दिल्ली** : विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, नई सड़क–011–23977216, आर्य प्रकाशन : अजमेरी गेट–9868244958, आर्य प्रतिनिधि सभा, हनुमान रोड़–011–23360150, **अजमेर** – ऋषि उद्यान : 0145–2632572, **राउरकेला** : श्रुति न्यास : 9309214912 **आमसेना** – गुरूकुल आश्रम : 7873111213, **होशंगाबाद** : गुरूकुल महाविद्यालय : 07574–275788 **गाँधीधाम** : श्री चंद्रेश जी आर्य : 94274 58494 **निलंगा** : विजय वस्त्र भंडार : 94233 49409, **लोहारू** : पतंजलि आरोग्य केन्द्र, आर्यसमाज : 97284 55044, **आर्य समाज मंदिर** : पोरबंदर : 9428703173, राजकोट – 0281–2231146, भरूच– 02642–2626435, गांधीनगर–9924751191, आणंद–9427858935, जामनगर – 0288–2550220, भावनगर– 0278–2571116, सुरत–9328270373 पिम्परी–020–27410047, नडियाद– 09825717494, खेड़ा अफगान– वैदिक संस्कृति उत्थान न्यास–08445044922, भुजोड़ी (भुज) योगधाम – 09427235527, मेरठ (सत्यकाम इंटरनेशनल स्कूल)– 09897064329

भूमिका

आर्य समाज अहमदाबाद के तत्वावधान में 21 जुलाई 2013 कों कर्मफल सिद्धांत शिविर का आयोजन किया गया था। जिसमें दर्शनों के प्रकाण्ड विद्वान और दर्शन योग महाविद्यालय, रोजड़ के निदेशक पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी महाराज ने जीवात्मा के कर्म करने के साधन, प्रकार, प्रतिक्रिया व कर्मफल के नियमों की जानकारी दी थी।

मंच संचालन के दौरान मेरे मन में यह बात आई थी कि इस विद्या की सुरक्षा होनी चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ीयों को इसका लाभ मिले।

धर्मग्रन्थों में इस विद्या को अत्यन्त मूल्यवान बताया गया है। इसे जानकर हम शांत, सफल, समृद्ध और सबल जीवन जी सकते हैं। वैदिक मान्यताओं का ज्यादा से ज्यादा प्रचार हो ताकि सुख व शांति का वातावरण फिर से आए, इस उद्देश्य को लेकर पूर्व में वैदिक संस्थान द्वारा उक्त आयोजन की विडियो सीडी का निर्माण किया गया था।

अब इसी क्रम में स्वामी जी के उक्त विषयक प्रवचनों को डॉ. राधावल्लभ जी चौधरी ने संपादित कर पुस्तक का रूप दिया है। और नाम रखा है– ''अपने भाग्य–निर्माता आप''।

आमजन के मन में ये जिज्ञासाएं बनी रहती हैं कि अच्छे कर्म कौन से हैं, बुरे कर्म कौन से हैं, अच्छे कर्मों के क्या परिणाम हैं और बुरे कर्मों के क्या परिणाम हैं, पुरूषार्थ क्या है, भाग्य क्या है, कर्मों का फल कब मिलता है, कौन फल देता है, कर्मफल के क्या नियम है, भविष्य कैसे बनता है, प्रायश्चित्त क्या है, आदि–आदि इन विषयों पर इस पुस्तक में प्रमाणिक जानकारी दी गई है।

कर्म का विषय अत्यन्त गंभीर और जटिल है, परन्तु मैं स्वामी जी का अन्तःकरण पूर्वक आभार मानता हूँ कि उन्होंने इसे इतना सरल कर दिया है कि लक्ष्य का निर्धारण करने और फिर लक्ष्य प्राप्ति की गति तीव्र करने में यह पुस्तक निश्चित रूपेण समर्थ सिद्ध होगी। मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक पाठकों के लिए बहुत लाभदायक सिद्ध होगी। अतः सभी सज्जनों से प्रार्थना है कि वे इस पुस्तक का प्रचार तन–मन–धन से करके पुण्य लाभ का अर्जन करने की कृपा करें।

दि. 27.01.2014

विनीत
लाल चंद आर्य
पता– 3, माधव होम्स, वस्त्र लेक के पास,
अर्पण स्कूल रोड, अहमदाबाद (गुज.)
फोन – 09824046398

अन्दर के पृष्ठों में

विषय	पृष्ठ
अध्याय 1– आप ही हैं, कर्म के कर्ता	
❖ व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है।	07
❖ स्वतंत्र व्यक्ति अन्यों के अनुसार चलने के लिए बाध्य नहीं है।	10
❖ ईश्वर हमें बुरे कर्मों से सीधे नहीं रोकता।	11
❖ क्या ईश्वर हमें कर्म करने की प्रेरणा देता है?	11
❖ हम अविद्या के कारण बुरे कर्म करते हैं।	13
अध्याय 2 – 'कर्म–पुरूषार्थ'	
❖ कर्म की परिभाषा।	14
❖ कर्म करने के तीन साधन।	14
❖ शुभ, अशुभ और मिश्रित कर्म।	15
❖ क्रियमाण, संचित और प्रारब्ध कर्म	20
❖ कृत, कारित और अनुमोदित कर्म	21
❖ सकाम कर्म।	21
❖ निष्काम कर्म।	22
❖ कहते हैं कि कर्म करो, फल की इच्छा पहले मत करो। किन्तु बिना लक्ष्य या फल सामने रखकर प्रयत्न करने में पूर्ण निष्ठा कैसे होगी?	25
अध्याय 3 – 'फल–भाग्य'	
❖ कुछ कर्मों का फल, अभिभावक देंगे।	27
❖ कुछ कर्मों का फल, गुरु देंगे।	27
❖ कुछ कर्मों का फल न्यायाधीश देंगे।	28
❖ प्रत्येक व्यक्ति कर्मफल नहीं दे सकता।	28
❖ कुछ कर्मों का फल ईश्वर देगा।	28
❖ कब मिलता है फल?	29
❖ ईश्वर तत्काल क्या फल देता है?	29
❖ ईश्वर कुछ फल देरी से देता है।	30
❖ किया कर्म कभी व्यर्थ नहीं जाता है।	31
❖ क्या माता–पिता और परिजनों द्वारा हमारे कर्मों का जो फल मिल जाता है, वो फल वहीं खत्म हो जाता है या दुबारा भगवान भी उसका फल देंगे?	32
❖ भगवान मनुष्य का शरीर देते हैं, मगर किसी को लड़का बनाते हैं, किसी को लड़की तो क्या यह शरीर अपने कर्मों से मिलता है या भगवान अपनी इच्छा से देते हैं?	33
❖ कुछ कर्मों का फल इस जन्म में, कुछ का अगले जन्मों में।	33
❖ कर्मों का फल क्या मिलेगा?	35
❖ अभी हम कर्म कर रहे हैं या अशुभ फल भोग रहे हैं, अर्थात क्या वो क्रियमाण कर्म कर रहे हैं या प्रारब्ध कर्म का फल भोग रहे हैं?	35
❖ अच्छे कर्म का अच्छा, बुरे कर्म का बुरा और मिश्रित कर्म का मिश्रित फल।	36
❖ क्या कर्म, भाग्य एक दूसरे के साथ	

विषय	पृष्ठ
जुड़े हुए हैं? एक मजदूर दिनभर मेहनत करके, 200 रू. ही कमाता है, लेकिन एक झूठा तथा बेईमान आदमी बिना मेहनत लाखों रूपये कमाता है। क्या उसे भगवान सजा देगा?	38
❖ जानते हुये भी गलत कार्य में सहयोग देना, जैसे कि वकील अपने क्लायेंट को जो कि अपराधी है, उसको बचाता है तो क्या उसको भी कोई दण्ड मिलेगा?	40
❖ मांसाहार करने वाले इंसान में से किसको दंड मिलेगा? जो उत्पन्न करे उसको या तैयार करे उसको या खाने वाला हो उसको?	41
❖ घर का स्वामी घर के शेष व्यक्तियों को जब खिलाता है तो फिर वह अकेला दोष का भागी क्यों होगा?	42
❖ हमारे से छोटे जीव–जन्तु जैसे कीड़े–मकौड़े या मच्छर अनजाने में मर जाते हैं। तो उसके लिए हमको क्या करना चाहिए और क्या इस कर्म की हमको सजा मिलेगी?	42
❖ जानबूझकर गलती करने वाले को अधिक दण्ड।	43
❖ मनुष्य अन्य प्राणियों की तुलना में अधिक सुखी है।	43
❖ अगले जन्म में मिलने वाला पहला फल जाति है।	46
❖ शरीर के पापों का दण्ड।	46
❖ वाणी के पापों का दण्ड।	48
❖ मन के पापों का दण्ड।	48
❖ आजकल बच्चे बहुत स्मार्ट (तेज बुद्धि वाले) उत्पन्न हो रहे हैं? क्या यह भी पूर्व जन्म का फल माना जाये?	49
❖ क्या करें कि अगला जन्म अच्छा हो।	49
❖ किसने देखा है अगला जन्म।	52
❖ अगले जन्म में मिलने वाला दूसरा फल आयु है।	56
❖ उम्र पहले से निर्धारित नहीं होती।	57
❖ हम अपनी उम्र बढ़ा सकते हैं।	57
❖ हम अपनी उम्र घटा सकते हैं।	58
❖ वेद के अनुसार आयु घटती और बढ़ती है	60
❖ इंसान को मृत्यु से डरना चाहिए या नहीं?	60
❖ अगले जन्म में मिलने वाला तीसरा फल भोग है।	61
❖ हम भोगों को घटा–बढ़ा सकते हैं।	61
❖ दो व्यक्ति एक साथ, एक जैसा ही कार्य करते हैं। फिर भी उनको अलग–अलग फल क्यों मिलता है?	62
❖ ईश्वर पाप माफ नहीं करता है।	63
❖ क्या संचित कर्म या प्रारब्ध कर्म को हम कोई उपाय, विधि, तंत्र–मंत्र, बाधा या अन्य उपायों से दूर कर सकते हैं? लोगों को उपाय करने से फल मिलता है, उसका कारण क्या	

विषय	पृष्ठ
है?	65
❖ गलत काम हो गया और पता चल गया कि गलती हो गई है तो उसका क्या प्रायश्चित्त करना चाहिये?	67
❖ आधी जिंदगी बीत गई, आज कर्मफल के बारे में समझ मिली। अज्ञानता वश जो पाप कर्म हो गये, इनकी सजा या दण्ड से बचने के लिये कोई उपाय?	70
अध्याय 4 – कर्म और फल, पुरूषार्थ और भाग्य	
❖ कर्मफल सिद्धांत समझना बड़ा कठिन।	71
❖ वेद व वेदानुकूल ग्रन्थों के आधार पर कर्मफल सिद्धांत को समझना चाहिए।	71
❖ कर्मफल के दस नियम।	72
❖ कर्मफल का ज्ञान होना सुधार का कारण है।	74
❖ कभी न कभी तो फल मिलेगा, भाग्य बदलेगा।	77
❖ जो कार्य करता है, वही उसका फल भोगता है।	77
❖ जैसी करनी, वैसी भरनी।	80
❖ कर्म का असली फल क्या है?	80
❖ पुरूषार्थ से भाग्य बनता है।	81
❖ कर्म, हमारे भाग्य निर्माता।	82
❖ पुरुषार्थ ही भाग्य है।	85
❖ भाग्य में रोकने की शक्ति नहीं है।	85
❖ पुरुषार्थ भाग्य से बड़ा है।	86
❖ ईमानदारी, बुद्धि और पुरुषार्थ भाग्य निर्माण के साधन हैं।	86
अध्याय 5 – कर्म का परिणाम, प्रभाव और फल	
❖ कर्म का परिणाम।	88
❖ कर्म का प्रभाव।	88
❖ कर्म का फल।	89
अध्याय 6 – भाग्यवाद	
❖ घटनाएं होना पहले से तय नहीं है।	92
❖ भविष्य कोई नहीं बता सकता।	92
❖ भाग्यवाद।	96
❖ भाग्यवाद का दुष्परिणाम।	98
❖ जीवन में मिला सारा सुख–दुःख हमारे कर्मों का फल नहीं होता।	98
❖ जो हम भोग रहे हैं, वह कर्मफल है तो भाग्य क्या है?	103
❖ अन्याय से कोई नहीं बच सकता।	104
❖ कुछ अन्याय की भगवान क्षतिपूर्ति करेगा।	105
❖ अन्याय से बचना है तो मोक्ष में जाओ।	106
❖ मोक्ष में जाने के पश्चात् कर्मफल भोगना शेष बचा रहता है क्या?	107
❖ सबसे पहली बार जब ईश्वर ने सृष्टि बनाई तो किन कर्मों के आधार पर बनाई?	107
❖ जब भगवान हमें कभी आज तक मिले नहीं, तो उन पर विश्वास कैसे करें?	109

अपने भाग्य–निर्माता आप

अध्याय 1 आप ही हैं, कर्म के कर्ता

प्रियवर, सौभाग्य आपका दरवाजा खटखटाने को है और, आपसे पूछ रहा है कि– यदि ईमानदारी, समझदारी और मेहनत, आपके घर में मौजूद हों, तो मैं अन्दर आ जाऊं?

ईमानदारी, समझदारी और मेहनत से अपना सौभाग्य बनाकर हम भाग्यवान कहलाते हैं। ''हम कर्मों को नमस्कार करते हैं, जिन पर विधाता का भी वश नहीं चलता'', ऐसा भर्तृहरि जी कहते हैं –

नमस्तत्कर्मेभ्यो विधिरापि न येभ्यः प्रयवति। (नीति शतक–95)

आप जन्म से स्वतंत्र हैं, स्वयं अपने स्वामी हैं, अपना कार्य आप कर सकते हैं, आपको जीवन देने वाले ने आपको स्वतन्त्रता भी प्रदान की है। उस स्वतन्त्रता के माध्यम से सुख को, शांति को, उन्नति को, परम तत्त्व (ज्ञान) को, परम पद (मोक्ष) को प्राप्त करने में, आप स्वतन्त्र हैं, आजाद हैं। **आप सफल होने के लिए भी स्वतन्त्र हैं और असफल होने के लिए भी।** इसलिए भरोसा पैदा करिए अपने में, कि मैं स्वयं गिरना न चाहूं तो कोई मुझे गिरा नहीं सकता और स्वयं उठना न चाहूं तो कोई मुझे उठा नहीं सकता।

मैं इस विषय में आपसे जो भी कहूँगा, अपनी कोई व्यक्तिगत मान्यता नहीं कहूँगा। जो प्रश्नों के उत्तर दूंगा, शास्त्रों से ही दूंगा, ऋषि–मुनियों के ही सिद्धांत बताऊंगा। और इस विषय में पहला सिद्धांत है–

व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है

शरीर में बैठे हुए हम जीवात्मा, स्वयं इच्छा करने वाले, स्वयं प्रयत्न करने वाले, स्वयं ज्ञान को अनुभव करने वाले आदि अपने स्वयं के स्वाभाविक गुणों से

सुसज्जित एक स्वतंत्र कर्ता हैं। **हम ही अपने मन से विचार करने वाले हैं, हम ही वाणी से उच्चारण करने वाले हैं और शरीर से गति करने वाले भी हम ही हैं, कोई दूसरा नहीं।**

सत्य सिद्धांत तो यह है कि जीवात्मा इच्छा, राग, द्वेष, प्रयत्न, ज्ञान आदि गुणों को धारण करने वाला एक चेतन तत्त्व है और वह कर्म करने में स्वतंत्र भी है। शरीर में बैठे हुए जीवात्मा की इच्छा और प्रयत्न के कारण से उसके शरीर, मन और वाणी रूपी कर्म के साधन कर्म को करने में प्रवृत्त होते हैं। वह अपनी इच्छा, प्रयत्न आदि से समस्त कर्मों को किया करता है और उन कर्मों के प्रति स्वयं ही उत्तरदायी होता है। इसमें प्रमाण है कि– **एष हि दृष्टा, स्प्रष्टा, श्रोता, घ्राता, रसयिता, मन्ता, बौद्धा, कर्ता विज्ञानात्मा पुरूषः।। प्रश्नोपनिषद्।।** वेद आदि सत्य शास्त्रों में बताया गया है कि वह जीवात्मा ही देखता है, छूता है, सुनता है, चखता है यानी रस लेता है, मनन करता है, जानता है, यानी ज्ञानस्वरूप है, वही कर्म करता है। वही चेतन जीवात्मा, फलों को भोगने वाला भोक्ता है।

तुलनात्मक दृष्टि से देखें तो पता चलता है कि, जितनी स्वतंत्रता (100 प्रतिशत) मनुष्यों के पास है, उतनी किसी और प्राणी के पास नहीं है। हमारी 24 घंटे की स्वतंत्रता है। हम जब इच्छा हो तब खा–पी लें, घूम लें, सो जाएं, सैर कर आएं, कुछ भी कर लें। मान लो कि किसी कुत्ते की इच्छा हो रही हो जलेबी खाने की। पर क्या वो जलेबी खरीद के खा सकता है? नहीं खा सकता।

हम कर्म करने में स्वतंत्र हैं, इसलिये हम गलती कर सकते हैं। ईश्वर हमारा हाथ नहीं पकड़ता। एक विद्यार्थी परीक्षा भवन में परीक्षा दे रहा है। प्रश्नों के उत्तर लिख रहा है। जैसे उसको छूट है कि वो सही लिखे, गलत लिखे, आधा लिखे, पूरा लिखे, जो मर्जी हो लिखे, ऐसे ही हम स्वतंत्र हैं, हम अच्छा काम करें, बुरा करें, आधा करें, पूरा करें, आज करें, कल करें, जो भी करें, हमें छूट है।

इसलिए अब पसंद आपकी है कि आपको सकाम कर्म करना है या निष्काम कर्म करना है। सांसारिक सुख भोगना है या मोक्ष का सुख भोगना है, वो आपकी इच्छा है। वेदों के अनुसार ऐसा सिद्धांत है कि– व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है। इसलिए इस बात को बहुत अच्छे से दिमाग में बैठाएं। स्वतंत्रता के स्वरूप को समझें।

एक शब्द है– 'स्वतंत्रता' और दूसरा शब्द है– 'स्वच्छंदता'। दोनों में बहुत

अन्तर है। प्रायः लोग इसका अन्तर नहीं समझते। लोग स्वतंत्रता को छोड़कर स्वच्छंदता के क्षेत्र में घुस जाते हैं, इसीलिए उसका दण्ड भोग रहे हैं।

वेद आदि शास्त्र, ऋषि लोग क्या समझाते हैं? वो कहते हैं कि **स्वच्छंदता अर्थात अपनी मनमानी मत करो,** कानून तोड़कर बाहर मत जाओ, कानून के अंतर्गत रहकर काम करो। आपके पास पचास विकल्प (ऑप्शन) हैं, जो मर्जी, वो करो, जो अच्छा लगे, वो करो लेकिन करो कानून के अंतर्गत। अनुशासन में, संविधान के अंतर्गत रहकर काम करो, फिर आपको सुख मिलेगा। कहा भी है कि–

स्वयं कर्म करोत्यात्मा स्वयं तत्फलमश्नुते।

स्वयं भ्रमति संसारे स्वयं तस्माद् विमुच्यते।। (चाणक्य नीति 6.8)

भावार्थ :– अच्छे–बुरे कर्म कोई और नहीं बल्कि आत्मा स्वयं ही अपनी इच्छा से किया करता है। अच्छे–बुरे कर्म का फल कोई दूसरा नहीं, वही स्वयं भोगता है। वह कर्मों के अनुसार ही विभिन्न योनियों में जन्म लेकर संसार में भ्रमण करता है। इस प्रकार बार–बार संसार में जन्म लेने के लिए जिम्मेदार भी वह स्वयं ही है। वह स्वयं ही अपने पुरूषार्थ से संसार के जन्म–मरण के बन्धनों और आवागमन के चक्र से छूटकर मुक्ति को प्राप्त करता है।

यदि हम जीवात्मा ईश्वर के अधीन होकर कर्म करें अर्थात कर्म करने में परतंत्र होवें तो इस स्थिति में हमारे कर्मों को कराने वाला ईश्वर माना जाएगा, हम नहीं। जीव के कर्मों का कराने वाला ईश्वर माना जाने पर तो जीव द्वारा किए गए अच्छे–बुरे कर्मों का सुख–दुख रूपी फल भी ईश्वर को ही भोगना चाहिए परन्तु ऐसा कोई समझदार व्यक्ति नहीं मानेगा। इससे पता चलता है कि सब कुछ ईश्वर की इच्छा से नहीं घटित होता बल्कि बहुत कुछ जीवों की इच्छा से भी होता है। हम तो यहां तक कहते हैं कि **संसार में जितने भी बुरे काम होते हैं, वे सब के सब जीवों की इच्छा से होते हैं, ईश्वर की इच्छा से नहीं।** इसलिए मनुष्य को ईश्वर के आदेश पर कार्य करने वाला साधन मात्र मान लिया जाना गलत सिद्धांत है।

मनुष्य के कर्मों को करने वाला कर्ता ईश्वर नहीं है। अन्यथा ईश्वर के द्वारा किए गए बुरे कर्मों का फल दुःख आदि केवल उस ईश्वर को ही मिलना चाहिए क्योंकि उसी ने जीव से ये कर्म कराये हैं। इसलिए **यह सिद्धांत ठीक नहीं है कि सब कुछ ईश्वर की इच्छा से ही घटित होता है।**

ईश्वर मनुष्यों को अपनी इच्छा से जैसा चाहता है, वैसा फल नहीं दे देता है। वेद आदि शास्त्रों में अच्छे कर्मों को करने का निर्देश और बुरे कर्मों को छोड़ने का निर्देश दिया गया है। जिससे यह स्पष्ट है कि जीवात्मा कर्म करने में स्वतंत्र है। शास्त्र कहता है कि–

अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित्कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः।। (ऋ. 10/34/13)

तुम कभी जुआ मत खेलो; खेती का कार्य करो। अपने परिश्रम से प्राप्त धन को पर्याप्त मानकर, उसी से सन्तुष्ट रहो।

स्वतंत्र व्यक्ति अन्यों के अनुसार चलने के लिए बाध्य नहीं है

अब तक के विवेचन से स्पष्ट है कि जैसे हम स्वतंत्र हैं, अपनी इच्छा के हिसाब से काम करते हैं, वैसे ही दूसरे लोग भी स्वतंत्र हैं, इसलिए वो भी अपनी इच्छा से काम करते हैं। हम जैसा चाहते हैं, वे वैसा सहयोग नहीं देते। यह उनकी अपनी स्वतंत्र इच्छा है। इसलिए मान लें कि सब कुछ हमारी इच्छानुसार नहीं हो सकता।

हर एक का अपना–अपना स्वभाव है। हर एक की बुद्धि दूसरे से अलग है, हर एक के विचार अलग हैं, हर एक के संस्कार अलग हैं, हर एक का ज्ञान–विज्ञान का स्तर अलग है। किन्हीं दो व्यक्तियों के विचार सौ प्रतिशत एक समान नहीं हो सकते। उसमें दो, पाँच, दस, पंद्रह, बीस, पच्चीस प्रतिशत यानि कुछ न कुछ तो अंतर रहेगा ही।

जिस व्यक्ति के साथ व्यवहार कर रहें हैं, उसके सिर में आपका दिमाग नहीं रखा है, तो फिर वह आपकी इच्छा के अनुकूल व्यवहार कैसे करेगा?

उसके सिर में उसका दिमाग है, इसलिए वह अपने ढंग से व्यवहार करेगा और आपके सिर में आपका दिमाग है, इसलिए आप अपने ढंग से व्यवहार करेंगे। जिसकी जितनी बुद्धि, उतना ही तो वह करेगा। हाँ, अगर ऐसा हो जाए कि आपकी बुद्धि उसके दिमाग में फिट कर दी जाए, फिर तो जैसा आप चाहते हैं, वैसा व्यवहार भी वह कर ले, लेकिन ऐसा तो हो नहीं सकता।

हम सर्वशक्तिमान भी नहीं हैं। हम इस दुनिया के मालिक या राजा नहीं हैं। **सब लोग हमारे अधीन नहीं हैं कि, जैसा हम चाहें, वैसा ही हो।**

हम जो नहीं चाहते, दूसरे वो हमको जबरदस्ती थोप देते हैं। हमें वो काम करना पड़ता है। क्या करें, हम सबसे बड़े नहीं हैं। हम कईयों के नीचे रहते हैं।

छोटे हैं तो हमें बड़ों की बात माननी पड़ती है, चाहे हमारी इच्छा हो, या न हो।

ईश्वर हमें बुरे कर्मों से सीधे नहीं रोकता

एक विद्यार्थी परीक्षा में प्रश्नों के उत्तर लिख रहा है, और परीक्षक वहां चक्कर लगा रहा है, और चक्कर लगाते–लगाते वो खड़ा हो गया और देखने लगा कि ये विद्यार्थी क्या लिख रहा है, वो पढ़ने लगा कि वो विद्यार्थी प्रश्न का उत्तर गलत लिख रहा है। परीक्षक वहीं उपस्थित है और परीक्षक के देखते–देखते भी विद्यार्थी गलत उत्तर लिख सकता है। क्या परीक्षक उसका हाथ पकड़ सकता है कि मैं तुम्हें गलत उत्तर नहीं लिखने दूंगा? नहीं पकड़ सकता। ऐसे ही हम कर्म करने में स्वतंत्र हैं, ईश्वर हमारे साथ है, वो हमको देखता रहता है। पर जब हम गलती करते हैं, तो ईश्वर हमारा हाथ नहीं पकड़ सकता। उसने छूट दे रखी है, आप जो भी करो, अच्छा करो, बुरा करो, आपकी मर्जी।

एक सिद्धांत है कि, व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है। अगर कोई व्यक्ति चोरी करता है, डकैती डालता है, लूटमार करता है, शोषण करता है, अंग–भंग करता है, अन्याय करता है, और ईश्वर उसका हाथ पकड़ ले तो क्या तब वो स्वतंत्र माना जाएगा? नहीं माना जाएगा।

चाहे चोरी, अन्याय, शोषण या लूटमार आदि कुछ भी करो। **व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है। इसलिए ईश्वर तत्काल उस समय उसका हाथ नहीं पकड़ता।** व्यक्ति कुछ भी करे, ईश्वर वहाँ अपनी शक्ति नहीं दिखाता।

कर्म करने में हम 'स्वतंत्र' हैं, फल भोगने में 'परतंत्र' हैं। जब फल देने का समय आता है, जब मृत्यु आती है, तब ईश्वर अपनी शक्ति दिखाता है, तब ईश्वर फल देता है।

क्या ईश्वर हमें कर्म करने की प्रेरणा देता है?

कर्म की शुरूआत कैसे होती है? आप जानते हैं कि जीवात्मा कर्म करने में स्वतंत्र है। स्वतंत्र का मतलब क्या है? मैं अपनी इच्छा से काम करूं, तो मैं स्वतंत्र हूँ, या मैं दूसरे के कहने पर काम करूं तो मैं स्वतंत्र हूँ? अपनी इच्छा से करूं, तो मैं स्वतंत्र हूँ। इसलिए यदि मैं कर्म करने में स्वतंत्र हूँ तो इसका अर्थ हुआ कि **कर्म का आरंभ, मेरी इच्छा से होगा।** मैं अपनी इच्छा से शुरु करूंगा कि मुझे वेद प्रचार में दान देना है, मुझे गौशाला में दान देना है, मुझे ब्रह्मचारियों को दान देना है, मुझे किसी रोगी को दान देना है, मुझे गाय की रक्षा करनी है, मुझे

रोगियों की सहायता करनी है, मुझे यज्ञ करना है।

मैं अपनी इच्छा से काम शुरू करूंगा, तो शुरूआत कहां से होगी? मुझसे यानी मेरे स्वयं से होगी। शुरूआत मैं करूंगा। मैं स्वतंत्र हूँ, तो जब मैं ईश्वर के कानून के अनुकूल या प्रतिकूल इच्छा करता हूँ, अनुकूल या प्रतिकूल कर्म करने की बात सोचता हूँ, तो वही मेरी स्वतंत्रता है कि **गलत–सही काम का प्रारंभ मैं करूंगा। पहला नंबर मेरा।**

अब यदि मेरा काम ईश्वर के संविधान के अनुकूल है, तब ईश्वर मुझे दूसरे (सेकेंड) नम्बर पर प्रेरणा देगा कि ठीक है, ठीक है, शाबास, बेटा ये करो, बहुत अच्छी बात है, खूब करो। यह है ईश्वर की प्रेरणा। उसका समर्थन, उसकी प्रेरणा दूसरे नंबर पर होगी।

अगर मैं ईश्वर के संविधान के विरूद्ध सोचता हूँ, कि आज इस फलाने व्यक्ति से मुझे झूठ बोलना है, आज इसको धोखा देना है, इसको मूर्ख बनाना है, आज इसकी जेब काटनी है, तो इसमें भी मैं स्वतंत्र हूँ। मैं अपनी इच्छा से ऐसा सोचता हूँ, तो मुझे ईश्वर की तरफ से प्रेरणा होती है, भय, शंका, लज्जा के रूप में। तब मन में मुझे डर लगता है कि अगर पकड़े गये तो क्या होगा, फंस जायेंगे और दंड मिलेगा, बदनामी होगी। ऐसे–ऐसे मन में विचार आयेगा, ये ईश्वर की प्रेरणा है। वो प्रेरणा सेकेंड नम्बर पर होती है। तब ईश्वर हमको इस गलत काम से, बुराई से रोकता है, और उसका रोकना, बस यहीं तक सीमित है कि वो हमको सूचना दे देगा, मन में भय, शंका, लज्जा उत्पन्न कर देगा कि ये काम गलत है, ये मत करो। बस इसके बाद फिर आपकी मर्जी, आप उसकी प्रेरणा सुनें या न सुनें, आपकी स्वतंत्रता है।

आपने सोचा कि झूठ बोलना है तो ईश्वर ने आपको भय उत्पन्न किया कि नहीं–नहीं, झूठ नहीं बोलना, यह अच्छा काम नहीं है। आपने सुन लिया फिर उसकी उपेक्षा कर दी, इग्नोर किया, हम तो करेंगे, और आप कर लेंगे, झूठ बोल लेंगे। तब आपकी जबान ईश्वर नहीं पकड़ेगा, आपको झूठ बोलने से ब्रेक नहीं लगायेगा। बस एक बार उसने सूचना दे दी। यहां तक ईश्वर की प्रेरणा है, ऐसा जानना चाहिये।

ईश्वर सूचना तो देता है, हमको सावधान तो करता है, जैसे मैंने शुरु में निवेदन किया था कि जब हम बुरी योजना बनाते हैं, तो हमारे अंदर भय, शंका, लज्जा उत्पन्न कर इनके माध्यम से ईश्वर अपनी ओर से सूचना देता है कि यह काम मत करो, यह ठीक नहीं है। बस उसकी सीमा इतनी है। आगे आपकी मर्जी

है कि करो या मत करो। अच्छा काम होगा तो अच्छी सूचना दे देगा, आनंद, उत्साह, निर्भयता के माध्यम से कि इस काम को करो। अब जानना यह है कि हम बुरे कर्म क्यों करते हैं? उत्तर है–

हम अविद्या के कारण बुरे कर्म करते हैं

आप कहते हैं कि ईश्वर हमारे अंदर है, बिल्कुल है। ईश्वर अलग चीज है, हम अलग चीज हैं। ईश्वर बुरे काम कभी नहीं करता, हम उससे अलग चीज हैं, हम तो कर सकते हैं। हम क्यों गलत काम करते हैं, वो क्यों नहीं करता? इसीलिये क्योंकि ईश्वर में अविद्या (विपरीत ज्ञान) नहीं है। लेकिन आत्मा के अंदर अविद्या है, इसीलिये वो कभी ठीक काम करता है, कभी गलत काम करता है। अविद्या के कारण जीवात्मा गड़बड़ करता रहता है। तो ईश्वर भले ही हमारे साथ हो, तब भी हम अपनी अविद्या के कारण गलती करते हैं, कर सकते हैं।

इस तरह से ईश्वर के हमारे साथ रहते हुये भी **हम अपनी अविद्या के कारण, स्वतंत्रता के कारण गलतियां कर लेते हैं।** जब तक यह अविद्या रहेगी, तब तक हम ये गलतियां करते रहेंगे।

जब अविद्या दूर हो जायेगी, तो ये गलतियां भी होना बंद हो जायेंगी। पर वो दूर कौन करेगा? सारा पुरूषार्थ हमको ही करना है। हमको अपनी अविद्या को समझना है और उस अविद्या (उल्टा ज्ञान) को दूर कर गलतियां करना बंद करना है।

आओ, सज्जनों का संपर्क,
शास्त्र का ज्ञान और
अपने यत्न से,
बार–बार रुलाने वाली
अपनी अविद्या को
हम हटाते चलें।

❖❖❖

अध्याय 2 कर्म–पुरूषार्थ

कर्म की परिभाषा

सबसे पहले हम कर्म के बारे में जानने का प्रयत्न करेंगे कि कर्म क्या है? तीन प्रकार की क्रियाएं हैं–

(1) जो ईश्वर ही करता है– जैसे– हृदय का धड़कना, रक्त संचार, भोजन का पाचन, रस–रक्त आदि धातुओं के निर्माण की क्रियाएं इस कोटि में आती हैं। ये क्रियाएं केवल ईश्वरीय व्यवस्था के अधीन शरीर को जीवित बनाए–चलाए रखने की दृष्टि से होती हैं।

(2) कहीं–कहीं थोड़ा हस्तक्षेप हम भी कर सकते हैं– जैसे, श्वास लेना–छोड़ना। हम कुछ देर के लिए सांस रोक सकते हैं।

(3) तीसरी क्रियाएं ऐसी हैं, जिन्हें हम ही करते हैं। जैसे– पढ़ना, दौड़ना आदि।

इस प्रकार हमारा शरीर क्षणभर के लिए भी बिना चेष्टा किए हुए नहीं रहता है।

महर्षि कणाद जी ने वैशेषिक दर्शन में कर्म के विषय में बताया कि– **किसी भी क्रिया को, गति को, मोशन को, कर्म कहते हैं।** उदाहरण के लिए, मैंने अपने हाथ को दायीं तरफ थोड़ा सा हिला दिया, यह जो गति हुई, इसका नाम कर्म है। ये कर्म वैशेषिक दर्शन की परिभाषा में है। पर हम जिस कर्मफल की बात करेंगे, उस परिभाषा में इसको कर्म नहीं माना जाता है। इसलिए इसको वैशेषिक दर्शन के अनुसार तो कर्म मानेंगे पर यह सामान्य कर्म है, सामान्य क्रिया या चेष्टा तो है, लेकिन इसका कोई फल नहीं है। यह फल देने वाला कर्म नहीं है। इसलिए कर्मफल अर्थात भाग्य निर्माण के प्रसंग में इसको विचारना छोड़ देंगे।

इस दृष्टि से, **दो प्रकार के कर्म हुए– एक ऐसे कर्म, जो फल नहीं देते, दूसरे ऐसे कर्म, जो फल देते हैं।** आज के प्रसंग में हम उस कर्म की बात करेंगे, जो फल देता है।

कर्म करने के तीन साधन

अब जो फल देने वाला कर्म है, उसकी परिभाषा जानिए। कर्म के साधनों के तीन वर्ग होते हैं अर्थात जीवन भर आत्मा तीन प्रकार से कर्म करता है। एक

मन से, दूसरा वाणी से और तीसरा शरीर से। महर्षि दयानंद सरस्वती जी ''आर्योद्देश्य–रत्नमाला' पुस्तिका में लिखते हैं कि **जीवात्मा मन, वाणी और शरीर से जो 'चेष्टा–विशेष' करता है, उसे 'कर्म' कहते हैं।** ऐसी विशेष क्रिया जिसका अपने पर और दूसरों पर विशेष प्रभाव पड़ता है अर्थात कुछ फल होता है, सुख–दुख मिलता है, उसको चेष्टा–विशेष कहेंगे। **सुख को पाने और दुख को हटाने के लिए जो चेष्टा विशेष की जाती है, वही कर्म कहलाता है।**

मन, वाणी तथा शरीर से जो विशेष चेष्टा होगी, वो फल देने वाला कर्म है। उदाहरण के लिए, मन में कोई व्यक्ति अच्छा सोचता है– ''हे भगवान! सबका भला हो, सब सुखी रहें, सब अच्छे काम करें, सब आनन्द से जिएं।'' यदि व्यक्ति ऐसी भावना रखता है तो इसको मन की विशेष–चेष्टा कहेंगे। उस चेष्टा का फल होगा। दूसरी चेष्टा ऐसी है– एक व्यक्ति मन में बुरा सोचता है कि ''हे भगवान! मेरे पड़ोसी की टांग टूट जाए, उसकी दुकान में आग लग जाए, उसका मकान गिर जाए, उसके ग्राहक भाग जाएं, उसको व्यापार में घाटा हो जाए।'' यह भी मन की विशेष चेष्टा है।

यों तो हम अपने जीवन काल में शरीर, वाणी तथा मन के माध्यम से लाखों प्रकार के कर्मों को किया करते हैं, जिन्हें गिनना संभव नहीं है। साधनों के आधार पर कर्म के तीन विभाग किए जाते हैं, पहला– मानसिक, दूसरा– वाचनिक, और तीसरा– शारीरिक। योगदर्शन में पाप–पुण्य के आधार पर कर्मों के 4 विभाग (1) शुभ कर्म (2) अशुभ कर्म (3) मिश्रित कर्म और (4) निष्काम कर्म बताए गए हैं। इनका स्पष्टीकरण निम्नानुसार है–

शुभ, अशुभ और मिश्रित कर्म

1. **मन के शुभ–अशुभ कर्म–** यहां जो पहले वाली मन की अच्छी चेष्टा थी, विशेष–चेष्टा, अच्छा विचार, **अच्छी भावना, अच्छी कल्पना, उसको शुभ कर्म कहेंगे।** और मन में जो दूसरा विचार अभी था– पड़ोसी की टांग टूट जाए, उसके ग्राहक भाग जाएं, **उसका नुकसान हो, यह मन के द्वारा किया गया अशुभ कर्म है।** यह अच्छी चेष्टा नहीं है।

हमको बहुत सोच–समझकर कर्म करना पड़ेगा। मन में हम जो विचार करते हैं, उसमें भी बहुत सावधानी, बहुत ध्यान रखना पड़ेगा ताकि हम किसी का बुरा नहीं, अच्छा सोचें। ये शुभ कर्म माना जाएगा, उसका अच्छा फल मिलेगा। बुरा सोचेंगे, वो अशुभ कर्म माना जाएगा। उसका दण्ड मिलेगा। यह मन के कर्म हो गए।

अगर हम गलत योजना, बुरी योजना बनाते हैं, तो इससे हमारे विचार, हमारे संस्कार अवश्य बिगड़ेंगे और आगे हम भविष्य में भी आदतन गलत योजनायें बनायेंगे और गलत काम करेंगे। हर बार ऐसा थोड़े होगा कि हमने योजना बनाई, और बदल दी। कई बार तो हम गलत कर ही डालेंगे। इसलिए हमको मन में भी बुरी बात नहीं सोचनी चाहिए।

यहां ध्यान देने योग्य बात है कि हमने मन में कुछ बुरा विचार किया और अगले ही पल उस विचार को बदल दिया, यानि कोई बुरा विचार किया, लेकिन उसके अनुरूप क्रिया (आचरण) नहीं की और फिर वो बुरा विचार मन से हटा दिया। भले ही हमारे बुरे विचार से दूसरों का कोई नुकसान नहीं हुआ, वाणी से हमने कुछ नहीं कहा, शरीर से किसी पर कोई अत्याचार नहीं किया, केवल मन ही मन में बुरा सोचा। इससे दूसरों को तो प्रत्यक्ष रूप से कोई नुकसान नहीं हुआ, लेकिन हमारा नुकसान जरूर हुआ। प्रश्न है कि, क्या नुकसान हुआ?

यहां एक और सावधानी रखने की बात यह है कि, मानसिक कर्म में दो स्थितियां हैं। एक स्थिति में तो केवल 'विचार' मात्र है, वो कर्म नहीं माना जायेगा। जबकि दूसरी स्थिति में, वो 'कर्म' भी माना जायेगा।

पहली स्थिति – एक व्यक्ति ने मन में सोचा– झूठ बोलूं, या नहीं बोलूं? यहाँ दिमाग में दो पक्ष बने हुए हैं कि **मैं झूठ बोलूं, या फिर नहीं बोलूं? यहाँ तक तो इसका नाम है– 'विचार'। अभी यह कर्म नहीं बना। इसका कोई दंड नहीं है।**

दूसरी स्थिति– **अगर दो निर्णयों में से एक निर्णय कर लिया कि 'आज झूठ बोलूंगा', तो यह 'कर्म' बन गया। इसका दंड जरूर मिलेगा।** 'आज झूठ बोलूंगा', यदि मन में यह फैसला कर लिया, फिर बाद में चाहे हम शरीर से न करें, यानी योजना बदल दें, लेकिन एक बार योजना बन गई, निर्णय कर लिया कि 'आज झूठ बोलना है, तो वो कर्म बन जाएगा, इसलिए इसका दंड भी अवश्य मिलेगा। यह 'मानसिक–कर्म' है। इसका 'मानसिक–दंड' मिलेगा। इससे हमारे संस्कार बिगड़ेंगे। यह नुकसान होगा।

मन में उठने वाले प्रत्येक विचार का सतत् परीक्षण और **निरीक्षण करें कि, मैंने जो विचार उठाया, वह ठीक है या गलत?** गलत है, तो उस पर लगाम (ब्रेक) लगाएं। उसको तुरंत निकाल दें।

जो ठीक विचार हैं, उनको मन में रखें। ठीक विचारों के अनुसार ही 'योजनाएं' बनाएं और सिर्फ योजनाएं ही नहीं बनाएं, 'आचरण' भी करें।

2. **वाणी के शुभ–अशुभ कर्म–** वाणी से **सत्य बोलना, मीठी भाषा बोलना, सभ्यता से बोलना, आदर–सम्मान से बोलना, किसी के हित के लिए अच्छा सुझाव देना, ये वाणी के शुभ कर्म हैं, अच्छे काम हैं।**

इसी तरह से वाणी के जो अशुभ कर्म हैं, जैसे– **झूठ बोलना, छल–कपट करना, धोखा देना, चालाकी करना, कठोर भाषा बोलना, निन्दा–चुगली करना।** दो लोग प्रेम से रह रहे हैं, उनमें झगड़ा करवा देना, एक को कहना कि वो तुम्हारे बारे में ऐसा कहता है, और दूसरे को कहना कि वो तुम्हारे बारे में ऐसा कहता है, ऐसा–ऐसा कह के उनकी लड़ाई करवा देना, **ये सब वाणी के अशुभ कर्म हैं।**

3. **शरीर के शुभ–अशुभ कर्म–** इसी प्रकार शरीर से हम कर्म करते हैं– जैसे **यज्ञ करना, ईश्वर का ध्यान करना, किसी रोगी की सेवा करना, उसके कपड़े धो देना, उसको डॉक्टर के पास ले जाना, उसको दवाई दिलवा देना, और उसका जो भी काम हो, कर देना। ये सारे शरीर के अच्छे कर्म हैं, शुभ कर्म हैं।** ये फल देने वाले कर्म हैं, इनका फल मिलेगा।

इसी तरह से **शरीर के जो अशुभ कर्म हैं– चोरी करना, धक्का–मुक्की करना, लूट–मार करना, अपहरण करना, हत्याएं करना।** इनका सबका फल होगा।

सभी लोग, सारा दिन कुछ न कुछ कर्म करते ही रहते हैं। मन में भी करते हैं। वाणी से भी बोलते रहते हैं और शरीर से भी कुछ न कुछ क्रियाएं करते रहते हैं।

जैसा मैंने शुरु में बताया था– कुछ शुभ कर्म हैं, कुछ अशुभ कर्म हैं। **जो मन, वाणी, शरीर से हम अच्छे काम करते हैं, जिन कर्मों से हमें भी सुख मिलता है, दूसरों को भी सुख मिलता है, वो शुभ कर्म हैं। और जिन कर्मों से हमें भी दुःख मिलता है, दूसरों को भी दुःख मिलता है– वो अशुभ कर्म हैं।** जैसे पहले उदाहरण दिया था कि झूठ बोलना, चोरी करना अपहरण करना, हत्याएं करना, ये अशुभ कर्म हैं। और सच बोलना, दान देना, सेवा करना, यज्ञ करना, ईश्वर का ध्यान करना, ये शुभ कर्म हैं। बुरे काम और अच्छे काम, ये दो प्रकार के कर्म हुए।

शरीर, वाणी और मन रूपी साधनों के माध्यम से किए गए कर्मों को तालिका रूप में निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया जा सकता है–

	शरीर से	वाणी से	मन से
शुभ	1. रक्षा करना 2. दान देना 3. सेवा करना	1. सत्य वचन 2. मधुर वाणी 3. हितकर कथन 4. स्वाध्याय करना	1. दया 2. अस्पृहा (परद्रव्य हरण की इच्छा न करना) 3. आस्तिकता
अशुभ	1. हिंसा (क्रूरता) 2. चोरी (परद्रव्य हरण) 3. व्यभिचार	1. असत्य बोलना 2. कठोर बोलना 3. अहितकर बोलना 4. व्यर्थ बोलना	1. द्रोह (दूसरे के प्रति हानि पहुंचाना आदि बुरी भावना) 2. स्पृहा (दूसरे के पदार्थ लेने की इच्छा करना) 3. नास्तिकता

मिश्रित कर्म– एक तीसरे प्रकार के कर्म भी हैं, उन्हें कहते हैं– मिश्रित कर्म। पहले वाले शुभ कर्म, दूसरे वाले अशुभ कर्म, और तीसरे हुए मिश्रित कर्म। ये तीन तरह के कर्म हुए। मिश्रित कर्म किसको कहेंगे?

जिसमें कुछ अच्छाई है और कुछ बुराई है। दोनों मिक्स अर्थात जो मिलाजुला कर्म है। अतः **कुछ कर्म ऐसे भी होते हैं, जो मिलेजुले होते हैं। उसमें कुछ अच्छा भाग होता है, कुछ बुरा भाग भी होता है। उनको मिश्रित कर्म कहते हैं।** उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि एक रात को 11 बजे आपके घर में कोई आपके निकट के रिश्तेदार (क्लोज रिलेटिव) जैसे मामाजी आ गए। और कल्पना कीजिए कि वो बड़ी दूर से आ रहे हैं। ट्रेन उनकी लेट हो गई। अब वे जो रास्ते में खाना लेकर आए थे, वो खत्म हो गया। उनकी मोबाइल की बैटरी भी डाउन हो गई। इसलिए वे आपको फोन कर सूचना भी नहीं दे पाए। और वे अचानक रात को 11 बजे आपके घर पहुँच गए। अब आकर कहने लगे– भाई, मुझे तो जोर से भूख लगी है, जल्दी खाना बनाओ। आपने देखा कि, किचन में रोटी भी खत्म, दाल भी खत्म, सब्जी भी खत्म। आपने देखा कि किचन में कुछ भी नहीं और ये कह रहे हैं कि खाना बनाओ। खाना खिलाने, सोने में मेरा दो घंटा लग जाएगा। इससे आपने सोचा कि आज तो सोने में एक बज जाएगा, दो घंटे की नींद खराब होगी। अब बताइये कि वो जो अतिथि आए हैं, उनको आप जो खाना खिलाएंगे, वह खुश होकर खिलाएंगे या दुःखी होकर खिलाएंगे?

यदि आप सोचेंगे कि अतिथि रोज थोड़े ही आते हैं, कभी–कभी तो आते हैं। वो तो मेरे मामा जी हैं। और फिर उनकी मजबूरी भी थी, जो मोबाइल की बैटरी डाउन हो गई। इसलिए सूचना नहीं दे पाए और उनकी ट्रेन भी लेट हो गई। चलो कोई बात नहीं, इनको अच्छी तरह प्रेम से खुश होकर खाना खिलाएंगे।

अगर खुश होकर खाना खिलाएंगे, तब तो यह शुभ कर्म होगा और यदि मन में दुःखी होकर खिलाएंगे, सोचेंगे कि कैसे लोग हैं, रात को 11 बजे आ जाते हैं, सूचना भी नहीं देते। भई पहले से सूचना दे देते तो हम पहले से कुछ बना कर रखते। अब नए सिरे से रसोई चालू करो, क्या झंझट है। ऐसे मन–मन में दुःखी हो रहे हैं और फिर खाना बना भी रहे हैं, बनाना ही है। क्योंकि खाना खाए बिना उनको नींद भी नहीं आएगी। जब रिश्तेदार खुद नहीं सोएगा तो आपको भी नहीं सोने देगा। जैसे–तैसे बनाओ और क्या। दुःखी होकर यदि खाना खिलाएंगे तो इसको मिश्रित कर्म कहेंगे। इसमें दोनों चीजें मिक्स हैं। भोजन खिलाया, ये तो अच्छी बात है, पर मन में परेशान–दुःखी हो–होकर खिलाया, यह अच्छी बात नहीं है। इस प्रकार, यहां अच्छाई–बुराई दोनों मिक्स हो गईं। इसलिए इसको मिश्रित कर्म कहेंगे।

ऐसे ही खेती मिश्रित कर्म है। खेती करने से अनेकों को भोजन मिलता है, और अनेकों कीड़े–मकोड़े इसमें मर भी जाते हैं। इसके अलावा, कीड़ों से बचाने के लिए किसान कुछ कीटनाशक दवाइयाँ भी छिड़कते हैं। उससे बहुत से कीड़े मरते हैं, तो ठीक है कि उसमें दोष तो लगता है। लेकिन उस फसल की रक्षा करने से मनुष्य आदि प्राणियों को खाने को भोजन मिलता है। इससे उनके जीवन की रक्षा भी होती है। इस प्रकार से इसको मिश्रित कर्म कहते हैं क्योंकि इसमें कुछ हानि होती है, और बहुत सारा पुण्य मिलता है।

इसका प्रायश्चित्त यह है कि प्राणी जैसे कौवे आते हैं, कबूतर आते हैं, वे खेत में फसल खाते हैं तो उनको खाने दो। उनके कोई अलग से फैक्ट्री, कारखाने, व्यापार तो है नहीं। वो बेचारे प्राणी कहां खाएंगे? यहीं तो खाएंगे। भगवान ने जो फसल पैदा की है, वह मनुष्य के लिए भी है और कौवों–कबूतरों के लिए भी है। वे इतना नहीं खा लेंगे कि मनुष्य के लिए कुछ भी न बचे। पंच महायज्ञ हैं। उसमें जो बलि वैश्वदेव यज्ञ है, जिसके अन्तर्गत पशु–पक्षी, आदि प्राणियों को भोजन कराने का विधान है। वह एक प्रकार से प्रायश्चित्त के रूप में हैं। आप उसका अनुष्ठान करें।

एक बात और ध्यान देने योग्य है कि हमारे शास्त्रों में लिखा है, कि मनुष्य दूसरे प्राणियों को दुःख दिए बिना जी नहीं सकता। कुछ न कुछ तो हमारे कारण

दूसरों को दुःख होता ही है। **अपनी जान बचाने के लिए, अपनी रक्षा के लिए कुछ न कुछ तो दूसरों को कष्ट देना ही पड़ता है।** इसलिए इन कर्मों को मजबूरी मानकर करेंगे, जानबूझकर नहीं, द्वेष भाव से नहीं, अपनी रक्षा की भावना से करना चाहिए।

इसके बाद, फिर दो–पांच प्रतिशत जो दण्ड मिलेगा, भोग लेंगे। क्या दण्ड होगा, पूरा–पूरा तो हम नहीं कह सकते। थोड़ा बहुत, जो भी दण्ड होगा, भोग लेंगे।

क्रियमाण, संचित और प्रारब्ध कर्म

अब इस कर्म के संदर्भ में एक प्रकार और है समझने का। फल के आधार पर कर्म के तीन विभाग हैं– एक का नाम है– क्रियमाण कर्म। दूसरे हैं– संचित कर्म और तीसरे हैं–प्रारब्ध कर्म। ये तीन प्रकार के कर्म होते हैं। ये भी ''आर्योद्देश्य–रत्नमाला'' पुस्तिका में महर्षि दयानंद जी ने लिखे हैं।

1. **क्रियमाण कर्म–** क्रियमाण कर्म का मतलब होता है कि जो कर्म हम **अभी कर रहे हैं।** जो अधूरा है, जिस पर काम चल रहा है, जो अभी पूरा (कम्पलीट) नहीं हुआ। जैसे कि इस समय आप प्रवचन पढ़–सुन रहे हैं, अभी यह प्रवचन पूरा नहीं हुआ, चल रहा है। कुल मिलाकर **वर्तमान में किए जा रहे कर्म** क्रियमाण कहलाते हैं।

2. **संचित कर्म–** एक व्यक्ति रसोई में भोजन बना रहा है। उसे 20 रोटियां बनानी थीं। 20 रोटियां पूरी हो गईं, **काम खत्म हो गया।** जब वो काम समाप्त हो जाए तो उसी का नाम संचित कर्म हो जाएगा। **संचित कर्म मतलब जमा।** वो कर्म हमारे खाते में जमा हो गया। जो–जो काम हम करते जाते हैं, वो जब पूरा हो जाता है, तो वो संचित कर्म कहलाता है।

प्रश्न है कि– **यह कर्म कब तक संचित रहेगा, कब तक जमा रहेगा?** उत्तर है– जब तक इस कर्म का फल मिलना शुरू नहीं हो जाएगा, तब तक जमा रहेगा। कब तक फल मिलना शुरु होगा? इसमें उत्तर है कि हो सकता है, दो साल तक जमा रहे, बीस साल तक जमा रह सकता है, 50 साल तक भी जमा रहेगा। जब तक उसका फल मिलना शुरु नहीं होगा, तब तक वो संचित कर्म कहलाएगा। डिपॉजिटेड, अर्थात कर्म हमारे खाते में जमा हो गया। इस प्रकार **पिछले जन्मों से लेकर के अब तक किए जा चुके वे सारे कर्म जिनका फल मिलना बाकी है, संचित कर्म की श्रेणी में शामिल होते हैं।**

और हो सकता है कि वो इस जन्म में न भी मिले। उसका फल अगले

जन्म में मिले। आने वाले दूसरे जन्म में, तीसरे जन्म में, चौथे में, पांचवें में, दसवें में, बीसवें में, तीसवें में, पचासवें जन्म में फल मिले, लेकिन जब तक उसका फल नहीं मिलेगा, तब तक वो संचित कर्म माना जाएगा।

3. **प्रारब्ध कर्म–** तीसरे प्रकार के कर्म बताए थे – प्रारब्ध। प्रारब्ध कर्म उनको कहते हैं, जिनका फल मिलना शुरू हो गया, प्रारम्भ हो गया। फल स्टार्ट (शुरू) हो गया, उनको प्रारब्ध कर्म कहेंगे। तात्पर्य है कि, कुछ कर्मों का फल हमको मिल रहा है, आज भी मिल रहा है। जिन **कर्मों का फल हम इस समय भोग रहे हैं, वो हैं प्रारब्ध कर्म।** हमें अभी जो जाति (मनुष्य योनि), आयु और भोग (घर–परिवार, पैतृक सम्पत्ति) मिली है, जिन कर्मों का फल आज हम भोग रहे हैं। और जिनका अभी भोग नहीं रहे, हमारे खाते में जमा हैं वो हैं– 'संचित कर्म'। जो इस समय करते जा रहे हैं, रोज के रोज, वो हैं– क्रियमाण कर्म। इस तरह से, ये तीन विभाग कर्मों के हो गए।

कृत, कारित और अनुमोदित कर्म

कर्ता के दृष्टिकोण से कर्म तीन प्रकार का है– (1) कृत कर्म (2) कारित कर्म (3) अनुमोदित कर्म। **जिन कार्यों को व्यक्ति स्वयं करता है, वे कृत कर्म कहलाते हैं। जिन कर्मों को वह स्वयं न करके, दूसरों से करवाता है या करने की प्रेरणा देता है, वे कारित कर्म कहलाते हैं।** जब कुछ लोग मिलकर कर्म कर रहें हों और वह उनके कर्म का समर्थन करता है अर्थात **जब वह स्वतंत्रता से किसी के द्वारा किए गए कर्म का समर्थन–अनुमोदन कर देता है, तो वह अनुमोदित कर्म कहलाता है।** जैसे कि मैंने अपने हाथ से किया तो मेरा हो गया कृत कर्म और दूसरे को आदेश दिया कि तुम मेरे लिये करके आओ, तो वो मेरे आदेश पर काम करता है तो कारित कर्म हुआ। कुछ लोग चोरी करने की योजना बना रहे थे, और उन्होंने हमसे पूछा कि, क्यों जी! आपकी क्या सलाह है, चोरी कर लें? और हमने कहा, हाँ–हाँ कर लो, अच्छी बात है, कर लो। हमने किए गए कर्म का समर्थन किया, यह अनुमोदित कर्म है। यह तीसरा कर्म है।

भावना के आधार पर कर्म के दो विभाग, सकाम और निष्काम कर्म, किए जाते हैं।

सकाम कर्म

तीन साधनों अर्थात् मन से, वाणी से और शरीर से हम कर्म करते हैं। फल के आधार पर तीन प्रकार के कर्म हैं– क्रियमाण कर्म, संचित कर्म और प्रारब्ध कर्म। पाप–पुण्य के आधार पर फिर तीन प्रकार के ये हो गए– शुभ, अशुभ और

मिश्रित। इन तीनों कर्मों का एक नाम है, जिसको बोलते हैं– सकाम कर्म।

सकाम कर्म का मतलब है, **जिन कर्मों को करने का उद्देश्य सांसारिक सुखों की प्राप्ति हो।** जैसे कोई व्यक्ति धन कमाने के लिए काम करता है, व्यापार करता है, नौकरी करता है। उसे धन क्यों चाहिए? धन से वह कार खरीद लेगा, मिठाई खरीद लेगा, बंगला बनाएगा, पार्टी में जाएगा, देश–विदेश की यात्राएं करेगा, संसार के सुख भोगेगा। इसलिए वह धन कमाता है।

कोई अच्छे काम करेगा, समाज की सेवा करेगा तो सोचेगा कि उसे सम्मान मिलेगा। यहां वह सम्मान के लिए काम करता है। कोई भौतिक सुख के लिए काम करता है। इस तरह **राग–द्वेष से युक्त भावना से जो काम किया जाता है, उसको सकाम कर्म बोलेंगे।**

ये तीनों शुभ–अशुभ और मिश्रित कर्म सकाम हो सकते हैं। कोई दान देता है, यज्ञ करता है, सेवा करता है, परोपकार के काम करता है लेकिन वो ये काम सम्मान पाने की भावना से करता है, कोई धन कमाने की भावना से करता है। ये उसके सारे अच्छे काम हैं और उसके ये सारे अच्छे काम सकाम कर्म कहलाएंगे।

ऐसे ही चोरी करता है, झूठ बोलता है, धक्का–मुक्की करता है, शोषण करता है, किसी का हक मारता है, अधिकार छीन लेता है, अन्याय करता है। ये सारे ही बुरे काम हैं। इनका उद्देश्य कोई अच्छा तो हो ही नहीं सकता। सारा ही स्वार्थ है तो ये भी सकाम कर्म हैं।

और तीसरे जो मिश्रित कर्म हैं, वो भी भौतिक सुख के लिए, धन–सम्मान के लिए आदि–आदि उद्देश्य की पूर्ति करने के लिए किए जाते हैं। अतः मिश्रित कर्म भी सकाम हुए। इस प्रकार से ये तीन सकाम कर्म कहलाते हैं।

सकाम कर्म 'कंडीशनल (सशर्त) कर्म' हैं। मतलब, इतना रूपया दोगे, तो माल देंगे, इतना रेट नहीं दोगे, तो माल नहीं देंगे। आप इतनी फीस दोगे तो पढ़ाएंगे, नहीं दोगे तो नहीं पढ़ाएंगे, यह सकाम–कर्म है। यहां हमारा उद्देश्य धन कमाना है, फीस लेना है। इस तरह अगर ट्यूशन फीस लेते हैं, तो वो सकाम–कर्म है।

निष्काम कर्म

एक और चौथे प्रकार के कर्म हैं, जिनको बोलते हैं– निष्काम कर्म। जो पहले वाले सकाम कर्म थे– शुभ कर्म, अच्छे काम, सेवा करना, दान देना, यज्ञ करना, परोपकार करना, दूसरों की सहायता–मदद करना, प्राणियों की रक्षा

करना आदि, यही सकाम कर्म 'निष्काम कर्म' में बदल सकते हैं। इसकी एक शर्त है– ये निष्काम कर्म तब बन जाएंगे, जब इन कर्मों को करने का उद्देश्य बदल जाए, भौतिक सुख उद्देश्य नहीं रहे। इनको करने का उद्देश्य बदलकर के मोक्ष–सुख उद्देश्य बन जाए। इस प्रकार से, **मोक्ष प्राप्ति के उद्देश्य से किए गए अच्छे कर्म निष्काम कर्म हैं और सांसारिक सुख के लिए किए गए कर्म सकाम कर्म हैं। अच्छे कर्म, जो सकाम कर्म थे, यदि मोक्ष प्राप्ति के उद्देश्य से किए जाएं तो वो निष्काम हो जाएंगे।**

अगर निःशुल्क पढ़ाते हैं, तो निष्काम–कर्म है। हम क्यों फ्री में पढ़ा रहे हैं, क्योंकि हमको मोक्ष चाहिए, धन की चिंता नहीं है। जीने के लिए भगवान दो रोटी देता है, यही बहुत है। अब तक जीवन जी लिया, आगे भी जी लेंगे। भगवान खूब दे रहा है, आगे भी दे देगा। **धन के लिए काम नहीं करना है, सम्मान के लिए काम नहीं करना है, भौतिक सुख के लिए काम नहीं करना है।** अगर मोक्ष की प्राप्ति के लिए काम कर रहे हैं तो यह 'निष्काम–कर्म' हैं।

वस्तुतः प्रत्येक व्यक्ति में कोई न कोई कामना तो जरूर होगी। **व्यक्ति को दो में से एक तो चाहिए, या तो मोक्ष चाहिए, या संसार का सुख चाहिए। उस कामना के अनुसार वह सकाम और निष्काम, इन दो में से कोई न कोई एक कर्म करेगा।**

इस प्रकार अब देखिए, एक ही कर्म सकाम भी हो सकता है, निष्काम भी हो सकता है। उसके पीछे मन में जो भावना है, वो महत्वपूर्ण है। **कर्म के पीछे मौजूद भावना से एक ही कर्म सकाम भी हो जाएगा, वही कर्म निष्काम भी हो जाएगा।** मान लीजिए कि आप किसी को विद्या पढ़ाते हैं, प्रचार करते हैं, कोई अच्छी बात सिखाते हैं या अच्छी सलाह देते हैं, उसके हित के लिए बताते हैं। अगर आप इस भावना से बताते हैं कि मैं इसको अच्छी बात सिखाऊंगा तो यह कल को मेरा सम्मान करेगा, कुछ धन भी दे देगा, और लोगों में प्रशंसा करेगा कि ये बड़े अच्छे गुरु जी हैं, बहुत अच्छी बात सिखाते हैं। यदि यह उद्देश्य है तो यह सकाम कर्म हो जाएगा।

और यही विद्या पढ़ाने का, प्रचार करने का, सलाह सम्मति देने का, दूसरे के हित के लिए सुझाव देने का काम हम मोक्ष प्राप्ति की भावना से कर रहे हैं तो यही कर्म निष्काम हो जाएगा।

विद्या पढ़ाने में निष्काम–कर्म हो सकता है। विद्या पढ़ाने में कोई हिम्मत वाला ऐसा हो कि कहे– ''अच्छा भई, आओ बैठो, पढ़ाएंगे। जिसको कुछ देना हो, तो दे देना, नहीं देना हो, तो मत देना, कोई कंडीशन नहीं है, कोई फीस नहीं है।'' उसमें तो चल सकता है। इस प्रकार, सकाम और निष्काम कर्म में मूलतः

भावना का ही अन्तर है।

गृहस्थ व्यक्ति कमाने के बाद जो पैसा दान में देगा, वो सकाम और निष्काम दोनों हो सकता है। यदि वो विद्यालय के लिए दान देते समय कहता है– ''साहब! मेरे नाम का पत्थर लगाकर उस पर लिखो कि मैंने सवा लाख रूपये दान दिया।'' तो वह सकाम–कर्म हो जाएगा। और अगर वह कहता है–''मेरा नाम नहीं लेना, बताना भी नहीं, बोलना भी नहीं, लिखना भी नहीं, कुछ नहीं, चुपचाप गुप्तदान''। तो वह निष्काम–कर्म हो जाएगा।

व्यापार आदि में निष्काम–कर्म करना कठिन है। **ये उनके बस का नहीं है। यह तो सन्यासी कर सकते हैं। निष्काम कर्म का तो मतलब यही होता है कि भई हमें कोई धन–वन तो चाहिए नहीं, हमारा धन कमाने का कोई उद्देश्य नहीं है।** किराने का व्यापारी अपनी दुकान पर जो सामान बेचता है, वो धन कमाने के लिए बेचता है, तो उसका यह सकाम–कर्म है। इसलिए व्यापारी आदि जो लोग हैं, वे तो सकाम–कर्म ही कर पाएंगे, निष्काम–कर्म तो नहीं कर पाएंगे। ऐसा तो नहीं कर पाएंगे कि सामान रखा है, जिसको लेना है, ले जाओ। जितना धन रखना है, रख जाओ। जो चाहिए, उठा ले जाओ और जो पैसे देने हैं, दे देना। निष्काम का तो मतलब यह होगा। बोलो कोई व्यापारी कर सकेगा ऐसा कि सामान जो मर्जी ले जाओ और पैसे जो मर्जी दे जाओ? इस तरह क्या दुकान चल जाएगी? नहीं चलेगी। इसलिए व्यापारी ऐसा नहीं कर सकता।

व्यापारी ने पैसे कमाए, कुछ खर्च किए और कुछ भविष्य के लिए जमा कर दिए। अब दस–बीस रूपए बच गए, इन्हें वह दान दे दे। तो इस प्रकार दिया गया दान भी निष्काम–कर्म हो सकता है।

दो व्यक्ति आपको एक जैसी क्रिया करते हुए दिखाई देंगे, लेकिन दोनों को फल एक जैसा नहीं मिलेगा, फल में अंतर होगा क्योंकि उनकी भावना में अंतर है। कर्म का फल केवल आपकी क्रिया पर ही आधारित नहीं है। क्रिया के साथ 'भावना' भी जुड़ती है, तब फल का निर्धारण होता है।

एक सैनिक ने शत्रु देश के सैनिक को मार डाला और एक नागरिक ने दूसरे नागरिक को मार डाला। हत्या दोनों ने की। बाहर की क्रिया दोनों घटनाओं में एक जैसी है। लेकिन फल दोनों को एक जैसा नहीं, अलग–अलग मिलेगा। सैनिक को ईनाम मिलेगा और नागरिक को दंड मिलेगा।

यहां पर दोनों में भावना का अंतर है। सैनिक की भावना है– देश की रक्षा करना और नागरिक की भावना है– अपने स्वार्थ के लिए मारना।

यदि केवल मोक्ष की इच्छा से आपने अच्छे कर्म किए हैं तो वे ही 'निष्काम कर्म' की श्रेणी में आएंगे। मोक्ष वाले कर्म न तो बुरे होते हैं और न मिश्रित। वे तो केवल शुद्ध ही होते हैं, शुभ कर्म ही होते हैं।

प्रश्न – कहते हैं कि कर्म करो, फल की इच्छा मत करो। किन्तु बिना लक्ष्य या फल सामने रखकर प्रयत्न करने में पूर्ण निष्ठा कैसे होगी?

कर्म तो करो, पर फल की इच्छा मत करो, जो लोग ऐसा कहते हैं, उनका कहना गलत है। प्रायः लोग गीता का नाम लेते हैं, कि साहब गीता में लिखा है कि कर्म किये जा, फल की इच्छा मत कर। इसका उत्तर है कि, ऐसा कोई सिद्धांत न वेदों में है, न दर्शन में है, न उपनिषदों में, न गीता में है। गीता के नाम पर लोग गलत व्याख्या करते हैं।

यह तो मनुष्य का स्वभाव है कि यदि उसको फल नहीं दिया जायेगा तो वह कर्म करेगा ही क्यों? मान लीजिये एक अध्यापक है और एक स्कूल में वह महीने भर पढ़ाता है तो उसको महीने भर में 20 हजार रुपए वेतन मिलता है। उस अध्यापक से कहें कि आप एक महीना यहां स्कूल में पढ़ाइए और वेतन की इच्छा मत कीजिये। क्या वो अध्यापक पढ़ायेगा? नहीं पढ़ायेगा। इसीलिये यह सिद्धांत गलत है, अव्यवहारिक है, कि कर्म तो करो और फल की इच्छा मत करो। अगर ये सिद्धांत गलत है, तो ठीक क्या है?

गीता में श्लोक है– **कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सगोंस्त्वकर्मणि।।** इस श्लोक का सही अर्थ यह है कि कर्म तो करो, कर्म करने में आपका अधिकार है, अच्छा करो, बुरा करो, थोड़ा करो, ज्यादा करो, आज करो, कल करो, जैसा करो आपकी मर्जी। कर्म करने में आपकी छूट है, आप कर्म करने में स्वतंत्र हैं।

यहां फल शब्द का अर्थ फल नहीं है। यहां फल शब्द का अर्थ है, परिणाम। परिणाम में आपका अधिकार नहीं है, कर्म में आपका अधिकार है, फल में तो है अधिकार, **फल तो पक्का मिलेगा पर परिणाम की गारंटी नहीं है, वो आपके अधिकार में नहीं है।**

अब आप सोचेंगे कि परिणाम और फल में भी कोई अंतर रह गया? परिणाम और फल में भी अंतर है। एक अध्यापक पूरी मेहनत से विद्यार्थियों को पढ़ाता है। उसने साल भर तक पढ़ाया, यह उसका कर्म है। अच्छी तरह पढ़ाये, घटिया पढ़ाये, जैसा भी पढ़ाये, वो पढ़ाने में स्वतंत्र है, तो यह तो उसका हो गया

कर्म। और **उस अध्यापक को प्रशासन की ओर से जो वेतन मिलेगा, वो क्या है? वो उसका फल है। तो परिणाम क्या है? परिणाम ये है कि अध्यापक ने साठ विद्यार्थियों को पढ़ाया, क्या साठ के साठ लोगों की गारंटी है कि सबके सब पास हो जायेंगे? नहीं न। बस ये है परिणाम।** कितने विद्यार्थी पढ़ेंगे, कितने सीखेंगे, कितने नहीं सीखेंगे, कितने पास होंगे और कितने फेल होंगे, ये उसके पढ़ाने का परिणाम है। यह परिणाम उसके हाथ में नहीं है। वो तो विद्यार्थी के हाथ में है। अध्यापक तो बस पढ़ाई ही करा सकता है। अब विद्यार्थी पढ़े या न पढ़े, पास हो या फेल हो, ये अध्यापक के हाथ में नहीं है। कर्म का परिणाम आपके हाथ में नहीं है। परिणाम तो दूसरे व्यक्ति के हाथ में है।

आपने अपने बच्चों को समझाया कि बेटा रात को जल्दी सो जाओ, दस बजे सो जाओ, बारह बजे तक मत जागो। रात शरीर को आराम देने के लिए है। आप उसको समझाने में स्वतंत्र हैं पर इस बात की कोई गारंटी थोड़े ही है कि उसको आपकी बात समझ में आ ही जायेगी और वो आपकी बात मान ही लेगा। यह वो परिणाम है, परिणाम की कोई गारंटी नहीं है। हां, फल की गारंटी है। आपने अच्छी बात सिखाई तो आपको अच्छा फल मिलेगा, आपका फल कहीं नहीं जायेगा। इसलिए **यदि फल की गारंटी है, तो वो हमारे दिमाग में रहेगा, तो खूब अच्छी तरह से पुरूषार्थ करेंगे, बीच में हम ढीलापन नहीं आने देंगे।** इस प्रकार से हमको ये कर्मफल का विषय समझना चाहिये।

❖❖❖

अध्याय 3

फल–भाग्य

अब यहां प्रश्न है कि हम जो कर्म करते हैं, उन कर्मों के फल कौन देगा? उत्तर है–

कुछ कर्मों का फल, अभिभावक देंगे

घर के अन्दर माता–पिता को अधिकार दे रखा है कि घर में बच्चे गड़बड़ करें, शोर मचाएं, तोड़फोड़ कर अनुशासन भंग करें तो पहले उनको समझाएं कि ये नियम–कानून हैं, ऐसे आपको रहना है। ऐसे गड़बड़ नहीं करना और अगर गड़बड़ करोगे तो दण्ड मिलेगा। जब नहीं मानें तो दण्ड दो। तब माता–पिता अपने घर में कर्मफल देने के अधिकारी हैं। उनको ईश्वर ने अधिकार दिया है और जिम्मेदारी भी दी है। अधिकार बाद में, पहले कर्त्तव्य।

माता–पिता को ये कर्त्तव्य दिया है कि अपने बच्चों को अच्छा बनाओ, बुद्धिमान बनाओ, धार्मिक बनाओ, ईमानदार बनाओ, देशभक्त बनाओ, चरित्रवान बनाओ और ईश्वरभक्त बनाओ। और इस कर्त्तव्य का पालन करने में यदि बच्चे गड़बड़ करें तब उनको दण्ड दो। अच्छे काम करें तो उन्हें ईनाम दो। और यह भी ध्यान रखिएगा कि यदि माता–पिता अपने बच्चों को धार्मिक नहीं बनाएंगे, ईमानदार नहीं बनाएंगे, चरित्रवान नहीं बनाएंगे तो उन माता–पिता को भी दण्ड मिलेगा। उन्होंने ईश्वर का कानून तोड़ा है। फिर ईश्वर उनको दण्ड देगा। इसलिए सावधान रहना पड़ेगा। इस प्रकार ईश्वर ने घर में माता–पिता को पहले कर्त्तव्य दिया, फिर अधिकार दिया।

कुछ कर्मों का फल, गुरु देंगे

ऐसे ही विद्यालय में जो अध्यापकगण–गुरुजन हैं, उनको कर्त्तव्य दिया कि विद्यार्थियों को अच्छी तरह से पढ़ाओ। उनको नैतिक शिक्षा सिखाओ। उठना–बैठना, बोलना–चालना, लेना–देना, ये सब अच्छी तरह सभ्यता से करना सिखाओ और फिर विद्यार्थी गड़बड़ करें, तब उनको दण्ड दो। अच्छा करें तो शाबासी दो। स्कूल में अध्यापकों को कर्म का फल देने का अधिकार दिया।

ऐसे ही स्कूल–कॉलेज पढ़ के पार हो गए, फिर कहीं कंपनी में नौकरी करने लगे तो कंपनी में जो सबसे बड़े अधिकारी हैं, उनको अधिकार दिया कि आपकी कंपनी में जो लोग ठीक से नियम से काम करते हैं, तो बहुत अच्छी बात है। उनको वेतन और ईनाम दो और अगर नियम तोड़ें, कानून तोड़ें तो वहां

उनको दण्ड दो। वो अधिकारी, उनके दण्डाधिकारी हैं।

कुछ कर्मों का फल न्यायाधीश देंगे

थोड़ा–थोड़ा ईश्वर ने इस बारे में वेदों में बता रखा है और अलग–अलग क्षेत्रों में कुछ लोगों को ईश्वर ने कर्मफल देने का अधिकार भी दे रखा है। जैसे देश के अंदर राजा को, न्यायालय को ईश्वर ने ये अधिकार दे रखा है कि जो देश में गड़बड़ करे, उसको पकड़ो, उस पर मुकदमा चलाओ। यदि प्रमाणों से अपराधी सिद्ध हो जाए, तो उसको दण्डित करो। गरीब पर अन्याय हुआ तो उसको मुआवजा दो, आर्थिक सहयोग दो।

प्रत्येक व्यक्ति कर्मफल नहीं दे सकता

इस प्रकार से ईश्वर ने ये सारी व्यवस्था बना रखी है। मनुष्यों में इतने–इतने लोगों को अधिकार है कि वो दण्ड दे सकते हैं। **जिनको अधिकार नहीं, वो दण्ड नहीं दे सकते।** एक व्यक्ति ने दुकान पर किसी सामान की चोरी कर ली। सड़क पर चलने वाले व्यक्ति को चोर को दण्ड देने का अधिकार नहीं है। हां, अगर चोर चोरी करके भाग रहा है तो वह उसको पकड़ सकता है, उसको पुलिस स्टेशन तक ले जा सकता है। वो इतना कर सकता है। उसको केवल इतना करने का अधिकार है।

वो चोर को पीट नहीं सकता। यह अधिकार उसको नहीं है। पर लोग ऐसी गड़बड़ करते हैं। सड़क पर ही उसको पीटना शुरू कर देते हैं। इसलिए इसको ध्यान रखना है कि हमारा कर्म कितना उस अधिकार की सीमा में रहना है अन्यथा हम ही अपराधी हो जाएंगे। फिर हमको दण्ड मिलेगा।

कुछ कर्मों का फल ईश्वर देगा

अब ये निर्णय कौन करेगा कि किस कर्म का फल कब देना, कहां देना, कैसे देना और कितना देना? इसका निर्णय ईश्वर करेगा। आप और हम इसका पूरा निर्णय नहीं कर सकते। ये पूरा–पूरा, ठीक–ठीक हम नहीं जानते, किसी को भी नहीं मालूम कि किस कर्म का क्या फल दिया जाए, कितना दिया जाए, कैसा दिया जाए, कब दिया जाए?

हम विद्यार्थी हैं, ईश्वर हमारा परीक्षक है। वो हमारी परीक्षा लेता है– 24 घंटे साल के 365 दिन। ईश्वर हमारे प्रत्येक कर्म को नोट करता है कि हमने सुबह क्या किया, दोपहर को क्या किया, शाम को क्या किया, रात को क्या किया? अच्छा किया कि बुरा किया? हम मन में क्या सोचते हैं, वाणी से क्या

बोलते हैं, शरीर से क्या क्रिया करते हैं, उसको भी वह नोट करता है। इस प्रकार से **ईश्वर हमारे मन के, वाणी के और शरीर के तीनों प्रकार के कर्मों को नोट करता है।**

दूसरे व्यक्ति तो हमारे मन की सारी बातें नहीं जानते। हमारी वाणी से, भाषा से, हमारे आचरण से, शारीरिक व्यवहार से वो कुछ–कुछ समझ जाते हैं कि इसके मन में क्या भावना है। मन की सारी बातें दूसरा व्यक्ति वर्षों तक भी नहीं समझ पाता। ईश्वर हमारे मन में हमारे अन्दर ही बैठा है, इसलिए ईश्वर जरूर तुरन्त समझता है, तत्काल जान लेता है कि हम मन में क्या सोचते हैं। वह हमारी एक–एक बात को नोट करता है।

कब मिलता है फल?

भाग्य निर्माण को इच्छुक हे प्रियवर! आपका भाग्य, आपका पुरूषार्थ और काल, ये तीनों मिल कर आपको फल देते हैं। अपने–अपने कर्म का फल एक धरोहर (अमानत) के समान है, जो कर्मजनित फल, विधाता ईश्वर के ज्ञान में सुरक्षित रहता है। ईश्वर की व्यवस्था में उपयुक्त अवसर आने पर फल देने के लिए बंधा हुआ काल इस कर्म–फल को हमारे पास खींच लाता है। जैसे फल–फूल अपने समय पर वृक्षों में लग जाते हैं, उसी प्रकार पहले के किए हुए कर्म भी अपने फल–भोग के समय का उल्लंघन नहीं कर सकते।

जैसे–जैसे ईश्वर हमारे कर्मों को देखता–समझता जाता है, वैसे–वैसे वह तत्काल अपनी ओर से उसका कुछ–कुछ फल भी देता जाता है। कुछ कर्मों का फल हमको दो–चार दिन, पन्द्रह दिन, महीने भर बाद, किन्हीं का छह माह बाद, किन्हीं का एक वर्ष बाद, कुछ कर्मों का 50 साल के बाद, कुछ कर्मों का फल अगले जन्म में, दूसरे–तीसरे, पांचवें जन्म में अर्थात जब भी किसी कर्म का फल देने का उचित समय आता है, उस समय पर हमारे कर्मों का फल मिलता है। यहां प्रश्न उठता है कि–

ईश्वर तत्काल क्या फल देता है?

जब हम अपने मन में किसी का भला करने के लिए सेवा करने की, परोपकार करने की, दान देने की, मदद करने की बात सोचते हैं, कोई अच्छी योजना बनाते हैं, तो ईश्वर तत्काल हमें अन्दर से आनन्द देता है, निर्भयता देता है। ये सब चीजें हमारे मन के अन्दर उत्पन्न होती हैं। ये अनुभव ईश्वर की ओर से प्रदत्त है कि आप अच्छी बात सोचिए, ईश्वर तत्काल आनन्द देगा, उत्साह देगा, निर्भयता देगा। **अगर कोई व्यक्ति अच्छा काम करता है, समाज की सेवा करता है, परोपकार करता है, दूसरों की सहायता करता है, तो ईश्वर उसको साथ–साथ सुख देता जाता है, वो व्यक्ति प्रसन्न–आनन्दित रहता है।**

इसके विपरीत झूठ बोलने की, चोरी करने की, धोखा देने की, छल–कपट करने की, गलत योजना बनाईये, तत्काल ईश्वर दण्ड देगा। आपको तुरन्त मन में भय लगेगा कि कहीं पकड़े तो नहीं जाएंगे, कहीं फंस तो नहीं जाएंगे, कहीं दण्ड तो नहीं मिलेगा, कहीं बदनामी तो नहीं होगी, कहीं जेल तो नहीं होगी, मार–पिटाई तो नहीं होगी? ऐसे मन में भय लगेगा, शंका होगी। इस प्रकार से आपको अपने अन्दर ये ईश्वर द्वारा दी गई अनुभूति होगी। ये ईश्वर द्वारा तत्काल दिया गया फल है।

जो व्यक्ति झूठ बोलता है, चोरी करता है, छल–कपट करता है, दूसरों का अधिकार छीन लेता है, अन्याय करता है, शोषण करता है तो ईश्वर का दण्ड उसके लिए बराबर चलता रहता है। अपराधी अपने को अपराधी महसूस करता है। **जब वो अपने को अपराधी महसूस करता है तो वह भयभीत हो उठता है। यह डर का पैदा होना, अपने आप में दण्ड नहीं है तो क्या है?** अपराधी हमेशा टेंशन में रहता है, चिन्ताओं से ग्रस्त रहता है, भयभीत रहता है। वह छोटे–छोटे लोगों से, चपरासियों से भी डरता रहता है कि मैं जो गड़बड़ करता हूँ। मेरे साथी अड़ोसी–पड़ोसी सब जानते हैं, तो कभी ऐसा न हो कि मेरी पोल खोल दें और मुझे दण्ड भोगना पड़े। **उसके पास जीवनपर्यन्त दो ही विकल्प बचते हैं, पहला या तो वह अपराध को छिपाता रहे या फिर दूसरा, स्वयं को छिपाता रहे।** इस तरह से वो निडर हो कर विचरण नहीं कर पाता, अच्छी तरह से जीवन नहीं जी पाता। ये ईश्वर की ओर से उसका कर्म का फल है।

ईश्वर कुछ फल देरी से देता है

आगे चलकर तो ईश्वर से उसे और ज्यादा फल मिलने वाला है। एक व्यक्ति झूठ बोलता है, चोरी करता है, रिश्वत लेता है, सारे बुरे काम करता जाता है, न उसको माता–पिता से दण्ड मिल रहा है, न सरकार से दण्ड मिल रहा है, न पंचायत से दण्ड मिल रहा है और वो घोटाला करता जाता है, करता जाता है, खूब संपत्ति जमा कर लेता है, खूब नाम कमा लेता है, समाज में यश–प्रतिष्ठा भी अच्छी हो जाती है। उसको दण्ड कुछ मिलता नहीं, इससे अब लोगों को शंका होती है कि पता नहीं इसके कर्मों का फल मिलेगा भी या नहीं मिलेगा? कब मिलेगा? लोग देखना चाहते हैं कि इसने अपराध किया, इसलिए इसको दण्ड

मिलना चाहिए था। पर वो तो मजे में घूम रहा है। उसकी सब प्रकार से समृद्धि बढ़ रही है। दण्ड तो कहीं दिखता नहीं। तब लोगों को शंका होती है, पता नहीं कि अगला जन्म होगा कि नहीं होगा, कब होगा, फल मिलेगा या नहीं मिलेगा? परन्तु वेद आदि शास्त्रों में ऐसा बताया गया है कि किया हुआ कोई भी कर्म निष्फल नहीं होता। फल जरूर मिलेगा, समय आने पर मिलेगा। सभी कर्मों का फल तत्काल नहीं मिलता। वो समय पर मिलता है।

आप में से कुछ लोग जानते होंगे जो खेती–बाड़ी करते हैं या खेती–बाड़ी से परिचित हैं कि **पालक, चावल, आम के बीज का फल एक बराबर समय में नहीं मिलता।** कोई बीज जल्दी फल देता है, कोई 20 वर्षों के बाद फल देता है। कर्म का भी यही हिसाब है, कर्म भी तो बीज है। **कर्म कर दिया, मतलब बीज बो दिया। और उस बीज का जब फल देने का समय आएगा, तब देगा।**

अब मान लो, किसी आदमी के बम फोड़ने से वहां 200–500 आदमी मारे गए। अब 500 हत्याएं कर दीं उसने और ऐसी घटनाएं एक बार नहीं, 20 बार कीं। अब इतने सारे लोगों की हत्या की तो उसमें तो दण्ड बहुत अधिक है, जो एक जन्म में तो देना संभव ही नहीं है। उसका तत्काल एक ही जन्म में फल कैसे पूरा हो जाएगा? उसको तो पता नहीं, कितनी बार दण्ड देना पड़ेगा। कितनी बार उसको व्हेल मछली बनाएंगे, सांप बनाएंगे, बिच्छू बनाएंगे, बरगद का पेड़ बनाएंगे, क्या–क्या बनाएंगे, वो भगवान ही जाने कि कब कहां, क्या, कैसा फल देंगे। पर उसने जो इतने बड़े–बड़े अपराध किए तो दो–चार घंटे या एक जीवन में उसका फल पूरा होने वाला नहीं है। उसको तो कितने ही जन्मों तक दण्ड भोगना पड़ेगा।

ईश्वर क्या करता है? कुछ कर्मों का फल तो इसी जन्म में दे देता है। और कुछ कर्मों का फल बचा के रखता है, वो अगले जन्म में देता है। फिर जब–जब मौका आता है, तब–तब देता रहता है।

किया कर्म कभी व्यर्थ नहीं जाता है

सीखने योग्य बात यह है कि जिन घटनाओं का दंड या ईनाम यहां न्यायाधीश और सरकार ने नहीं दिया, नहीं दे पाए, पकड़ में नहीं आए, अथवा यदि समाज ने आपको पूरा फल नहीं दिया तो कोई बात नहीं, आपका कर्म बेकार नहीं जाएगा। वो आपके खाते में जमा रहेगा। **अगर समाज ने, राजा ने, पंचायत ने, आपको कर्म का पूरा फल नहीं दिया और आपका फल बच गया, तो अंत में आपका फल ईश्वर देगा।** उस पर पूरा–पक्का विश्वास करें। इसलिए सदा याद रखें कि आपको फल मिलेगा, फल कहीं नहीं जाएगा। इस प्रकार से न्याय–अन्याय को समझना चाहिए।

लोग सोचते हैं कि हमने अच्छे काम किए, इतनी समाज की सेवा की, इतना दान दिया, इतना पुण्य किया और हमको फल तो मिला ही नहीं। अच्छे कर्म का फल नहीं मिला तो शोर मचाते हैं– देखो साहब! हमारा कर्म बेकार गया, हमाको फल नहीं मिला।

वे यह नहीं सोचते कि उन्होंने जो बुरे कर्म किए, उसका फल भी तो नहीं मिला। जो गड़बड़ की, जो गलती की, उसका दंड अभी नहीं मिला, तो क्या आगे भविष्य में मिलेगा या नहीं मिलेगा? उसके बारे में आप शोर नहीं करते कि दण्ड क्यों नहीं मिला अभी तक?

अगर बुरा फल मिलेगा तो अच्छा भी मिलेगा। दोनों मिलेंगे, इसलिए चिंता की कोई बात नहीं है। आपको अच्छा फल चाहिए, इसलिए अच्छा काम करो, बुरा काम नहीं करना, नहीं तो दंड मिलेगा। बार–बार दोहराता हूँ कि– ''दंड के बिना कोई सुधरने वाला नहीं है।'' दंड को हमेशा याद रखें, तो ही सुधार होगा।

प्रश्न– क्या माता–पिता और परिजनों द्वारा हमारे कर्मों का जो फल मिल जाता है, वो फल वहीं खत्म हो जाता है या दोबारा भगवान भी उसका फल देंगे?

एक गलती का दण्ड एक ही बार दिया जाता है, दो बार नहीं। मान लिया कि किसी व्यक्ति ने सौ रूपये की गलती की और माता–पिता ने उसको सौ रूपये का दंड पूरा दे दिया, तो अब ईश्वर दोबारा दंड नहीं देगा। मान लो कि **सौ रूपये की गलती की और माता पिता ने अस्सी रूपये का दंड दिया तो कितने का दण्ड देना बचा? बीस रूपये का बच गया। वो ईश्वर दे देगा, हो गया पूरा सौ।** और अगर गलती थी सौ रूपये की, लेकिन माता–पिता ने सवा सौ का दंड दे दिया, अर्थात दंड ज्यादा दे दिया तो यह जो पच्चीस रूपये फालतू दंड दिया है, यह अन्याय है, उसके बदले में अब माता–पिता को दंड मिलेगा। उसको जो फालतू दंड दे दिया इसलिए ईश्वर माता–पिता को दंड देगा।

चाहे माता–पिता हों, चाहे गुरुजन हों, चाहे समाज हो, चाहे पंचायत हो, चाहे न्यायाधीश हो, कोई भी हो, जो भी दूसरों पर अन्याय करेगा, उसको दंड मिलेगा। उसको अन्याय करने के लिये नहीं बैठाया गया था। इसलिये हमको

नापतौल कर अर्थात सोच–समझकर न्यायपूर्वक दण्ड देना चाहिए और यह भी ध्यान रखना चाहिए कि एक कर्म का फल एक ही बार मिलता है, दो बार नहीं।

प्रश्न– भगवान मनुष्य का शरीर देते हैं, मगर किसी को लड़का बनाते हैं, किसी को लड़की तो क्या यह शरीर अपने कर्मों से मिलता है या भगवान अपनी इच्छा से देते हैं?

जन्म हुआ, बेटा, बेटी जो भी हुआ, यह हमारे कर्मों का फल है। यह ईश्वर की मर्जी, उसकी अपनी मनमानी नहीं है कि चाहे जिसको स्त्री बना दे, चाहे जिसको पुरूष बना दे। ऐसा करेगा तो यह अन्याय हो जायेगा। कुत्ता, गधा, मनुष्य बनना कर्मों का फल है, तो स्त्री शरीर मिला या पुरूष शरीर मिला, वो भी कर्मों का फल है। अगर स्त्री, पुरूष अपनी मर्जी से बनायेगा तो कुत्ता, गधा भी अपनी मर्जी से बनायेगा। तब तो हम उसको न्यायकारी नहीं कह पाएंगे।

इसके अलावा एक बात और ध्यान रखने योग्य है कि, यदि जीव के द्वारा कोई कर्म नहीं किया गया है, इसके बावजूद ईश्वर किसी को सुख और किसी को दुःख दे देता है तो वह अन्यायकारी सिद्ध हो जाता है। इसलिये ईश्वर बिना कर्मों की अपेक्षा से किसी को भी फल नहीं देता है।

अब तक के विवेचन से क्या पता चला? यही कि–

कुछ कर्मों का फल इस जन्म में, कुछ का अगले जन्मों में

कुछ कर्मों का फल हमें इसी जन्म में मिलता है। इसी जन्म में हम कर्म करते हैं और इसी जन्म में ही फल भी मिलता है।

तात्पर्य है कि अच्छे कर्मों और बुरे कर्मों का फल इस जन्म में भी मिलता है। आपको याद है दिल्ली के दो गड़बड़ व्यक्ति थे, जिनका नाम था रंगा और बिल्ला। रंगा–बिल्ला को इसी जन्म में सजा मिली। इंदिरा गाँधी जी का हत्यारा बेअंत सिंह, उसको इसी जन्म में दण्ड मिला। और आप छब्बीस जनवरी को देखिए, कितने वीर सैनिकों को पुरस्कार मिलते हैं, परमवीर चक्र, अशोक चक्र आदि–आदि चक्र मिलते हैं। तो यह देखो, इसी जन्म में कर्म किया, इसी जन्म में फल मिला। आप लोग इसी जन्म में मेहनत करते हैं, और इसी जन्म में खूब वेतन कमाते हैं। व्यापारी लोग व्यापार में पैसे कमाते हैं। आलीशान मकान बनाते हैं, कार खरीदते हैं।

एक व्यक्ति ने चोरी कर ली। पुलिस ने खोजबीन की। चोर मिल गया। चोरी का सामान भी बरामद हो गया। कोर्ट में केस हुआ। जज साहब ने कहा– छह महीने की जेल दी जाएगी। चोरी कर्म का दंड (फल) क्या था? छह महीना जेल में रहना।

इन सब उदाहरणों से पता चलता है कि **इसी जन्म में कर्म करते हैं, इसी जन्म में फल मिलता है।** खूब मिलता है। ऐसा नहीं है कि, सारा अगले जन्म में ही मिलता है। कुछ यहाँ मिलता है, कुछ आगे मिलता है।

इस जन्म के कर्म इसी जन्म में फल देते हैं, इसमें शास्त्र के प्रमाण ये हैं–

क्लेशमूलः कर्माशयो दृष्टादृष्टजन्मवेदनीयः। (योग 2–12) अविद्या, अभिमान, राग, द्वेष, मृत्युभय, इन 5 प्रकार वाले दुख के उत्पादक कारण रूपी क्लेशों से युक्त होकर, किए गए कर्मों का फल इस **वर्तमान जन्म** में तथा **अगले जन्मों** में भोगना पड़ता है।

अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः। चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।। (मनु 2–78) अर्थात जो व्यक्ति विद्वानों, वृद्धों की विनम्रता और श्रद्धा के साथ सेवा आदि करते हैं, उनकी आयु, विद्या, यश और बल, ये चारों चीजें इसी जन्म में बढ़ती रहती हैं।

बहुत श्रद्धा व जोश के साथ किए गए अच्छे कर्म, तीव्र शुभ कर्म कहलाते हैं। ये कर्म इसी जन्म में पक जाते हैं, इसलिए फल देने को तैयार बन जाते हैं। इसलिए पककर शीघ्र ही फल देते हैं, इस बात की पुष्टि में योग दर्शन का व्यास भाष्य कहता है कि– **तत्र तीव्र संवेगेन मंत्र तपः समाधिभिर्निर्वित ईश्वरदेवतामहर्षि महानुभावनामाराधनाद्वा यः परिनिष्पन्नः स सद्यः परिपच्यते। (व्यास भाष्य 2–12)** अर्थात उनमें से तीव्र (ऊंचे) वेग (स्तर) से मंत्र का जाप, तपस्या करना, समाधियों के द्वारा संपादित जो कर्म होते हैं अथवा ईश्वर की आज्ञापालन करने से, महापुरूषों, महर्षि महानुभावों की सेवा और सत्संग करने से जो पुण्य कर्म उत्पन्न होते हैं, वे इसी जन्म में फल देते हैं।

अंधाधुन्ध किए गए बड़े–बड़े पाप कर्म तीव्र अशुभ कर्म कहलाते हैं। वो भी इसी जन्म में जल्दी पक कर फल देते हैं, इस बात की पुष्टि में योग दर्शन का व्यास भाष्य कहता है कि– **यथा तीव्र क्लेशेन भीतव्याधित कृपणेषु विश्वासोपगतेषु वा महानुभावेषु वा तपस्विषु कृतः पुनः पुनरपकारः स चापि पाकर्माशयः सद्य एव परिपच्यते। व्यासभाष्य 2–12।** अर्थात तीव्र मूर्खता और स्वार्थ (अविद्या) आदि क्लेशों के द्वारा भीत (कमजोर–डरे हुए), रूग्ण (बीमार), कृपापात्रों (दया के पात्र) वा विश्वस्त महानुभावों (महापुरूषों) अथवा तपस्वियों के प्रति बार–बार किया गया अन्याय–अत्याचार (अपकार) रूपी पाप कर्माशय भी शीघ्र ही इसी जन्म में फल देता है।

इस जन्म में और अगले जन्मों में फल देने वाले कर्मों का वर्तमान जन्म में फल न मिलने पर ऐसा नहीं मानना चाहिए कि कर्म नष्ट हो गए हैं बल्कि ऐसा मानना चाहिए कि उन कर्मों का फल अगले जन्म में हमें मिलेगा। शास्त्र कहता है कि—**दृष्टादृष्टप्रयोजनानां दृष्टाभावे प्रयोजनमभ्युदयाय।** (वैशेषिक–6/2/1) अर्थात दृष्ट (इसी जन्म में फल देने वाले कर्म) अदृष्ट (अगले जन्म में फल देने वाले कर्म) के फल के उपभोग के उद्देश्य के लिए किए गए कर्मों का यदि तत्काल उसी समय फल प्राप्त न हो तो बाकी बचे हुए स्वरूप वाले कर्म का फल तत्काल से अतिरिक्त वर्तमान के आगे के इसी जन्म में या अगले जन्म में कल्याण के लिए प्राप्त होता है।

कर्मों का फल क्या मिलेगा?

प्रश्न यह हुआ कि एक निष्काम और तीन सकाम, ये चार प्रकार के जो कर्म हो गए, इन कर्मों का फल क्या होगा? **यदि शुभ, अशुभ और मिश्रित, इस तरह के सकाम कर्म करेंगे तो इसका फल मिलेगा– जाति, आयु और भोग।** अतः बार–बार जन्म होगा। क्योंकि हमने सांसारिक सुख के लिए तो कर्म किया ही था। जब सांसारिक सुख के लिए कर्म किया तो ईश्वर फिर सांसारिक सुख ही देगा। और सांसारिक सुख को भोगने के लिए फिर शरीर चाहिए। **जाति का मतलब शरीर।** मनुष्य, पशु, पक्षी, ये शरीर हैं। बिना शरीर के तो हम भौतिक सुख नहीं भोग पाएंगे। इसलिए ईश्वर की ये कर्मफल व्यवस्था है कि हम सकाम कर्म करेंगे तो सांसारिक सुख भोगने के लिए फिर हमको जन्म मिलेगा। फिर शरीर के माध्यम से हम उन सांसारिक सुखों को भोग सकते हैं।

प्रश्न – अभी हम कर्म कर रहे हैं या अशुभ फल भोग रहे हैं, अर्थात क्या वो क्रियमाण कर्म कर रहे हैं या प्रारब्ध कर्म का फल भोग रहे हैं? वो कैसे पता चलेगा?

हम जो कर्म, जो क्रिया कर रहे हैं। जैसे कि अभी भोजन बना रहे हैं, हवन कर रहे हैं, आहुतियां दे रहे हैं, बैठकर ईश्वर का ध्यान कर रहे हैं, ये तो कर्म हो रहा है, क्रिया चल रही है। यह फल नहीं है।

जब हम कुछ सुख–दुःख भोग रहे हैं, तब वो सुख–दुःख भोग फल माना जाएगा। मान लीजिए कि आपने भोजन बना लिया तो यह कर्म हो गया। अब उसको खाना शुरू किया तो ये फल है। कौन से कर्म का फल है? जो आपने मेहनत की थी, व्यापार किया, नौकरी की, पैसे कमाए, वो जो कर्म किया था, उस कर्म का ये फल है। आपने भोजन की सामग्री खरीद ली, आटा–दाल–सब्जी

खरीद लाए। फिर घर में आकर पकाया तो यहां तक यह कर्म हो गया। और अब जो खा रहे हैं, अब खाने से जो सुख मिल रहा है, ये सारा उस मेहनत का फल है, जो आपने पैसे कमाने में की थी। इस तरह से **जब आप सुख भोग रहे हैं या दुःख भोग रहे हैं, तो इसको फल के रूप में समझना चाहिए। और जब क्रिया कर रहे हैं तो इसको कर्म के रूप में समझना चाहिए।** इस तरह विचार करेंगे तो आपको पता चल जाएगा, यह कर्म हो रहा है या फल भोग रहे हैं। इस तरह से इनमें अंतर समझ में आएगा।

कर्म का फल कब मिलना है, इस बात का निर्धारण कर्म के प्रकार व भावना के आधार पर होता है। जैसे भोजन खाने का कर्म किया तो बड़ी जल्दी से शरीर में ताकत आ गई। गेहूं बोया तो 4–5 माह में काट कर लाभ कमा लिया। पढ़ाई की तो 1 साल में परीक्षा उत्तीर्ण कर ली।

यदि हमने निष्काम कर्म किया, हमने मोक्ष के लिए कर्म किया तो मोक्ष का फल भोगने के लिए तो शरीर की कोई आवश्यकता नहीं। वहां मोक्ष वाला फल बिना शरीर के भोगा जाता है। इसलिए **निष्काम कर्म करेंगे तो शरीर मिलना बंद हो जाएगा। फिर बिना शरीर के ही मोक्ष का आनन्द ले सकेंगे।** फिर तत्काल जन्म नहीं होगा।

अच्छे कर्म का अच्छा, बुरे कर्म का बुरा और मिश्रित कर्म का मिश्रित फल

अब फल भोगने की बारी आती है तो कर्मफल का सिद्धांत यह कहता है कि यदि आप अच्छे काम करेंगे, शुभ कर्म करेंगे तो उसका फल भी अच्छा होगा। अशुभ कर्म करेंगे तो उसका फल भी बुरा होगा। **शुभ कर्म का शुभ फल और अशुभ कर्म का अशुभ–बुरा फल और तीसरा मिश्रित कर्म का मिश्रित फल। जैसा कर्म, वैसा फल। ये फल का सिद्धांत है।**

अच्छे कर्म का अच्छा फल

मनुष्य को तपस्या करने से रूप, मेहनत और समझ के सहयोग से सौभाग्य और समाधि लगाने से मोक्ष रूपी फल प्राप्त होते हैं। इस प्रकार, कर्म करने से ही सब कुछ–सब प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। कहा भी है– **"कर्म तेरे अच्छे तो किस्मत तेरी दासी।"**

इससे सीख मिलती है कि शुभ और सुख चाहने वाले के द्वारा भविष्य बनाने के लिए उपाय किया ही जाना चाहिए। **सुख की कामना करने वाले व्यक्ति को ऐसा व्यवहार करना चाहिए, जिससे निश्चिततः भाग्य बनता**

है। इस प्रकार, हमें भाग्य निर्माण के अनुकूल व्यवहार ही करना चाहिए।

बुरे कर्म का बुरा फल

पापी व्यक्ति जब पाप करता है तो पहले तो उसकी वृद्धि होती है, वह धन सम्पत्ति, भौतिक सुखों को प्राप्त कर लेता है, धीरे–धीरे वह अपने शत्रुओं को भी हरा देता है। पर अन्त में क्या होता है? अन्त में तो वह जड़ सहित नष्ट हो जाता है। इस बात की पुष्टि में शास्त्र कहता है–

अधर्मेणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति।

ततः सपत्नांजयति समूलस्तु विनश्यति।। (मनु 4–56)

जैसे तालाब के बांध को तोड़कर जल चारों ओर फैल जाता है, वैसे ही जब अधर्मात्मा–पापी मनुष्य धर्म की मर्यादा को छोड़ कर उसका उल्लंघन कर देता है, झूठ, कपट, पाखंड, रक्षा करने वाले वेदों का खंडन और विश्वासघात आदि कर्मों से पराये पदार्थों को हड़प कर, पहले तो वह अधर्मात्मा उन्नति की ओर बढ़ता है और धन आदि ऐश्वर्य से खान, पान, वस्त्र, आभूषण, यान, स्थान, मान, प्रतिष्ठा को प्राप्त होता है। वह अन्याय से शत्रुओं को भी जीत लेता है। लेकिन बाद में? बाद में तो **जैसे जड़ से कटा हुआ वृक्ष नष्ट हो जाता है, वैसे ही अधर्मी पूरी तरह नष्ट हो जाता है।** ठीक दुर्योधन और रावण की तरह।

यह बात अच्छी तरह से दिमाग में बैठा लेनी चाहिए कि इस संसार में जैसे गाय की सेवा का फल दूध आदि शीघ्र प्राप्त नहीं होता, वैसे ही किए हुए अधर्म का फल शीघ्र प्राप्त नहीं होता किन्तु वह किया हुआ अधर्म धीरे–धीरे, अधर्म–कर्ता के सुखों को रोकता हुआ सुख के मूल कारणों (जड़ों) को काट देता है, पश्चात् अधर्मी दुख ही दुख भोगता है। इसलिए यह कभी नहीं समझना चाहिए कि कर्ता का किया हुआ कर्म निष्फल होता है।

इस प्रकार से, शुभ कर्म से सुख तथा पाप कर्म से दुःख प्राप्त होता है। इसलिए यदि हम अपना कल्याण चाहते हैं, दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलना चाहते हैं तो हमें सदैव सुकर्म करते रहना पड़ेगा। **सज्जन लोग पाप को त्याग कर, उससे बचकर पुण्य कामों को करते रहते हैं। ऐसा करते–करते वे अपना लोक भी सुधार लेते हैं और परलोक भी।**

आप कौन सा फल प्राप्त करना चाहते हैं? अच्छा, बुरा या मिश्रित? अच्छा। ये अच्छा फल कैसे कर्म से मिलेगा? अच्छे कर्म से। बस तो फिर अच्छे–अच्छे कर्म कीजिए ताकि हमको अच्छे फल मिलें। बुरा फल हम नहीं

चाहते, हम दुःख भोगना नहीं चाहते तो हम बुरा काम भी नहीं करेंगे। और मिश्रित फल भी नहीं चाहते। थोड़ा सुख मिले, थोड़ा दुःख भी मिले, ऐसा भी नहीं चाहते। यदि हम पूरा दुःख भी नहीं चाहते और थोड़ा दुःख मिलाजुला सुख भी नहीं चाहते तो हमको ये दो प्रकार के अर्थात बुरे काम भी बंद करने होंगे और मिश्रित काम भी बंद करने होंगे। अच्छे–अच्छे, शुभ कर्म करने होंगे। तब जाकर हमको शुभ फल मिलेगा।

यदि आपको ऑफर किया जाए, पूछा जाए कि आपको 50 प्रतिशत सुख देंगे और 50 प्रतिशत दुःख देंगे, क्या आपको चलेगा? नहीं चलेगा न। अच्छा 70 प्रतिशत सुख देंगे, 30 प्रतिशत दुःख देंगे, तो क्या चलेगा? नहीं चलेगा न।

कई लोगों की ऐसी मान्यता है कि जैसे–तैसे, जो भी करना पड़े, चाहे झूठ, छल–कपट करना पड़े, चाहे चोरी करनी पड़े, वैसा करके अपना काम बना लेना चाहिए। यह अवसरवाद वस्तुतः अधर्म है, हिंसा है, अन्याय है। ईश्वर के न्यायालय में सिफारिश, रिश्वत नहीं चलती है। इसलिए उसे दण्ड मिलना ही है। नीतिकार कहता है कि–

फलं धर्मस्य चेच्छन्ति धर्मं नेच्छन्ति मानवाः। फलं पापस्य नेच्छन्ति पापं कुर्वन्ति यत्नतः।। मनुष्य की कैसी विचित्र विचारधारा बन जाती है कि वह अपने जीवन में सुख, शान्ति, सन्तोष, निर्भीकता, स्वतन्त्रता आदि गुणों को प्राप्त तो करना चाहता है। लेकिन इन गुणों को प्राप्त करने के लिए जिन शुभ कर्मों का आचरण करना चाहिए, उन कामों को वह नहीं करना चाहता है। वह अपने जीवन में दुःख, अशान्ति, असंतोष, भय, बन्धन आदि अनिष्टों को नहीं प्राप्त करना चाहता है लेकिन इन सब बुराईयों की उत्पत्ति का जो पाप रूपी कारण है, उस पाप की योजना को बनाकर और उसके अनुसार आचरण कर वह इन अनिष्टों को प्राप्त किया करता है। बड़ा विरोधाभासी जीवन है। वह बबूल बो के आम उगाना चाहता है।

प्रश्न – क्या कर्म, भाग्य एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं? एक मजदूर दिनभर मेहनत करके, 200 रुपए ही कमाता है, लेकिन एक झूठा तथा बेईमान आदमी बिना मेहनत करे ही लाखों रूपये कमाता है। क्या उस झूठे तथा बेईमान आदमी को भगवान सजा देगा?

भाग्य क्या है? हमारे कर्मों का फल। जो भाग्य है, वो कर्मों का फल ही है, **कर्मों के फल को ही भाग्य कहते हैं।**

एक मजदूर सारा दिन मेहनत करता है और 200 रुपए कमाता है। वो मेहनत ईमानदारी से कमा रहा है, उसको ईश्वर सुख देगा, अच्छा फल देगा। एक आदमी झूठ बोलता है, चोरी करता है, स्मगलिंग करता है, बुरे काम करता है और लाखों रूपये कमाता है, बेईमानी से धोखा देता है, देश को भी धोखा देता है, जनता को भी, सरकार को भी। वह ऐसे गलत तरीकों से पैसे कमाता है, तो ये उसका बुरा कर्म है, ईश्वर इसको दंड जरूर देगा।

अगर बुरे काम पचास प्रतिशत से अधिक किये तो कुत्ता, बिल्ली, गधा, सुअर बनना पड़ेगा, ईश्वर माफ नहीं करेगा किसी को भी। अगर माफ करता तो दुनिया में एक भी कुत्ता नहीं होता, एक भी गधा नहीं होता, एक भी बकरी नहीं होती, वो सबको माफ कर देता। करेगा तो ईश्वर सबको माफ करेगा और नहीं करेगा तो किसी को भी नहीं करेगा। ईश्वर न्यायकारी है। जो लोग अपराध करते हैं, उनको निश्चित रूप से दण्ड मिलेगा।

समय आने दीजिये। समय की प्रतीक्षा कीजिये, सारे बीज, समान काल में फल नहीं देते। यह पहले बताया जा चुका है कि अगर आपने पालक बोई है तो पंद्रह–बीस दिन में तैयार हो जायेगी, चावल बोये तो 60–70 दिन में मिल जायेंगे, गेहूँ बोया तो चार महीने में मिलेगा और आम का बीज बोया तो, कई साल लगेंगे। सही समय आने पर उस–उस बीज का फल मिलता रहेगा। ऐसे जो–जो हम कर्म करते हैं, उन–उन कर्मों का फल भी समय आने पर मिलेगा, तत्काल नहीं मिलेगा। कुछ कर्मों का फल इस जन्म में अर्थात पांच साल में, दस साल में, बीस साल में, पचास साल में, कुछ कर्मों का दूसरे जन्म में, कुछ का तीसरे में, कुछ का पांचवे में, कुछ का दसवें में, जब नंबर आयेगा तब मिलेगा, लेकिन मिलेगा जरूर।

अच्छे कर्म करने वाले व्यक्ति को ईश्वर की ओर से पुरस्कार स्वरूप सुख–शांति, निर्भयता, उत्साह, सहयोग, प्रेरणा आदि प्राप्त होती है। लेकिन कई बार दूसरों की तरफ से सुख, शांति, प्रेम, सहयोग, सांत्वना मिलने के स्थान पर भय, तिरस्कार, घृणा, निंदा, विरोध, उपेक्षा और हानि आदि भी प्राप्त होते हैं। कई बार अच्छा काम करने वाले दुःखी, बाधित होते हैं क्योंकि अज्ञानी, स्वार्थी व्यक्तियों के द्वारा उनके साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है। इसमें कारण यह है कि उनके हितों और स्वार्थों की पूर्ति में अच्छा काम करने वाले व्यक्तियों के कारण से बाधा उत्पन्न होती है। कई बार अच्छे व्यक्तियों की कम संख्या और उनके संगठित न होने के कारण योजनाबद्ध रूप से बुरे व्यक्तियों और बुरे कार्यों का विरोध न कर पाने के कारण वे बाधित कर दिए जाते हैं।

यहां ये भी ध्यान रखने योग्य है कि अच्छे कर्मों का बुरा प्रभाव सत्य, न्याय को न समझने वाले अज्ञानी स्वार्थी लोगों के द्वारा ही उत्पन्न किया जाता है। संसार में ऐसा वातावरण बना दिया जाता है कि लोग ऐसा समझते हैं कि अच्छे कर्म करने पर अच्छा फल नहीं मिलता। **बुद्धिमान धार्मिक व्यक्ति तो इस बात को समझते हैं कि अच्छे कर्म का फल अच्छा ही मिलता है, अच्छे कर्मों का प्रभाव व परिणाम तो अच्छा ही होता है। इसलिए वे अच्छे कर्म करने वाले को अपना सहयोग व समर्थन देते हैं। वे बुरे कर्म करने वालों को बुरा ही समझते हैं, उनके प्रति कोई प्रेम, श्रद्धा, सम्मान उनके मन में नहीं होता है।** ऐसे ही बुरे कर्म करने वाले व्यक्तियों को ईश्वर की ओर से तो सदा ही दुःख, भय, ग्लानि, निराशा आदि ही प्राप्त होते हैं, लेकिन कई बार दूसरे पक्षपाती–रागी व्यक्तियों से उनको सहयोग, प्रोत्साहन आदि भी प्राप्त होते हैं।

प्रश्न – जानते हुये भी गलत कार्य में सहयोग देना, जैसे कि वकील अपने क्लाइंट को जो कि अपराधी है, उसको बचाता है तो क्या उसको भी कोई दण्ड मिलेगा?

उत्तर देने से पहले मैं एक स्पष्टीकरण कर देना चाहता हूँ। सत्य बताना मेरा उद्देश्य है, आपको सच बताऊंगा, आप खुश हों, नाराज हों, इसकी जिम्मेदारी मुझ पर नहीं है। हमारे शास्त्र में लिखा है कि जो संन्यासी झूठ बोलता है, वो नरक में जायेगा। मैं कर्मफल की बात कर रहा हूँ और मैं जानता हूँ कि किस कर्म से कैसा फल मिलता है।

ये पहले बताया जा चुका है कि एक प्रकार के कर्म हैं, कृत कर्म। **अपने हाथ से स्वयं कर्म करना, उसको कृत कर्म कहते हैं। दूसरा है, कारित कर्म। दूसरे से आदेश देकर कार्य करवाना। तीसरा है – अनुमोदित कर्म दूसरे के कार्यों का अनुमोदन करना।** इस प्रकार ये तीन प्रकार के कर्म होते हैं, स्वयं करना, दूसरे से कराना या समर्थन करना।

वकील साहब अगर यह जानते हैं कि यह व्यक्ति अपराधी है और वो स्वयं आकर स्वीकार करता है कि साहब! मैं अपराध करके आया हूँ, मुझे दण्ड से बचाओ। इसलिए अब यदि वकील उस अपराधी को बचाता है तो यह उसका अनुमोदन है। अपराधी का तो कृत कर्म है, और वकील जो उसे बचा रहा है, दण्ड से, सरकार से, वो उसके पाप कार्य का अनुमोदन कर रहा है कि तुमने जो भी किया ठीक है, कोई बात नहीं, मैं तुमको बचाता हूँ।

यह जो प्रश्न है कि जो वकील न चाहते हुये भी, अपराधी को बचाता है, उसे दण्ड से बचाता है, तो क्या वकील को दण्ड मिलेगा? उत्तर है– जी हां, दण्ड

मिलेगा। क्योंकि हमारे शास्त्रों में तीन प्रकार के कर्म बताये गए हैं। स्वयं करना, दूसरों से करवाना और समर्थन करना। अपराधी को बचाना उसका समर्थन करना कहलाता है। इसलिए उसका दण्ड मिलेगा। **वकील का कर्त्तव्य कानून के प्रति है, उसके सम्मान और गरिमा को बनाने के प्रति है, उसको लागू कराने के प्रति है, उसका हनन करने, करवाने या अनुमोदन–समर्थन कराने के प्रति नहीं।**

इसलिए जैसे अपराधी को दण्ड मिलना चाहिये, ऐसे ही उसको बचाने वाले उसके वकील को भी दण्ड मिलना चाहिये। जब अपराधियों को जेल होती है, साल–दो साल की तो उसके वकील को भी जेल होनी चाहिये। अगर दो साल वकील को भी जेल हो जाये तो फटाफट अपराध बंद हो जाये। जब अपराधी को दण्ड मिलेगा, उसके वकील को भी दण्ड मिलेगा तो या तो ये वकील लोग अपराधियों को बचाना छोड़ देंगे, निर्दोषों को हीं बचाएंगें और अपराधियों को जेल में डलवाएगें, या तो ये धंधा ही छोड़ देंगे।

भई, ये झूठ को जिताने वाला, अन्याय की विजय करवाने वाला काम क्यों करते हो? कोई, कपड़ा बेचो, मिठाई बेचो, कोई और दूसरा काम करो। मेहनत से अच्छा ईमानदारी का काम करो।

प्रश्न – मांसाहार करने वाले इंसान में से किसको दंड मिलेगा? जो उत्पन्न करे उसको या तैयार करे उसको या खाने वाला हो उसको?

प्राणी को मारने वाला, उसको पकाने वाला या खाने वाला किसको दंड मिलेगा, यह आपका प्रश्न है। इसका उत्तर हमारे शास्त्रों में लिखा है कि मांसाहर के क्षेत्र में आठ प्रकार के व्यक्ति हैं, **उन सबको दंड मिलेगा।** पहले तो स्लाटर हाउस के लिये, जो लायसेंस देता है, मारने की अनुमति देने वाला, वो भी अपराधी है। ये अनुमोदित कर्म हैं, उसको दंड मिलेगा। तुम्हारा कर्त्तव्य है, प्राणियों की रक्षा करना, न कि मारने की छूट देना। तुमने प्राणियों को मारने की छूट क्यों दी? जो ऐसी अनुमति देता है वो अपराधी है, उसको दंड मिलेगा।

फिर जो अपने हाथ से बकरों को, गायों को, प्राणियों को मारता है, उसको दंड मिलेगा। फिर मांस को बेचने वाले को दंड मिलेगा। फिर खरीदने वाले को दंड मिलेगा। फिर खरीद के घर तक उठा के लाने वाले (ट्रांसपोर्टर) को दंड मिलेगा। फिर घर में रसोई में जो मांस को पकायेगा, उसको दंड मिलेगा। फिर जो रसोई से उठाकर टेबल पर परोसेगा, उसको दंड मिलेगा और जो खायेगा, उसको मिलेगा। ऐसे आठ व्यक्ति बताये, इन सबको ईश्वर की ओर से दंड

मिलेगा। गलत काम करना और उसमें सहयोग करना, ईश्वर की दृष्टि में, ये सब अपराध है।

प्रश्न – घर का स्वामी घर के शेष व्यक्तियों को जब खिलाता है तो फिर वह अकेला दोष का भागी क्यों होगा?

क्योंकि घर के शेष व्यक्ति केवल भोक्ता हैं, आश्रित हैं, स्वयं कर्त्ता नहीं हैं, फल केवल कर्ता को ही मिलता है, यह कहा गया है। इसलिए उनको भोग करते हुए भी फल नहीं मिलेगा।

ऐसा होने पर भी एक बात और इस विषय में ध्यान देने योग्य है कि परिवार के सदस्य बुद्धिमान तथा धार्मिक हों और उनको इस बात का ज्ञान भी हो कि हमारा स्वामी (घर का भरण–पोषण करने वाला) अनैतिक कार्यों चोरी, झूठ, रिश्वत आदि के द्वारा हमारा भरण–पोषण कर रहा है तो उनका कर्त्तव्य है कि वे उसको उस कार्य से रोकें, अपना विरोध दर्शावें, उस कार्य को समर्थन न करें। यदि वे ऐसा करते हैं, तभी वे दोष से बचेंगे। यदि नहीं तो मुख्य स्वामी के बुरे कर्मों का समर्थन करने से वे भी कुछ अंश में पाप के भागी होंगे और ईश्वर से दण्ड प्राप्त करेंगे।

प्रश्न– हमारे से छोटे जीव–जन्तु जैसे कीड़े–मकोड़े या मच्छर अनजाने में मर जाते हैं। वो हम नहीं करना चाहते फिर भी हो जाता है, तो उसके लिए हमको क्या करना चाहिए और क्या इस कर्म की हमको सजा मिलेगी?

अपनी ओर से जहां तक संभव हो, सावधानी का प्रयोग करें। अगर आप सड़क पर चल रहे हैं, फर्श पर चल रहे हैं, तो आप घर पर तो देख सकते हैं। पांव बचाकर चलें, चींटी न मरे, इतनी सावधानी हम घर पर तो रख सकते हैं। और आप कार में चल रहे हैं तो कार में तो नहीं ध्यान रख सकते कि कोई चींटी आ रही है या मेंढ़क आ रहा है, वो तो पिस ही जाएगा। चलो वो मजबूरी की बात है। जहां हम नहीं बचा सकते, वो अलग बात है, पर जहां हम बचा सकते हैं, जहां प्राणियों को बिना मारे काम चल सकता है, वहां न मारें। प्राणियों की रक्षा करें।

अगर एकदम से पांव के नीचे या कार के नीचे, बाइक के नीचे या जैसे भी, मजबूरी में कहीं कोई मर जाता है। अनजाने में हो गया, न चाहते हुए भी हो गया, अन्याय हो गया, पाप हो गया, उसका हमको दण्ड तो मिलेगा। इतना अन्तर जरूर है कि जानबूझकर गलती करेंगे तो दण्ड अधिक मिलेगा। अनजाने में करेंगे तो दण्ड कम मिलेगा। हमारे हाथ से हुआ, इसलिए हमको दण्ड मिलेगा। तो सावधानी रखें, जहां तक हो सके, वहां तक बचें।

यह भी ध्यान रखें कि रोगी, गरीब, अनाथ, दुखी व्यक्तियों को तन–मन–धन से सहायता करके उनके दुख को दूर करने का प्रयास करना ईश्वर के न्याय में हस्तक्षेप नहीं है। क्योंकि ऐसे व्यक्तियों की सहायता करके उनके दुखों को दूर करना परमात्मा ने वेदों में प्रत्येक समर्थ व्यक्ति का कर्त्तव्य बताया है। ईश्वर ने जो अंधे–लूले, लंगड़े, निर्धन, अज्ञानी बनाए हैं, उनका दंड उनको ऐसा बनाने तक ही सीमित है। लंगड़े व्यक्ति की चिकित्सा करके उसे ठीक करना परमात्मा की फल व्यवस्था में हस्तक्षेप नहीं अपितु पुण्य का अर्जन है।

वृक्ष आदि को काटने से हत्या का पाप नहीं लगता है। यदि अच्छे हरे–भरे वृक्ष आप फालतू में काटते हैं तो दोष लगेगा। अगर आपको लकड़ी चाहिये जलाने के लिये, फर्नीचर के लिये तो जो पुराने–जर्जर पेड़ हैं, बूढ़े–कमजोर मरने की तैयारी में हैं, उनकी लकड़ी काट लो। दस पेड़ काटो, पचास नये लगाओ ताकि पर्यावरण को नुकसान न हो। पर्यावरण संतुलन ठीक बना रहे, और हमारा काम भी चलता रहे।

जानबूझकर गलती करने वाले को अधिक दण्ड

कर्मफल का एक नियम यह है कि **अगर अनजाने में गलती की जाएगी तो दण्ड कम मिलेगा और जानबूझकर गलती की जाएगी तो दण्ड ज्यादा मिलेगा।** आप कम जानते हैं, मैं आपसे अधिक जानता हूं। आप झूठ बोलेंगे तो आपको थोड़ा दण्ड मिलेगा। मैं झूठ बोलूंगा तो मुझे आपसे कई गुना दण्ड मिलेगा। इसलिए मैं तो सच्ची बात पढ़ाऊंगा, वेद की बात पढ़ाऊंगा। तो वेद में लिखा है कि जो गलती करेगा, उसको दण्ड मिलेगा।

जिसने हम पर अन्याय किया, चाहे माता की भूल से हुआ, चाहे पिता की भूल से हुआ, चाहे गुरू, टीचर, पड़ोसी कोई भी, चोर–डाकू आदि ने जितना दुःख हमको दिया, उतना उसका अपराध है। उस अपराध का उसको दंड मिलेगा।

अन्याय का दण्ड चाहे समाज दे, राजा दे, सरकार दे, ईश्वर दे, जो भी दे, कोई न कोई उसको दंड देगा। अपराध का दंड समाज ने नहीं दिया, राजा ने नहीं दिया तो अंत में ईश्वर जरूर देगा। वो नहीं छोड़ने वाला। हम किसी पर अन्याय करेंगे तो ईश्वर हमको दंड देगा। कोई दूसरा हम पर अन्याय करेगा तो ईश्वर उसको दंड देगा। अन्यायकारी को दंड मिलेगा।

मनुष्य अन्य प्राणियों की तुलना में अधिक सुखी है

मनुष्य क्यों ज्यादा सुखी है? उसके पास भगवान की दी हुई स्पेशल चार चीजें हैं। ये चार फैसेलिटीज हैं, जो और प्राणियों को लगभग नहीं दी गईं हैं–

सबसे पहली सुविधा है–बुद्धि। जैसी बुद्धि मनुष्य के पास है, वैसी किसी और प्राणी के पास नहीं है। आप एम.एस.सी. करते हैं, एम.टेक. करते हैं, सी.ए. करते हैं, एम.बी.ए. करते हैं, पी.एच.डी. करते हैं। अच्छे–अच्छे स्कॉलर बन जाते हैं, ऊँची–ऊँची डिग्रियाँ प्राप्त करते हैं। आईपीएस–आईएएस बन जाते हैं। अच्छी पोस्ट पर बैठते हैं। खूब अच्छा खाते–पीते हैं। खूब एयरकंडीशन में मजे से सोते हैं। कितना सुख भोगते हैं।

किसी घोड़े ने आज तक पी.एच.डी. की है? किसी कुत्ते ने आज तक टेलीफोन बनाया है? किसी अन्य प्राणी ने आज तक बुद्धि का कोई विकास नहीं किया। वे करोड़ों साल से ऐसे के ऐसे ही जी रहे हैं। मनुष्य के पास इतनी अच्छी बुद्धि है कि इससे वो बहुत अच्छी प्रगति और विकास करता है। खूब पढ़–लिख के बुद्धि का विकास कर सकता है। अच्छे काम करके सुख से जी सकता है।

सुख का कारण है–बुद्धि। जिस मनुष्य की बुद्धि अच्छी और अधिक होती है, वो सुखी रहता है। जिसकी बुद्धि खराब और कम होती है, वो दुःखी रहता है। इसी प्रकार से बाकी प्राणियों में तो बुद्धि कम है, इसलिए वे उतने सुखी नहीं हैं। उनकी बहुत सी समस्याएं हैं।

ऐसा नहीं कि पशु योनि में बुद्धि नहीं है। **मनुष्यों के पास जैसी जितनी बुद्धि है और पढ़–लिखकर मनुष्य जितनी बुद्धि का विकास कर सकते हैं, ऐसी बुद्धि अन्य प्राणियों के पास नहीं है** और वो इतना विकास नहीं कर सकते, जितना कि मनुष्य कर सकता है। इसका अर्थ हुआ कि **पशु–पक्षियों, कीड़ों–मकोड़ों में भी बुद्धि है, पर कम है।** इतनी कम बुद्धि के आधार पर वो अपना जीवन चला लेते हैं। पशु–पक्षियों के छोटे–छोटे बच्चे होते हैं, वे उनके प्रति राग रखते हैं, उनको खिलाते–पिलाते हैं, उनकी रक्षा भी करते हैं, अपनी रक्षा भी करते हैं। इतना काम वो कर सकते हैं। इतनी बुद्धि उनमें है।

दूसरी सुविधा है– बोलने के लिए भाषा। जैसी भाषा हम मनुष्यों की है, क्या ऐसी भाषा और किसी प्राणी के पास है? हमारा सिर दुःखता है तो हम डॉक्टर साहब से कहते हैं– डॉक्टर साहब, हमारे सिर में दर्द हो गया है, कुछ कीजिए। वो हमारी भाषा सुन के ही समझ लेते हैं कि इसको क्या समस्या है। और एक गोली देते हैं तो दर्द दो घंटे में ठीक हो जाता है। कुत्ते का सिर दर्द होता है तो क्या वो बोल सकता है? गाय का पेट दर्द होता है तो क्या गाय बोल सकती है? वो बेचारी दुःखी, परेशान होती रहेगी। मनुष्य अपना भी सुख बढ़ा लेता है और दूसरों का भी। दूसरे प्राणियों के पास भाषा की सुविधा नहीं है। यह सुविधा नहीं होने से वे सारे काम नहीं कर पाते हैं।

तीसरी सुविधा– कर्म करने के लिए दो हाथ मनुष्यों के पास हैं, दो–चार प्राणियों के पास और हैं, ऐसे हाथ बंदर, वनमानुष, चिंपैंजी और गोरिल्ला के पास हैं। बाकियों के तो ऐसे हाथ नहीं हैं। इन हाथों की सुविधा से हम सारा काम अच्छी तरह से खुद कर लेते हैं। नहाना–धोना, कपड़े सुखाना–पहनना, कुंडी लगाना, ताला लगाना, कार चलाना, हवाई जहाज चलाना क्या–क्या कर लेते हैं हम। बेचारे दूसरे प्राणी खड़े हैं। गौशाला की कुंडी लगी हुई है, तो अब बेचारी गाय कुंडी खोल कर अंदर जा नहीं सकती। आदमी के पास हाथ हैं। फट से कुंडी खोलेगा, अंदर जाएगा, मजे में एसी लगाएगा और सो जाएगा। मनुष्यों के पास कितनी अच्छी सुविधा है हाथ की और दूसरे प्राणियों के पास ऐसी सुविधा नहीं है।

बंदर के पास, वनमानुष के पास हाथ तो जरूर हैं पर उनके पास बुद्धि नहीं है। लाखों साल से वे पेड़ों पर ही कूद रहे हैं। आज तक बंदर ने अपना घर नहीं बनाया और मनुष्यों ने कितने 100–100 मंजिल के मकान बना लिए। इस हाथ की सुविधा से क्या–क्या चीजें बना लीं। **बंदर आदि के पास हाथ होते हुए भी न जैसे ही हैं। वे तो बुद्धि के अभाव में उसका लाभ नहीं उठा पाते।**

अब चौथी सुविधा है– कर्म करने की स्वतंत्रता। कर्मफल की यह चौथी सुविधा है। **जितनी स्वतंत्रता (100 प्रतिशत) मनुष्यों के पास है, उतनी किसी और प्राणी के पास नहीं है** और किसी प्राणी को नहीं है। हमारी 24 घंटे की स्वतंत्रता है। हम जब इच्छा हो तब खा–पी लें, घूम लें, सो जाएं, सैर कर आएं, कुछ भी कर लें। मान लो कि किसी कुत्ते की इच्छा हो रही हो जलेबी खाने की। पर क्या वो जलेबी खरीद के खा सकता है? नहीं खा सकता। पानीपत में एक जगह एक व्यक्ति रेहड़ी में जलेबी बना रहा था। और एक ग्राहक आया, उसने जलेबी खाई। पास में एक कुत्ता बैठा था तो कुत्ते की भी इच्छा हुई कि कुछ मैं भी खा लूं, भूख तो उसको भी लग रही है। पर उसके पास पैसे तो थे नहीं, वो खरीद तो सकता नहीं था। पर इच्छा तो उसकी भी हो रही थी। मैंने अपनी आंख से देखा। ग्राहक को जलेबी खाते–खाते देखकर कुत्ते की इच्छा हुई तो कुत्ते ने अपनी गर्दन बढ़ाई आगे, भाई थोड़ी मुझे भी दे दो। तो वो ग्राहक उसका भाव समझ गया, उसने उस कुत्ते को भी एक–दो जलेबी खिला दी।

यह कर्म करने की जो स्वतंत्रता है, यह सिर्फ मनुष्यों के पास है। आपकी इच्छा है, आप अहमदाबाद, बड़ोदरा, मुंबई चले जाइए, विदेश चले जाइए, कहीं भी, कभी भी घूम आइए। पर अहमदाबाद के एक कुत्ते की इच्छा हो कि वह बड़ोदरा घूम आए तो बड़ोदरा तो बहुत दूर की बात है, अहमदाबाद की एक कॉलोनी से दूसरी कॉलोनी तक भी नहीं पहुंच सकेगा, रास्ते में, बीच में, दूसरे

कुत्ते फाड़ खाएंगे उसको। कुत्ते की, उसकी स्वतंत्रता कहां है? वह बेचारा अपनी इच्छानुसार कर्म नहीं कर सकता। खा नहीं सकता, खरीद नहीं सकता। उसकी कोई भी सुरक्षा नहीं है। उसे तो 24 घंटे खतरा है, कब हमला हो जाए, पता नहीं?

तो ये चार सुविधाएं भगवान ने मनुष्यों को बहुत अच्छी दीं। हमें इसका सदुपयोग करना चाहिए। अच्छे–अच्छे काम करने चाहिए। अच्छे काम करेंगे, अच्छा फल मिलेगा। यदि हम सकाम कर्म करते हैं तो उसका फल जाति, आयु, भोग के रूप में मिलेगा। आइए, सर्वप्रथम ''जाति'' को समझते हैं :–

अगले जन्म में मिलने वाला पहला फल जाति है

जाति का मतलब है–शरीर। **मनुष्य का शरीर, गाय का शरीर, घोड़े, कुत्ते, बिल्ली, हाथी, बंदर, मच्छर, मक्खी, सुअर, वृक्ष आदि किसी का भी शरीर, यह है जाति।** जाति एक बार जन्म से मिल गयी, तो मृत्युपर्यंत वो बीच में नहीं बदलती। जाति तो निश्चित है। भगवान ने हमारे कर्मानुसार हमको जन्म से जो जाति दे दी, वो जीवन भर रहेगी। मनुष्य का शरीर मिला, तो पूरे जीवन भर जीते जी मनुष्य ही रहेगा, बीच में उसको तोड़–मरोड़कर कुत्ता, बिल्ली नहीं बना सकते। अगले जन्म में जाति (शरीर) बदल सकती है, बीच में जाति नहीं बदलेगी। आयु और भोग अवश्य बदल सकते हैं।

शरीर के पापों का दण्ड

शास्त्रों में लिखा है कि शरीर से जो कर्म किये जाते हैं, उनका फल शरीर से मिलेगा। वाणी से किये गये कर्मों का फल वाणी से भोगना होगा और मन से किये कर्मों का फल मन से भोगा जायेगा। **शरीर से पाप करेंगे तो शरीर से दंड भोगना पड़ेगा, वाणी के पाप करेंगे, तो वाणी से दंड भोगना पड़ेगा, मन से पाप करेंगे तो मन से दण्ड भोगना पड़ेगा।** दण्ड भुगतने का एक मोटा–मोटा यह सिद्धांत है।

जैसे मान लिया कि शरीर से किसी ने चोरी की, हत्यायें की, अपहरण किया, डकैती की, लूटपाट की, दूसरे का धन छीन लिया, इस तरह से जो शारीरिक अपराध करेंगे, तो उसका फल शरीर से भोगना होगा। जैसे–जैसे उसके कर्म होंगे, उस हिसाब से उसको वृक्ष आदि योनियों में जाना पड़ेगा अर्थात आम का पेड़, बबूल का पेड़, नीम का पेड़ और बरगद का पेड़ बनना पड़ेगा। ये शरीर से किये गए पापों का फल है।

ऋषियों ने लिखा है, जो शरीर से पाप करता है, शरीर से चोरी करता है, व्याभिचार करता है, हत्यायें करता है, अपहरण करता है, ऐसे बुरे–बुरे काम करता है तो उसको ईश्वर वृक्ष की योनि में जन्म देता है। **शरीर से अपराध किया तो वृक्ष योनि में जाओ।** खड़े रहो, पचास साल, सौ साल, दो सौ साल। जितना–जितना कर्म, उतना–उतना फल। थोड़ा अपराध किया तो थोड़ा फल बना देंगे, आत्मा को गेहूँ के पौधे में डाल देंगे तो दो चार महीने में जान छूट जायेगी। ज्यादा अपराध किया तो आम का पेड़ बना देंगे, खड़े रहो पचास साल तक। और ज्यादा अपराध किया तो बरगद का पेड़ बना देंगे, खड़े रहो दो सौ साल तक। कर्म के हिसाब से, उसको वैसा–वैसा फल मिलता है।

इन वृक्ष और वनस्पति में भी आत्मा है। ये भी अपने कर्मों का फल भोग रहे हैं। वृक्ष सांस लेता है, वृक्ष जीवित रहता है, और मिट्टी, पानी खुराक भी लेता है, धूप भी लेता है। और फिर उसके बाद जैसे मनुष्यों से आगे मनुष्य पैदा होते हैं, गाय–घोड़े से गाय–घोड़े पैदा होते हैं, वैसे ही वृक्षों, वनस्पतियों से आगे वृक्ष भी पैदा होते हैं। उनकी पीढ़ी (जेनेरेशन) भी आगे चलती है। संतति–उत्पत्ति भी होती है। जैसे आलू से आलू पैदा होता है, गेहूँ से गेहूँ होता है। ये सारे लक्षण जीवन को सिद्ध करते हैं। जैसे मनुष्य जीवित रहता है, सांस लेता है, वैसे ही वनस्पतियाँ भी सांस लेती हैं, अतः उनमें भी जीवन होता है। इनमें आत्मा होती है, ऐसा ही मानना चाहिये।

वस्तुतः वो भी पूर्वकृत कर्मों का फल भोग रहे हैं। कर्मफल तो सुख–दुःख का अनुभव करना है। वृक्ष, पेड़–पौधे, वनस्पति आदि भोग योनि हैं। इनके अन्दर इच्छा, द्वेष, प्रयत्न आदि सारे गुण होते हैं। लेकिन वे थोड़ी बेहोशी की अवस्था में हैं, नशे में हैं, पर आत्मा तो है न उनमें। अगर उनमें कुछ भी कष्ट न माना जाये, जीरो कष्ट मान लें, फिर वो व्यवस्था फेल हो जायेगी, क्योंकि ये कर्मफल नहीं हुआ। **वृक्षादि सुख–दुःख से युक्त हैं।** वे आंतरिक सुख–दुःख भोगते हैं, लेकिन बाहर के स्थूल सुख–दुःख नहीं भोगते। जैसे कुत्ते को डंडा मारो, तो वह चिल्लाता है और भागकर अपनी जान बचाने की कोशिश करता है। वृक्ष को डंडा मारो, तो वह चिल्लायेगा नहीं, भागेगा नहीं, जान बचाने की कोशिश नहीं करेगा। इस प्रकार पशुओं और वृक्षों की बाहरी क्रियाओं में तो अंतर हैं, लेकिन अंदर से बेचारों (वृक्षों) को वहां खड़ा करके रखा गया है। वृक्ष मनुष्यादि प्राणियों के समान भाग नहीं सकता, चल नहीं सकता, कुछ कर्म नहीं कर सकता, आँख नहीं खोल सकता, सुन नहीं सकता, देख नहीं सकता। यह सारा दुःख तो उसको आंतरिक रूप से भोगना ही पड़ेगा। वो ईश्वर की दण्ड व्यवस्था है। इसलिए वो ही जानें।

वाणी के पापों का दण्ड

शरीर से पाप करेंगे तो वृक्ष आदि योनि में जायेंगे, **वाणी के पाप झूठ, छल, कपट, चोरी, बेईमानी करेंगे तो फिर पशु–पक्षी, हिरण, घोड़ा, गधा, बकरी, सांप, बिच्छु, बैल इस तरह की योनियों में जायेंगे।** झूठ बोलना, छल–कपट करना, धोखा देना, चालाकी करना, हेरा–फेरी करना, व्यंग कसना, टोंट मारना, खिल्ली उड़ाना, ये सारे वाणी के बुरे कर्म हैं। ऐसे करेंगे तो उसको, गाय, घोड़ा, कुत्ता, बिल्ली, सुअर, पशु–पक्षी योनियों में जाना पड़ेगा। ये वाणी के पापों का दंड है।

मन के पापों का दण्ड

जो मानसिक पाप करेंगे, जैसे कि, व्यक्ति मन में बुरा–बुरा सोचता है कि हे भगवान! मेरे पड़ोसी की टांग टूट जाये तो अच्छा है, इसके मकान में आग लगे तो बढ़िया है, इसकी दुकान जल जाये तो अच्छा है, मेरे ग्राहक बढ़ जायेंगे, इसके कम हो जायेंगे, मैं मजे करूंगा और यह भूखा रहेगा। ऐसे–ऐसे जो मन में बुरी–बुरी बात सोचता है, बुरी–बुरी योजनायें बनाता है, तो उसका दंड उसको मन से भोगना पड़ेगा। मन से दंड कैसे होगा?

मनुस्मृति की कक्षा में हम पढ़ते हैं कि, यदि मन में हम पाप करते हैं, बुरा–बुरा सोचते हैं, **लोगों के लिये गलत–गलत इच्छायें, कामनायें रखते हैं तो उसका दंड यह मिलता है कि बिल्कुल कोई निम्न परिवार में, कोई गरीब, शूद्र, चांडाल के घर में जन्म लेगा।**

अगले जन्म में उसको मनुष्य का जन्म मिल जायेगा, पर कोई शूद्र चांडाल, भिखारी ऐसे, घटिया स्तर के परिवार में उसको जन्म मिलेगा। अगर शूद्र, चांडाल के घर में जन्म ले लिया तो वहां गरीब मजदूर परिवार में क्या होगा?

जो बेचारे गरीब मजदूर होते हैं, बर्तन मांजने, झाड़ू पोंछा, मजदूरी करने का काम करते हैं, ऐसे–ऐसे काम को करने के लिए किसी सेठ के यहां जाते हैं। उनके छोटे–छोटे बच्चे होते हैं, वो भी मां के साथ चले जाते हैं। वो देखते हैं कि यहां मुझे कोई घुसने नहीं देता, मुझे कोई अपने पास बैठाने को राजी नहीं, मुझसे कोई बात करने को राजी नहीं, तो बेचारा मन–मन में जलता रहता है, दुःखी होता रहता है कि ये सब मौज कर रहे हैं, ये अच्छा–अच्छा भोजन खा रहे हैं, मुझे नहीं मिल रहा। ये मुझे बुलाते नहीं, मुझे पार्टी में अंदर घुसने नहीं देते, मुझे खाने को नहीं देते। वो बेचारा मन ही मन रोता रहेगा, वो मन–मन में जलता रहेगा,

दुःखी होता रहेगा। यह उसके कर्मों का दंड है। **उसने मन से पाप किया, अब मन से दुःखी होता रहेगा।** इस तरह से मन से वो बेचारा दुःखी होकर जलता भुनता रहता है। यह उसके मानसिक पापों का दण्ड है। वो सेठ जो पार्टी मनायेंगे, खायेंगे, पियेंगे, डांस करेंगे और वो मजदूर का बच्चा बेचारा उनके घर के दरवाजे पर ही खड़ा यूँ ही देखता रहेगा।

यह मोटा–मोटा सिद्धांत ऋषियों ने बता रखा है। हमको इस तरह के काम नहीं करना चाहिये, जिससे हमको दण्ड भोगना पड़े।

प्रश्न– आजकल बच्चे बहुत स्मार्ट (तेज बुद्धि वाले) उत्पन्न हो रहे हैं? क्या यह भी पूर्व जन्म का फल माना जाये?

जी हां, यह भी कर्मों का फल है। उनके अभिभावक (पेरेंट्स) भी तो स्मार्ट हैं इसलिये बच्चे भी स्मार्ट हैं। पर एक बात ध्यान दीजियेगा कि आजकल जो बच्चे स्मार्ट पैदा हो रहे हैं, उनको नियंत्रित (कंट्रोल) करने की माता–पिता की जिम्मेदारी भी बढ़ गई हैं। उन्हें अपनी जिम्मेदारी पूरी निभानी चाहिये।

अगर आप अपने कुत्ते को सड़क पर घुमाने ले जा रहे हैं, और आपके कुत्ते ने किसी नागरिक को काट लिया तो मुकद्मा कुत्ते पर चलेगा या आपके ऊपर चलेगा? जिसका कुत्ता है, उसके मालिक पर चलेगा न। उस कुत्ते को कंट्रोल करने की जिम्मेदारी उसके मालिक की है। इसी तरह से आपका बच्चा है। अगर वो नादान किसी को तंग करता है तो किसकी जिम्मेदारी, किसको दंड मिलेगा, बोलिये? माता–पिता की जिम्मेदारी है, अपनी जिम्मेदारी समझ लीजिये। अगर आपने बच्चे बिगाड़ दिये और आपके बिगड़े हुये बच्चों ने दूसरों को परेशान किया तो उसमें उसको तो दण्ड मिलेगा ही, आपको भी दंड मिलेगा। इसीलिये अच्छे बच्चे पैदा करो, उन पर अच्छा कंट्रोल रखो, उनको अच्छी बातें सिखाओ, उनका चौबीस घंटे का टाइम–टेबल बनाओ। माता–पिता ऐसे करेंगे तो उनके बच्चे अच्छे बनेंगे और वो देश–दुनिया को सुख देंगे। **दंड लगाओ, दंड के बिना कोई सुधरता नहीं।** तो अपने बच्चों पर इस तरह के कानून लगायें। उन पर ये नियम जबरदस्ती लागू करें।

क्या करें कि अगला जन्म अच्छा हो

एक व्यक्ति ने पूछा कि हमें शूद्र के घर में जन्म नहीं चाहिये। अच्छे ऊंचे परिवार में जन्म चाहिये। माता–पिता विद्वान हों, पढ़े–लिखे हों, धार्मिक हों, ईमानदार हों, सच्चरित्र हों, देश भक्त हों, ईश्वर भक्त हों, धनवान भी हों, ऐसे घर में हमें जन्म चाहिये तो उसके लिये क्या करना होगा?

उसके लिये ऋषियों ने उपाय लिखा है। उसके लिए यहाँ कर्मफल के तीन नियम समझने पड़ेंगे :–

(1) यदि कोई व्यक्ति अपने पूरे जीवन में पचास प्रतिशत अच्छे कर्म करे और पचास प्रतिशत बुरे, समान मात्रा, बराबर–बराबर (ईक्वल) से अच्छे–बुरे काम करे तो उसको अगला जन्म एक सामान्य परिवार में अर्थात शूद्र परिवार में, मजदूर, चपरासी, पट्टे वाला, ऐसे घर में उसको जन्म मिल जायेगा। यह पहला नियम है।

(2) यदि हम अपने जीवन में अच्छे कर्म पचास परसेंट से अधिक करेंगे, 55, 60, 65, 70, 75, 80 परसेंट अच्छे काम करेंगे और 10–20 परसेंट बुरे काम करेंगे, तब ऊँचे घर में जन्म मिलेगा, अच्छे–अच्छे विद्वान माता–पिता, पढ़े–लिखे, धार्मिक, ईमानदार, चरित्रवान, देशभक्त, धनवान परिवार में जन्म मिलेगा। जैसे–जैसे अच्छे कर्मों की परसेंटेज बढ़ती जायेगी, उतना ही ऊँचे–ऊँचे घर में जन्म मिलेगा और 100 परसेंट अच्छे निष्काम काम करेंगे तब तो मोक्ष मिल जायेगा। यह दूसरा नियम है।

(3) यदि बुरे कर्म 50 परसेंट से अधिक कर दिये। मान लीजिये कि सारे जीवन में 55, 60, 65, 70 परसेंट बुरे काम किये और अच्छे किये थोड़े। अब अगला जन्म मनुष्य का नहीं मिलेगा। अब नीचे जाना पड़ेगा। मनुष्य से नीचे गाय, घोड़ा, कौआ, कबूतर, चूहा, बिल्ली, मक्खी, मच्छर बनना पड़ेगा। और हो सकता है कि कहीं ऐसे कर्म फल में भी नम्बर आ जाये, ऐसी योनि में जो हमने आस–पास में कहीं देखी ही न हो। कैसे अजीब–अजीब प्राणी जो कभी हमारे अड़ोस–पड़ोस में देखे भी नहीं, सुने भी नहीं, कहीं चिड़िया घर में भी नहीं मिलते, मगर डिस्कवरी चैनल में देखने को मिलते हैं। वो बर्फ के सफेद–सफेद रंग के भालू, रीछ। यह तीसरा नियम है। कीड़े, पशु–पक्षी, वृक्ष योनि में रहना पड़ेगा।

कब तक रहना पड़ेगा? जब तक पहला नियम लागू नहीं होगा। पचास–पचास, अच्छे बुरे कर्म जब तक बराबर नहीं हो जायें, तब तक हमको नीचे पशु–पक्षी, कीड़े–मकोड़े में रहना पड़ेगा। उदाहरण के लिये मान लीजिये कि किसी व्यक्ति ने पूरे जीवन में 60 परसेंट पाप किये, और पुण्य 40 परसेंट किए। अब 60 और 40 में 20 का फर्क है। 60 परसेंट पाप, 40 परसेंट पुण्य, तो 60 में से 20 परसेंट पाप, पुण्य की तुलना में अधिक हुये। तो तीसरा नियम कहता है कि इस 20 का दंड भोगने के लिये कुत्ता, बिल्ली, सुअर, मक्खी, मच्छर, आम, बरगद बनना पड़ेगा। दो–चार पांच–सात दस–बीस योनियां, पता नहीं कितनी योनियों में ईश्वर भेजेगा।

ईश्वर को मालूम है, वो ईश्वर का हिसाब उसको पता है, हमें नहीं मालूम। पर मोटा नियम यह मालूम है कि जब तक पाप–पुण्य का बैलेंस बराबर नहीं हो जायेगा, तब तक लौट के मनुष्य नहीं बन पायेगा। मतलब, 60 में से 20 परसेंट पाप का दंड भोगने के लिये सांप, बिच्छु, कुत्ता, गधा, भेड़, बकरी बने और जब वो 20 का दंड पूरा हो गया तो अब एकाउंट बैलेंस बराबर अर्थात ईक्वल हो जायेगा। 40 पाप, 40 पुण्य तो जैसे ईक्वल हो जायेगा तो फिर पहला नियम लागू होगा, फिर लौट के कोई मजदूर, चपरासी, शूद्र, पट्टे वाले के घर में हमको वापस जन्म मिल जायेगा। फिर यहां से दोबारा चांस अर्थात अवसर मिलेगा। अब अच्छे काम करो, अच्छे कर्मों की संख्या बढ़ाओ और बढ़ाओ तो जैसे–जैसे हम अच्छे कर्मों की परसेंटेज बढ़ाते जायेंगे, वैसे–वैसे हमारा अगला जन्म सुधरता जायेगा, अच्छा–अच्छा ऊँचा होता जायेगा।

इसको बढ़ाते–बढ़ाते 100 परसेंट तक पहुँचना है। 100 परसेंट अच्छे काम होना और बुरा काम एक भी नहीं। और अच्छे वाले भी कौन से? निष्काम कर्म। जब तक 100 परसेंट अच्छे काम नहीं करेंगे और निष्काम कर्म नहीं करेंगे, तब तक मोक्ष नहीं होगा। तब तक क्या होगा? जाति, आयु, भोग का चक्कर चलता रहेगा। बार–बार अगला जन्म, बार–बार अगला जन्म। ये सारी दुनिया इसी चक्कर में तो घूम रही है।

आपने वो खेला है न सांप–सीढ़ी का खेल? मनका (डायस) फेंकते हैं, पांच नम्बर आया, छः पर खड़े थे, तो पांच घर आगे चले तो, ग्यारह पे पहुंचे। वहां पर सीढ़ी लग गई। सीधे बत्तीस परं पहुँच गये। फिर आगे मनका फेंका, सात नम्बर आया, तो उन्तालीस पे पहुँचे। वहां एक और सीढ़ी लग गई, तेहत्तर पे पहुंचे। फिर अगला मनका फेंका, तीन नम्बर आया और छियत्तर पे पहुँचे। वहां सांप ने काट लिया तो छियत्तर से वापस तेरह पर आ गये। तो कभी सांप काटता है, तो कभी सीढ़ी लग जाती है। जब सीढ़ी लग जाती है, तो ऊपर उठ जाते हैं और सांप काटता है तो नीचे आ जाते हैं।

हमारा जीवन भी ऐसा ही है। जब हम अच्छे काम करते हैं, अच्छे काम अधिक करते हैं तो हमको सीढ़ी लग जाती है और भगवान फटाफट अगला जन्म अच्छा दे देता है, ऊँचे परिवार में दे देता है। जब ऊँचे परिवार में जाते हैं तो फिर अकड़–अभिमान आ जाता है, और अभिमान के कारण व्यक्ति झूठ बोलता है, चोरी करता है, अन्याय करता है, धोखा देता है और फिर सांप काट लेता है तो फिर वो नीचे आ जाता है। बस ये दुनिया ऐसे चक्कर में चलती रहती है। कभी ऊँचा, कभी नीचा, कभी अगला जन्म अच्छा, कभी खराब और इस चक्कर से सैकड़ों जन्मों तक भी बाहर नहीं निकल पाते

लोग। इससे बाहर निकलने का रास्ता, ये कर्मफल सिद्धांत हमको सिखाता है। 100 परसेंट अच्छे काम करो, निष्काम कर्म करो, मोक्ष प्राप्त करो, इस जन्म–मरण के चक्कर से बाहर निकलो।

हमें मोक्ष का लक्ष्य बनाना चाहिये। हमारे जीवन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष है। ये बार–बार जन्म लेकर तो, फिर वही बात है, फिर अगला जन्म हुआ तो फिर अन्याय होगा, फिर हमको दुःख भोगना पड़ेगा। क्या हम दुःखों से छूटना चाहते हैं? हां। क्या संसार में रहकर ऐसा संभव है, कि एक भी दुःख न आये? संभव नहीं है। जितनी बार जन्म लेंगे, उतनी बार दुःख भोगना पड़ेगा।

एक व्यक्ति ने पूछा कि हमारे पास सब कुछ है, खाना है, पीना है, मोटर गाड़ी, सोना–चांदी, नौकर–चाकर, बंगला सब कुछ तो है तो हमें क्या दुःख है? मैंने कहा, आपने कितनी पढ़ाई की। उसने कहा– हमनें पढ़ाई भी अच्छी की है, पी.एच.डी. कर रखी है। मैंने पूछा– किस सब्जेक्ट में? वे बोले–फिजिक्स में। मैंने पूछा– आप कितने साल जियेंगे? वे बोले– 80 साल, 100 साल। तो मैंने पूछा– उसके बाद क्या होगा? वे बोले– फिर अगला जन्म होगा। तो मैंने पूछा– आप अगले जन्म में फिर स्कूल जायेंगे या नहीं, वापस एल.के.जी. में बैठेंगे या नहीं? जाना पड़ेगा न। एक आदमी मुश्किल से पढ़–पढ़ के पी.एच.डी. तक पहुँचा और थोड़े दिन में उसको वापस फिर एल.के.जी. में बिठा देंगे, बताओ समस्या है या नहीं है? यह समस्या सबको आने वाली है। अगर इस समस्या से बचना हो तो एक ही रास्ता है, जन्म लेना बंद कर दो। नहीं तो फिर एल.के.जी. में बैठकर दोबारा ए, बी. सी. डी., क, ख. ग, घ सीखना पड़ेगा। जब तक जन्म लेंगे, ये सारे दुःख भोगने पड़ेंगे, इसलिये वेदों ने, ऋषियों ने बताया कि हमारे जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष है। इसलिए अच्छे कर्मों का परसेंटेज बढ़ाईये और जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी 100 परसेंट तक पहुँचिये और इस जन्म मरण के चक्कर से छूट जाइये। तब ही हम दुखों से पार होंगे और कोई चारा नहीं है, और दूसरा कोई विकल्प नहीं है। तो ये है, कर्मों का सिद्धांत। अच्छे कर्म किये पचास परसेंट से ज्यादा तो मनुष्य का जन्म।

किसने देखा है अगला जन्म

अब जब हम कहते हैं कि, भाई आप अच्छे काम करो तो भगवान अगले जन्म में मनुष्य बनाएगा और बुरे काम करोगे तो कुत्ता, बिल्ली, सांप बनाएगा तो छूटते ही लोग सवाल करते हैं– साहब, किसने देखा है अगला जन्म? मैं कॉलेज–यूनिवर्सिटी में जाता हूँ तो विद्यार्थियों से बात करता हूँ। 100 विद्यार्थी बैठे हैं, मैं पूछता हूँ कि आप में से कितने लोग हैं, जो ये मानते हैं कि मरने के बाद

दूसरा जन्म होगा? तो 100 में से 5 या 10 लोगों के हाथ खड़े होते हैं। फिर मैं पूछता हूँ कि जितने लोग इसको नहीं मानते कि मरने के बाद कोई जन्म नहीं होगा, वो हाथ ऊँचा करें तो 40–50 हाथ ऊँचे होते हैं। फिर पूछता हूँ कि जिनको संशय है, समझ में नहीं आया कि अगला जन्म होगा या नहीं होगा, वो हाथ ऊँचा करें? तो 30–40 हाथ फिर ऊँचे खड़े होते हैं।

इसका सार निकला कि 5–10 प्रतिशत विद्यार्थियों को विश्वास है कि मरने के बाद दूसरा जन्म होगा। जितने लोगों को ये विश्वास है कि मरने के बाद दूसरा जन्म होगा, हो सकता है कि वो लोग कुछ अच्छे काम करेंगे, उनसे कुछ ठीक काम होंगे। क्योंकि उनके समझ में आया कि अगर अगला जन्म हुआ तो अगला भी मनुष्य का होना चाहिए। कहीं और नीचे चले गए तो बड़ी मुश्किल होगी। पशु पक्षी में चले गए तो मुश्किल होगी। अगला जन्म होता है तो कम से कम मनुष्य का तो मिलना चाहिए। इससे नीचे नहीं जाना चाहिए।

एक बात और कि, यह भगवान की बड़ी अच्छी व्यवस्था है कि हम पिछले जन्म की बातें भूल जाते हैं, इसलिए जी रहे है। एक ही जन्म में आदमी इतना परेशान है कि वह दुःखी होकर आत्महत्या कर लेता है। और अगर व्यक्ति को पिछले 10–20 जन्मों के दुःख और याद आ जाएं, तो बताओ वो कैसे जिएगा? वह तो पिछले जन्म के दुःखों को देख–देख के वैसे ही मर जाएगा या दूसरों को मारना शुरू कर देगा।

जिनको इस विषय में संशय है, उन लोगों से मैं छोटे–छोटे कुछ प्रश्न पूछता हूँ। पहला प्रश्न– इस समय जो आपको मनुष्य का शरीर मिला, इसके बारे में आप क्या सोचते हैं, क्या ये मुफ्त में मिला है या कोई कर्मों का फल है?

अगला प्रश्न– क्या आप ईश्वर को मानते हैं? यह भी मानते हैं कि ये शरीर आपको ईश्वर ने दिया या किसी और ने? ईश्वर को आप कैसा मानते हैं, ईश्वर के बारे में आपका क्या सिद्धांत है? क्या ईश्वर चुपचाप कहीं आँख बंद करके बैठा रहता है, कुछ काम नहीं करता, दुनिया को देखता नहीं? यह दुनिया किसने बनाई? क्या आपने बनाई?

आकस्मिक (एक्सीडेंटल) जो चीज पैदा होती है, वो व्यवस्थित (सिस्टेमेटिक) नहीं होती। यह दुनिया सिस्टेमेटिक है या एक्सीडेंटल? सिस्टेमेटिक। तो जो सिस्टेमेटिक होती है, वो एक्सीडेंटल नहीं हो सकती। वो अचानक नहीं होती, वो तो अक्ल से, सोच–समझकर बनाई जाती है। आपने स्वीकार किया कि **दुनिया सिस्टेमेटिक है, इसलिए एक्सीडेंटल नहीं है। किसी न किसी ने जरूर बनाई है।**

अब बनाने वाले के तीन विकल्प अर्थात ऑप्शन आपके पास में हैं– एक ऑप्शन है–मटेरियल्स (पदार्थ)। जिसको आप स्कूल–कॉलज में फिजिक्स में, केमेस्ट्री में पढ़ते हैं। हीलियम, ऑक्सीजन, सिलीकॉन, एटम, इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन, एनर्जी ये मटेरियल्स हैं। दूसरे हैं जीवात्मा, आप और हम। और तीसरा है– ईश्वर। तीन ही चीजें हैं, चौथी कोई चीज नहीं है। अब सोचना यह है कि तीन में से दुनिया किसने बनाई?

क्या एनर्जी, एटम, इलेक्ट्रॉन, प्रोटान, इन मटेरियल में कुछ अक्ल है? नहीं है। इनमें से किसी में अक्ल नहीं है। और दुनिया बनाई गई है अक्ल से, बुद्धि से बनाई गई है। **इन मटेरियल्स में से किसी में बुद्धि नहीं है। एक बात तो साफ हो गई कि मटेरियल्स स्वयं सृष्टि को नहीं बना सकता।**

दूसरी बात जीवात्मा की, हममें अक्ल तो है। हम कम्प्यूटर बना सकते हैं, मकान बना सकते हैं, कार बना सकते हैं, हवाई जहाज बना सकते हैं, सैटेलाइट बना सकते हैं, मोबाइल बना सकते हैं। पर क्या हम सूर्य को भी बना सकते हैं? वो अपने बस का नहीं है। क्या हम सोलर सिस्टम को बना सकते हैं? क्या आकाश–गंगा अर्थात् गैलेक्सी को हम बना सकते हैं? ये तो अपने बस का नहीं है।

हम कुछ–कुछ चीजें बना सकते हैं, लेकिन सारी चीजें नहीं बना सकते। हम समुद्र, पर्वत, नदियां नहीं बना सकते। पशु–पक्षियों, मनुष्यों के शरीर नहीं बना सकते। तो फिर इसको किसने बनाया? बस तीसरा बचा एक ईश्वर। उसी ने बनाया है। इनको बनाने वाला ईश्वर है। इससे एक बात तो सामने आ गई कि **ईश्वर ने ये दुनिया बनाई।** और ईश्वर ने सिस्टम से बनाई। अक्ल से बनाई, बुद्धिमत्ता से बनाई।

अब अगला प्रश्न, यदि ईश्वर ने बनाई और बुद्धिमत्ता से बनाई तो उसने संसार में किसी को मनुष्य बनाया? हां। क्या मनुष्य, पशु–पक्षियों के शरीर हम बना सकते हैं? नहीं बना सकते। ईश्वर बना सकता है। तो प्रश्न यह हुआ कि ईश्वर ने मनुष्य–पशु–पक्षी–कीड़े–मकोड़े अलग–अलग तरह के प्राणी बनाए, ये क्यों बनाए, यह न्याय किया या अन्याय किया? न्याय किया। न्याय का नियम क्या है?

क्या कर्म के आधार पर ईश्वर ने फल दिया या बिना कर्म के? यदि कर्म के आधार पर दिया तो सारी बातों का सार क्या निकला? सृष्टि ईश्वर ने बनाई, मनुष्य, पशु, पक्षी, कीड़े, मकोड़े, ये ईश्वर ने बनाए। ईश्वर ने व्यवस्था से बुद्धिमत्ता से बनाए। ईश्वर न्यायकारी है और न्याय का मतलब है, कर्म के आधार

पर फल देना। इन सारी बातों का सार यही निकला कि मनुष्य, पशु, पक्षी जो सारे बनाए गए, ये कर्म के फल से बनाए गए या मुफ्त में बनाए गए? कर्मफल से बनाए गए। बस यहीं तक आना चाहिए था। आप ठीक जगह पहुंच गए। ये प्रश्न का उत्तर मिल गया कि मनुष्य पशु–पक्षी के जो शरीर हमको मिले हैं, ये फ्री में, मुफ्त में नहीं मिले, ये कर्मों का फल है। अब हमारा सवाल।

आपको इस समय जो मनुष्य शरीर मिला है, जिस शरीर में आप–हम बैठे हैं, यह कर्मों का फल मिला है या मुफ्त में मिला है? आपने बोला–''मनुष्य शरीर मिलना कर्मों का फल है।''

कर्मफल का पहला नियम यही था– ''ये शरीर कर्मों का फल है''

न्याय किसे कहते हैं? कर्म पहले किया जाए और फल बाद में दिया जाए, यह न्याय है, या फल पहले दिया जाए और कर्म बाद में किया जाए, यह न्याय है? न्याय है– कर्म पहले, फल बाद में। यही दूसरा नियम है कि कर्म पहले और फल बाद में।

यदि यह शरीर, कर्मों का फल है और कर्म पहले, फल बाद में तो प्रश्न यह है कि जिन कर्मों का फल यह शरीर है, वो कर्म आपने कब किए थे?

जिन कर्मों का फल आपको यह शरीर मिला है, वो कर्म आपने इस जन्म में तो नहीं किए, तो फिर कब किये थे? पूर्वजन्म में। और फल कब मिला? इस जन्म में।

तो इससे पुर्नजन्म सिद्ध हो गया कि नहीं हो गया? यह व्यावहारिक प्रमाण है। अब, दो जन्म समझ में आए कि नहीं आए? आ गए।

बुद्धि से, तर्क से जब हम विचार करते हैं, प्रमाणों से विचार करते हैं तो यह पता चलता है कि मनुष्य का शरीर हमको मुफ्त में नहीं मिला। देने वाला ईश्वर है, वो न्यायकारी है, न्याय कभी फ्री में नहीं देता, कर्म करो तभी फल देता है। इसलिए ये शरीर कर्मों का फल है। किसी को मनुष्य का शरीर मिला, किसी को पशु–पक्षी का, किसी को कीड़े–मकोड़े का, किसी को वृक्ष–वनस्पति का।

ये जो मनुष्य का शरीर है, ये कैसे कर्मों का फल है? अच्छे या बुरे? अच्छे। और पशु–पक्षी का शरीर कैसे कर्मों का फल है? अच्छे या बुरे? बुरे।

एक व्यक्ति ने कहा कि इसमें अच्छे और बुरे की क्या बात है, सारे प्राणी एक जैसे हैं? मैंने पूछा कि सारे एक जैसे कैसे हैं? बोले– सब बराबर सुखी हैं, बराबर दुःखी हैं। उसमें कम–अधिक का सवाल ही नहीं है। सब अधिक जीना चाहते हैं, मरना तो कोई नहीं चाहता। मनुष्य भी जीना चाहता है, घोड़ा, कुत्ता, बन्दर भी जीना चाहता है, सांप भी जीना चाहता है, सभी जीना चाहते हैं। तो सब

बराबर ही तो हुए। मैंने कहा– नहीं ऐसा नहीं है। जीना सब चाहते हैं, यह कहना ठीक है, परन्तु सब जीना चाहते हैं, इतने मात्र से सबके सब बराबर सुखी–दुःखी सिद्ध नहीं होते हैं। फिर भी इनके सुख–दुःख में अंतर है। वे बोले– कैसे अंतर है, समझाइये? मैंने कहा– एक दृष्टांत देता हूँ। एक व्यक्ति एक कंपनी में नौकरी करता है। उसको 20 हजार रुपये मासिक वेतन मिलता है। एक दूसरी कंपनी वाला उसको ऑफर करता है– भाई यह 20 हजार वाली नौकरी छोड़ो, हमारी कंपनी में आओ, हम तुम्हें 25 हजार देंगे। काम इतना ही, घंटे भी इतने, सब कुछ इतना और तनख्वाह 5 हजार फालतू। 25 हजार देंगे। वह लेगा या नहीं? हां, लेगा। एक तीसरा व्यक्ति आया। उसने ऑफर की, आप यह 20 हजार वाली नौकरी छोड़ो, हमारी कंपनी में आओ, हम आपको 15 हजार देंगे। काम इतना ही, घंटे इतने ही और वेतन 15 हजार। अब क्या बोलेगा? न क्यों बोला? उसका क्या कारण है? जिस चीज में उसको फायदा–लाभ दिखता है, वहां क्या उत्तर होगा? हां। और जहां उसको नुकसान दिखता है, वहां क्या उत्तर होगा? न। हां और न का कारण क्या हुआ? लाभ और हानि। अब इस सिद्धांत के आधार पर मैं अगर आपको ऑफर करता हूँ, कि अगले जन्म में आपको कुत्ता बनाएंगे। बोलो हां या न? न बोल रहे हैं, इसका मलतब क्या हुआ? कुत्ता बनने में हानि है तो सारे बराबर सुखी कहां हैं? अगर सारे बराबर सुखी हैं तो फिर कुत्ते बनो, गधा बनो, भेड़–बकरी बनो, कुछ भी बनो, पर आप मना कर रहे हैं। नहीं–नहीं, हमको तो मनुष्य बनना है। इसका मतलब, मनुष्य बनने में लाभ है।

अगले जन्म में मिलने वाला दूसरा फल आयु है

आयु का मतलब– जीने का समय, जीने का काल। अगर मनुष्य का शरीर मिला तो 70–80 साल जियेंगे और घोड़े का मिला तो 80 साल नहीं जी पायेंगे, घोड़ा 80 साल नहीं जीता है। वो तो 20 साल जियेगा, 25 साल जियेगा, अच्छा खाना मिल जाये तो 30 भी जी लेगा। ऐसे ही कुत्ता है, 12–14–15 साल जियेगा। पर मक्खी, मच्छर तो इतना भी नहीं जी सकते, वो तो और भी कम जीते हैं। जिस **प्राणी का जैसा शरीर ईश्वर ने बनाया, उस शरीर के जितना जीने की क्षमता है, जितने लंबे समय तक जीने की उसकी कैपेसिटी है, वो उसकी आयु कहलाती है।** हर शरीर की आयु अलग–अलग है, जैसे मनुष्य की 70–80 साल, 100 साल। गाय, घोड़े की उससे कम, मक्खी, मच्छर की और भी कम। ये आयु भी कर्मों का फल है।

हर एक की स्वाभाविक आयु अलग–अलग है। क्योंकि हर एक के कर्म अलग–अलग हैं, इसलिए हर एक का फल भी अलग–अलग है। इसलिए हर

एक के शरीर में शक्ति अलग–अलग भरी है।

परमात्मा ने जन्म के समय हमारे शरीर में जितनी शक्ति भर दी, वो शक्ति जब तक चलेगी, बस तब तक हमारी उमर है। वो शक्ति कोई सत्तर साल में खर्च करेगा, कोई अस्सी साल तक, कोई सौ साल तक खर्च करेगा।

उम्र पहले से निर्धारित नहीं होती

अब यह जो पिछले कर्मों से मिली हुई बात चल रही है कि ट्रक वाले ने, स्कूटर वाले को मार दिया तो लोग कहते हैं कि इसकी उम्र ही इतनी थी। उम्र इतनी नहीं थी। अगर यह दुर्घटना नहीं होती तो वो और अधिक जीता। मान लो कि जो ट्रक के नीचे मारा गया, वो 32 साल का जवान था। उसके शरीर में ताकत थी। अगर दुर्घटना नहीं होती तो वह 70–80 साल जी सकता था।

कर्मानुसार ईश्वर आयु देता है। पहले लोग अच्छे काम करते थे, खान–पान ठीक था, व्यायाम भी ठीक था, ब्रह्मचर्य का पालन भी करते थे, दिनचर्या का पालन भी करते थे, आदि–आदि। लोग आयु बढ़ाने वाले इन कर्मों का आचरण करते थे तो भगवान सौ वर्ष की आयु देकर भेजता था। अब वो सारा कुछ बदल गया, कई चीजें बिगड़ गईं। इसलिए भगवान अब सौ वर्ष की आयु देकर नहीं भेजता।

भगवान किसी–किसी को सौ वर्ष की आयु देता है। जिसके जैसे कर्म होते हैं, उसको वैसी आयु देता है, कम भी देकर भेजता है। जैसा शरीर होगा, उसी के अनुसार आयु मिलेगी। मनुष्य शरीर मिला, तो मनुष्य शरीर में जितनी क्षमता है, उतनी आयु मिल जाएगी।

आयु भी हर एक व्यक्ति की अलग–अलग है। किसी का शरीर मजबूत है, तो वो अस्सी साल तक जीएगा। किसी का शरीर कमजोर है, वो सत्तर साल जीएगा। किसी का और कमजोर है, तो उसका साठ में ही शांतिपाठ हो जाएगा।

एक तो जन्म से आयु प्राप्त हुई। जन्म से जैसा, जितना बलवान शरीर मिला। यह तो है, पिछले जन्म के कर्मों का फल। मान लीजिए, किसी व्यक्ति को जन्म से ऐसा शरीर मिला कि यदि कोई दुर्घटना न होए, और ठीक–ठाक सामान्य रूप से जीता रहे, तो उसमें इतनी ताकत है कि वह सत्तर साल तक जी सकता है। यह आयु तो पिछले कर्मों से उसको मिली।

हम अपनी उम्र बढ़ा सकते हैं

जो आयु है, उसको हम बढ़ा भी सकते हैं, और घटा भी सकते हैं। मान लीजिये कि पिछले जन्म के कर्मों से हमको भगवान ने इतना अच्छा मजबूत

शरीर दिया, इतनी शक्ति भर दी कि हम सामान्य जीवन जीते रहें तो 70 साल जी जायेंगे।

यदि इस जन्म में फिर नये कर्म करें तो हम उन नये कर्मों से आयु को बढ़ा भी सकते हैं। उसके उपाय ये हैं– रात को जल्दी सोना, मतलब 10 बजे, 10:30 बजे, अधिकतम 11 बजे तक सो जाइये। सुबह जल्दी उठना, 4–5 बजे तक उठ जाइए। व्यायाम करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना, खान–पान में संयम रखना, शाकाहारी भोजन खाना, ईश्वर का ध्यान करना, रोज अपने घर में हवन करना, ईमानदारी से जीवन में व्यवहार करना, चोरी नहीं करना, सच बोलना, झूठ नहीं बोलना, दूसरों के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार करना, अन्याय नहीं करना, बुरे कामों से बचते रहना और दूसरों की यथा शक्ति मदद करना, सहायता करना, ये सारे अच्छे काम करेंगे तो हमारी आयु बढ़ जायेगी। इन उपायों से इसी जन्म में हम नये पुरूषार्थ से आयु को बढ़ा सकते हैं।

कोई अच्छी तरह व्यायाम करके शरीर को बलवान बना लेगा, तो आयु बढ़ भी सकती है। अब अगर वह **नया व्यायाम करके, पुरूषार्थ करके, ब्रह्मचर्य का पालन करके, ठीक खान–पान रखकर के, रोगों से बचता रहा, दुर्घटनाओं से बचता रहा, तो उसकी आयु दस–बीस वर्ष और बढ़ सकती है।**

आयु तो सत्तर की थी, लेकिन वो नब्बे तक जी लिया। जो बीस वर्ष आयु बढ़ गई, यह इस जीवन के नए कर्मों का फल है।

हम अपनी उम्र घटा सकते हैं

वेद पर आधारित आयु का जो शास्त्र है, आयुर्वेद। उसमें ऋषियों ने बताया कि यदि इससे **उल्टे काम करेंगे तो आयु घट भी सकती है।** कैसे घट जायेगी? मान लिया कि पिछले जन्म के कर्म से हमको 70 साल की आयु मिली थी। और अब इस जन्म में क्या किया उसने? रात को देर तक जागना, देर तक सोना और व्यायाम नहीं करना, खान–पान ठीक नहीं रखना, अण्डे, मांस खाना, शराब पीना, गुटखा मसाला, पान–तंबाकू और भांग आदि–आदि, नशे की चीजों का उपयोग करना और ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करना, यज्ञ नहीं करना, उल्टे–सीधे व्यभिचार आदि कर्म करना, और बीड़ी, सिगरेट पीना, ये सब काम करेंगे तो आयु घट जायेगी, दस–बीस साल कम हो जायेगी।

इसी से जुड़ी एक बात और है कि–**अधिक जीने की शरीर में क्षमता होने पर भी जरूरी नहीं कि व्यक्ति उतना जी ले।**

भगवान जितनी आयु देकर भेजता है, उसकी भी गारंटी नहीं है, कि

व्यक्ति उतने दिन जी ही लेगा। व्यक्ति तब जी सकता है, जबकि वह दुर्घटनाओं से बचता रहे। एक्सीडेंट होता है, मर जाते हैं। पैदा होते ही मरते हैं, दो साल के भी मरते हैं। उनकी सुरक्षा–देखभाल ठीक से नहीं हो पायी। इंफेक्शन हो गया, मर गए।

अगर दुर्घटना हो गई, एक्सीडेंट हुआ, फिर तो तत्काल मृत्यु हो सकती है। उसकी तो कोई भी गारंटी नहीं, कोई ठिकाना नहीं, कभी भी, कहीं भी, कुछ भी हो सकता है। इस प्रकार से नए कर्मों से आयु को घटाया भी जा सकता है। कोई शराब पीने लगा, माँस–अंडे खाने लगा, नशा करने लगा तो सत्तर से पचास में ही पूरा हो जाएगा। और अगर दुर्घटना हो गई, तो कभी भी मर सकता है।

एक की भूल के कारण दूसरे को नुकसान होता है। हम सड़क पर ठीक–ठाक चलते हैं। पीछे से ट्रक, कार वाला आकर के हमको ठोंकता है। ऐसे ही डॉक्टर की भूल से, नर्स की भूल से, मां–बाप की भूल से, बच्चे को नुकसान हो सकता है। उसकी मृत्यु हो सकती है, हाथ–पाँव, टेढ़े–मेढ़े हो सकते हैं, कुछ भी हो सकता है। विमान दुर्घटना में मारा गया, कुँए में कूद गया, उसने बिजली का तार पकड़ लिया, जहर पी लिया, कहीं ट्रेन की दुर्घटना में मारा गया, कुछ भी हो सकता है। **दुर्घटनाओं के कारण आयु कभी भी नष्ट हो सकती है। और यदि दुर्घटनाएं नहीं हुई, तो इस जन्म के अपने नये कर्मों से आयु को घटाया–बढ़ाया जा सकता है।**

आयुर्वेद आयु (जीवन) के बारे में बताता है। आयुर्वेद में एक सौ एक प्रकार की मृत्यु लिखी हुई है। और लिखा है कि उसमें से केवल एक मृत्यु स्वाभाविक (काल मृत्यु) है। वह हमारे कर्म के फल से होती है और वो अत्यंत वृद्धावस्था में होती है। **जब शरीर की सारी शक्ति खत्म हो जाती है, तब जीवात्मा शरीर छोड़ देता है, यही है स्वाभाविक मृत्यु (नैचुरल डेथ)।** बाकी सौ प्रकार की मृत्यु अस्वाभाविक, आकस्मिक, अकाल–मृत्यु या एक्सीडेंटल डेथ है। यह पहले से लिखी हुई (डिसाइडेड) नहीं है। कोई पंखे पर लटक जाए, कोई नदीं में कूद जाए, कोई पिस्तौल से गोली मार ले, कोई ट्रेन के नीचे कट जाए, कोई प्लेन–क्रेश में मारा जाए, कोई रोड़–एक्सीडेंट में मारा जाए, कोई आतंकवादी गोली मार दे, कहीं पहाड़ से खाई में गिर जाए, पता नहीं कितने तरीकों से आदमी कभी भी कहीं भी मर सकता है। ये सब की सब दुर्घटना से अकाल मृत्यु यानि एक्सीडेंटल–डेथ हैं। यह पहले से निश्चित नहीं। इसलिए सावधानी से चलो, दुर्घटनाओं से बचो। इस प्रकार हमारी आयु को घटाना–बढ़ाना हमारे हाथों में है।

वेदानुसार आयु घटती–बढ़ती है

वेदों में लिखा है कि आयु घटती है और बढ़ती है। अर्थात मनुष्य की आयु फ्लेक्सिबल है। कोई मरने का दिन, समय, स्थान पहले से निर्धारित नहीं है।

संध्या का एक मंत्र आप रोज बोलते होंगे – ''जीवेम् शरदः शतम्, भूयश्च शरदः शतात्।'' **हे प्रभु! हम सौ वर्ष से अधिक भी जिएं।**

अगर किसी की मृत्यु भगवान ने तय कर दी कि यह पैंतीस वर्ष में मरेगा, अमुक हाईवे पर मरेगा, ट्रक के नीचे टकराकर मरेगा। वह आदमी यदि कहे कि– ''हे भगवान! मैं सौ साल जियूँ।'' उसको यह सौ साल जीने की प्रार्थना भगवान ने सिखाई। इसका मतलब यह है कि भगवान हमसे झूठ बुलवाता है। एक ओर तो कहता है कि– ''तुम्हें पैंतीस से आगे तो जाने ही नहीं दूँगा।'' दूसरी ओर कहता है :– ''मुझसे बोलो कि मैं सौ साल जियूँ, सौ से ऊपर भी जियूँ।'' यह विरोधाभास है।

प्रश्न– इंसान को मृत्यु से डरना चाहिए या नहीं?

उत्तर– इंसान को मृत्यु से डरने से लाभ होता है क्या? नहीं होता। जिस काम से लाभ नहीं होता, वो काम नहीं करना चाहिए। मृत्यु से बचना तो चाहिए। खामखां बेमौत क्यों मारे जाएं?

आयुर्वेद में एक सौ एक प्रकार की मृत्यु लिखी है। उसमें से स्वाभाविक मृत्यु केवल एक है। अत्यंत वृद्धावस्था में, जब बूढ़े हो जाएंगे, जिस दिन धीरे–धीरे करके शक्ति खत्म हो जाएगी। वो हमारी स्वाभाविक मृत्यु है। शरीर में ईश्वर ने हमको शक्ति दे रखी है। करते–करते 70–80–90 साल में एक न एक दिन यह शक्ति भी पूरी तरह समाप्त हो जाएगी। वृद्धावस्था में मनुष्य पहुंचेगा तो मृत्यु आएगी। यह ईश्वर की दी हुई स्वाभाविक मृत्यु होगी।

चाहे हम स्वाभाविक मृत्यु से मरें या दुर्घटना वाली से मरें। एक न एक दिन तो सबको मरना है। इसलिए जो घटना निश्चित है, होने वाली है, उससे बचने का कोई तरीका नहीं, कोई उपाय नहीं तो उससे डरना नहीं चाहिए। उसकी तैयारी करनी चाहिए। आने वाली मृत्यु की कुछ मानसिक तैयारी करो, कुछ सावधानी रखो। इसलिए सड़क पर लिखा रहता है–''सावधानी हटी...दुर्घटना घटी।'' इसलिए सावधानी रखो, दुर्घटनाओं से बचो, अपनी आयु बढ़ाओ। मृत्यु से डरना नहीं चाहिए। सुरक्षा जरूर रखनी चाहिए। डरना अलग चीज है और सुरक्षा रखना अलग चीज है। यह हो गई आयु की बात।

अगले जन्म में मिलने वाला तीसरा फल भोग है

तीसरा फल है, भोग। भोग का अर्थ होता है– 'सेवन करने योग्य पदार्थ', सुख–दुःख को भोगने के साधन। जैसे–धन–संपत्ति, मकान, मोटर–गाड़ी, अन्न वस्त्र, सोना–चाँदी, फ्रिज, टी.वी., रेडियो इत्यादि। ये जितने सुख–दुःख भोगने के साधन हैं, इसका नाम है– भोग। भोग का मतलब जो आपको जीने के साधन मिलते हैं। जो जन्म से मिला, माता–पिता के घर में जन्म से जो आपको संपत्ति मिल गई। परिवार, मोटर, गाड़ी, खाना–पीना जो भी साधन मिले, ये सारा भोग शब्द के अंतर्गत है।

किसी को सेठ के घर जन्म मिला, किसी को गरीब के यहां मिला। किसी को विद्वान के घर मिला, किसी को सामान्य व्यक्ति के यहां मिला। उसके घर में जो भी जीने के साधन, संपत्ति होगी, वो सारा उसका भोग कहलाता है। ये तो है पिछले कर्मों का फल। परंतु अब इस भोग को हम बढ़ा सकते हैं और घटा भी सकते हैं।

हम भोगों को घटा–बढ़ा सकते हैं

अब जानिए कि जन्म से जिस माता–पिता के घर में जन्म मिला, उनके पास अच्छी सम्पत्ति थी। उसके भोग घटते कैसे हैं?

किसी बच्चे के पिछले जन्म के कर्म अच्छे थे। उसको सेठ के घर जन्म मिला। इस प्रकार उसको पूर्वजन्म के कर्मों से अच्छा भोग मिल गया, अच्छी सम्पत्ति मिल गई। जन्म से उसको खाने–पीने, भोगने की बढ़िया सुविधाएं मिलीं। लेकिन आगे जब वो विद्यार्थी बनकर स्कूल में पढ़ने गया, तब उसने मेहनत नहीं की, पुरूषार्थ नहीं किया, बुद्धि का विकास नहीं किया। जो जन्म से प्राप्त घर की संपत्ति थी, वो भी शराब पीने में, इधर–उधर यार–दोस्तों के साथ घूमने–फिरने में, मौज–मस्ती में, जुआ–सट्टे में, इधर–उधर दूसरे उल्टे–सीधे कामों में संपत्ति खो दी, नष्ट कर दी। **आगे इस जन्म में रहते हुए भी नए कर्म जैसे– पढ़ाई नहीं की, अपनी बुद्धि नहीं बढ़ाई, धन–संपत्ति को नहीं संभाल सके, कोई दूसरे लोग छीन–छान के ले गए, तो हमारे भोग घट गए।**

इस प्रकार, बुद्धि का विकास किया नहीं, तो वो धीरे–धीरे नीचे आ जाएगा। जो संपत्ति पास में थी, वो भी खो बैठेगा।

भोग बढ़ते कैसे हैं? जिस परिवार में हमको जन्म मिला। जो जन्म से पैतृक संपत्ति मिली। उससे हमने पढ़ाई–लिखाई की, बुद्धि का विकास किया।

खूब अच्छी तरह से मेहनत की और खूब धन कमा लिया। अच्छी–अच्छी सुविधाएं घर में इकट्ठी कर ली। इस प्रकार से हमारे इस जन्म के नए कर्मों से हमारे भोग बढ़ गए।

मान लीजिए, एक व्यक्ति के पिछले कर्म बहुत अच्छे नहीं थे, इसलिए जन्म से उसको सामान्य गरीब परिवार में जन्म मिला। अधिक अच्छा खानपान, अधिक अच्छे वस्त्र, अधिक सुविधा नहीं मिली। पाँच साल की उम्र में वह व्यक्ति स्कूल में पढ़ने के लिए गया। पढ़–लिखकर उसने खूब पुरूषार्थ किया। बुद्धिमान हो गया, एम.ए., पी.एच.डी. हो गया। आगे चलकर उसको नौकरी भी मिल गयी। उसको अच्छा वेतन मिलने लगा। धीरे–धीरे उसने अपना मकान भी अच्छा बना लिया। फिर धीरे–धीरे और अच्छा कमाकर के मोटरकार भी खरीद ली। ऐसे उसने भोग के साधन बढ़ा लिए।

गरीब आदमी मेहनत करके नए पुरूषार्थ से भोग के साधन बढ़ा सकता है, उसमें वृद्धि और परिवर्तन कर सकता है।

इससे पता चला कि **आगे नये जीवन में आकर हम फिर स्वतंत्र हैं। हम बुद्धिमत्ता से, पढ़ाई करके, बुद्धि का विकास करके, अपने साधनों को बढ़ा लें अथवा लापरवाही करके, जुआं खेल के, शराब पी के इधर–उधर बिगाड़ दें और अच्छी भली संपत्ति भी खो डालें, उस भोग को घटा लें। ये दोनों चीजें हमारे हाथ में हैं,** दोनों में हम स्वतंत्र हैं। इस प्रकार से "सुख–दुःख को भोगने के साधन", घटाए जा सकते हैं, बढ़ाए जा सकते हैं। इन साधनों को कोई छीन के भी ले जा सकता है, और कभी–कभी कोई दे भी सकता है।

अगर आप भोग बढ़ाने वाले नए कर्म करोगे, तो भोग बढ़ जाएंगे। अगर नहीं करोगे, तो भोग नहीं बढ़ेगा। आयु बढ़ाने वाले कर्म करोगे, तो आयु बढ़ेगी। और वैसे कर्म नहीं करोगे, तो आयु नहीं बढ़ेगी। वो कंडीशन्स पर डिपेन्ड करता है। भोग बढ़ भी सकते हैं, घट भी सकते हैं।

प्रश्न– दो व्यक्ति एक साथ, एक जैसा ही कार्य करते हैं। फिर भी उनको अलग–अलग फल क्यों मिलता है?

उत्तर– इसका उत्तर है कि अगर दोनों एक जैसा कार्य करते हैं तो फिर दोनों का रिजल्ट भी एक जैसा आना चाहिए। अगर रिजल्ट में अंतर है तो फिर कहीं न कहीं कर्म में भी अन्तर है। दो व्यक्ति गणित के सवाल का हल निकालते हैं। 5 को 8 से गुणा करेंगे तो कितना उत्तर आएगा? एक ने गुणा किया तो उत्तर आया– 40। दूसरे ने गुणा किया तो– 40। दोनों ने ठीक किया इसलिए

दोनों का उत्तर एक जैसा आया। अगर एक ने 5 को 8 से गुणा किया और उसका उत्तर आता है– 40 और दूसरे ने किया और उसका उत्तर आता है– 33 तो सवाल उठता है कि क्या दोनों ने ठीक किया? नहीं। एक ने गड़बड़ी की, इसलिए दोनों का उत्तर एक समान नहीं आया। दोनों व्यक्ति पुरूषार्थ करते हैं, और दोनों को एक समान फल नहीं मिलता तो मतलब दोनों में से किसी एक ने कहीं न कहीं भूल की है, कहीं न कहीं कमी की है। इसलिए दोनों ने एक जैसा काम नहीं किया।

एक व्यक्ति तो अच्छी कमाई कर लेता है, साथ का दूसरा वहीं रह जाता है। इस वचन से ही सिद्ध हो रहा है कि दोनों ने बराबर मेहनत नहीं की है, कहीं न कहीं अंतर रहा है। मान लो, दो व्यापारी व्यापार करते हैं और आपको ऐसा लगता है, दोनों ने बराबर मेहनत की है। वास्तव में दोनों ने बराबर मेहनत नहीं की है, उनके साधनों में भी अंतर है और विधि में भी अंतर है।

सफलता के क्या कारण हैं, वो जान लीजिए। ये कारण हैं सफलता के– एक है कर्म करने की विधि यानि प्रोसेस, दूसरा है कर्म करने के जो साधन हैं यानि इंवेस्टमेंट है, कैपिटल है, मार्केट में आपकी दुकान कहां पर है, ठीक मौके पर है या अंदर इन्टीरियर में। माल किस तरह से सजाते हैं, वैरायटी कितनी रखते हैं, ग्राहक से बात कैसे करते हैं। एक व्यापारी ग्राहक पर गुस्सा होता है लेकिन दूसरा व्यापारी प्रेम से मीठी बात करता है तो अंतर आ गया या नहीं? जो व्यापारी ग्राहक पर गुस्सा करता है, उसका धंधा बिगड़ जाएगा। जो प्रेम से बात करता है, ग्राहक माल खरीदे या न खरीदे, वो झगड़ा नहीं करता, गुस्सा नहीं करता, उसका धंधा चलेगा। ऐसे छोटे–छोटे बहुत से कारण होते हैं। जब आप गहराई से खोज करेंगे तब आपको पता चलेगा कि दोनों ने बराबर मेहनत नहीं की है। दोनों के काम करने की विधि ठीक है या नहीं है? कोई टाइम पर आता है और कोई लेट आता है आदि–आदि बहुत से कारण होते हैं। उनमें कहीं न कहीं अंतर मिलेगा। और फिर कहीं–कहीं तुक्का भी लग जाता है। तुक्का भी तभी लग जाता है, जब उन कारणों में कहीं न कहीं अंतर होगा। कभी कोई व्यक्ति कुछ ज्यादा कमा जाएगा, दूसरा कम कमा पाएगा।

ईश्वर पाप माफ नहीं करता है

लोग तो कहते हैं कि हरिद्वार में जाओ, गंगा जल में स्नान करो, सारे पाप धुल जाते हैं। कोई मंदिर में जाता है, कोई मस्जिद में जाता है, कोई चर्च में जाता है, सब अपने–अपने स्थानों पर जाते हैं और भगवान से माफी मांगते हैं। क्या भगवान उनके पाप का दण्ड माफ कर देता है? नहीं करता। फिर क्यों जाते हैं?

क्या मंदिर में पाप माफ करवाने के लिए जाना चाहिए? नहीं जाना चाहिए। क्योंकि ईश्वर माफ नहीं करेगा।

न्याय का नियम है कि यदि अच्छा कर्म किया तो अच्छा फल मिलेगा और बुरा किया तो बुरा फल मिलेगा। वहां माफी का कोई सवाल ही नहीं है। मंदिर में जाकर अगर माफी मांगेंगे तो माफ नहीं होगा।

आगे सातवां नियम यह बताया है कि यदि कर्म किया तो फल अवश्य मिलेगा। मान लीजिए, आप कोई कंपनी चलाते हैं और आपके कर्मचारी लोग आपकी कंपनी में गलतियां करते हैं, चोरी करते हैं और वे आ कर के कहें कि साहब मुझे माफ कर दो, तो आप माफ कर देंगे? अगर एक को माफ किया तो दूसरा भी आपकी कंपनी में चोरी करेगा। फिर वह भी आके बोलेगा कि साहब मुझे माफ कर दो। यदि आपने दूसरे को भी माफ कर दिया तो तीसरा भी चोरी करेगा। जो चोरी नहीं करता है, वो भी चोरी शुरू कर देगा। इससे कंपनी नहीं चलेगी, सारी कंपनी डूब जाएगी। इसलिए न्याय कहता है कि यदि कर्म किया है तो फल अवश्य मिलेगा, उसमें माफी का कोई काम नहीं। माफ करने से व्यक्ति को स्वभाव सुधरेगा या बिगड़ेगा? बिगड़ेगा। इसलिए इस बात का ध्यान रखें कि किसी मंदिर में जाकर माफी मांगने से हमारा पाप माफ नहीं होने वाला।

अगर हरिद्वार में, गंगा जी में स्नान करने से पाप धुल जाते तो वहां इतना बड़ा पुलिस स्टेशन बनाने की, पुलिस की क्या जरूरत थी? जो भी पाप करे, उसको कहो– देखों, गंगा की लहर बह रही हैं, उसमें डुबकी मारो, पुलिस में क्यों जा रहे हो, पाप तो धुल ही जाएगा, फिर पुलिस की क्या जरूरत है? आप हरिद्वार का पुलिस स्टेशन नहीं बंद करा सकते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि पाप नहीं धुलता तभी तो जरूरत पड़ी पुलिस की। हरिद्वार में पुलिस स्टेशन भी है, कोर्ट भी है, वकील भी हैं, न्यायाधीश भी हैं, सब काम चलता है, ठीक वैसा ही जैसे दिल्ली में चलता है, जैसे अहमदाबाद में चल रहा है। जितने बड़े तीर्थ–स्थान हैं, सभी जगहों पर बड़े–बड़े पुलिस स्टेशन हैं, बड़ी–बड़ी कोर्ट्स लगी हैं। इससे पता चलता है कि कोई पाप माफ होने वाला नहीं है। खामखां भ्रांति में न रहें। अगर आपके मन में यह भ्रांति हो तो कृपया दूर कर लीजिएगा।

एक वैदिक धर्म को छोड़कर बाकी जितने भी सम्प्रदाय वाले हैं, प्रायः उन सभी ने ये पाठ पढ़ाया कि तुम पाप करो, हमको दान दो, हम तुम्हारे पाप माफ करा देंगे, स्वर्ग में जगह दिला देंगे। ये सारा दोष इन पंडितों का है। इन पंडितों ने उलटे पाठ पढ़ा–पढ़ा कर सारी जनता को अपराधी बना दिया है। और सारी दुनिया के अंदर पाप फैला दिया है।

अगर वेद का सिद्धांत, वैदिक सिद्धांत सिखाते होते कि पाप मत करो, भगवान दण्ड देगा, वेद में लिखा हुआ है, भगवान कुत्ता बनाएगा, सांप बनाएगा, बिच्छू बनाएगा, घोड़ा बनाएगा, तो पाप घट जाता। **ये सारे दुनियाभर के पंडित प्रचारक अपने–अपने सम्प्रदाय वाले, अपने–अपने अनुयायियों को, विद्यार्थियों को, सहयोगियों को अगर ये पाठ पढ़ाना शुरू कर दें कि भाइयो पाप मत करो, भगवान सांप बना देगा, कुत्ता बना देगा, बिच्छू बना देगा तो बताइये दुनिया में पाप घटेगा या बढ़ेगा? घटेगा।** आप चाहते हैं न पाप घटाना चाहिए? बस उसका उपाय ये है। ऋषियों ने हमको ये समझाया कि कर्मफल को अच्छी तरह समझो। कोई पाप माफ होने वाला नहीं है।

प्रश्न– क्या संचित कर्म या प्रारब्ध कर्म को हम कोई उपाय, विधि, तंत्र–मंत्र, बाधा या अन्य उपायों से दूर कर सकते हैं? लोगों को उपाय करने से फल मिलता है, उसका कारण क्या है?

इस प्रश्न का उत्तर है कि संचित कर्म अलग है, प्रारब्ध कर्म अलग है। जो संचित कर्म हैं, जमा हुए, जिनका फल मिलना शुरू नहीं हुआ। किसी विधि से, तंत्र से, मंत्र से, यंत्र से, बाधा से हम उनको बदल नहीं सकते। जैसे अभी बताया था कि कर्म किया तो फल अवश्य मिलेगा। उसमें कोई परिवर्तन (चेंज) नहीं हो सकता। जो कर्म कर चुके, वो तो कर लिया, उसका तो फल भोगना ही पड़ेगा, उसका फल भोगे बिना छुटकारा नहीं मिलना है। कोई दान चढ़ाओ, कोई मंदिर में जाओ, किसी नदी में स्नान करो, कुछ पूजा–पाठ करो, कोई विधि करो, इससे कोई पाप माफ होने वाला नहीं है। इससे कोई परिवर्तन होने वाला नहीं है। वो तो भोगना ही पड़ेगा। अच्छे कर्म का फल अच्छा। और बुरे कर्म का फल बुरा। वो तो निरस्त–समाप्त यानी कैंसिल नहीं होता। ईश्वर की न्याय–व्यवस्था में कैंसिलेशन नहीं है। ईश्वर की कर्मफल–व्यवस्था में अच्छे कर्मों में से बुरे कर्म या बुरे में से अच्छे कर्म कैंसिल नहीं होते।

भारत सरकार भी कर्मफल कैंसिल नहीं करती। बहुत अच्छा दृष्टांत है। कुछ साल पहले बिहार में एक नदी में बाढ़ आ गई तो लोग डूबने लगे। एक अच्छा तैरने वाला था। उसने तैर कर 20 लोगों की जान बचा ली। सरकार को पता लगा तो उसने घोषणा कर दी कि इसने 20 लोगों की जान बचाई, इसको ईनाम देंगे। एक सप्ताह के बाद उस व्यक्ति का किसी से झगड़ा हो गया। बात बढ़ कर मारा–मारी पर आ गई। और मारा–मारी भी इतनी बढ़ गई कि जिसने

20 की जान बचाई थी, उसने एक को मार दिया। जब मार दिया तो वो गया सरकार के पास और कहने लगा कि पिछले हफ्ते मैंने 20 की जान बचाई थी, आज एक की जान ले ली। आप एक काम करो, 20 मे से 1 कैंसिल करो, 19 का ईनाम दे दो। अब बोलिए सरकार मानेगी? नहीं मानेगी। कोई कैंसिलेशन नहीं। तो मैंने कहा– जब सरकार नहीं करती तो भगवान कैसे कैंसिलेशन करेगा? वो जरा भी, एक सुई की नोंक के बराबर भी यहां–वहां नहीं करेगा। इसलिए **कोई विधि करो, मंत्र करो, तंत्र करो, यंत्र करो, बाधा करो, कुछ भी करो, ये सब व्यर्थ है। इससे कोई फल बदलने वाला नहीं है। जैसा कर्म किया है, वैसा ही फल मिलेगा।** ये अवश्यंभावी है।

अपने द्वारा किये गये कर्मों का फल व्यक्ति को स्वयं ही भोगना पड़ता है। उसे कोई व्यक्ति किसी दूसरे को नहीं दे सकता है। कुछ लोग यज्ञ, जप आदि दूसरों से ऐसा मानकर करवाते हैं, कि उनके इस कार्य का फल उन्हें मिल जायेगा। **कोई किसी का पाप न तो अपने सिर पे ले सकता है और न किसी से पुण्य खरीद सकता है।** एक व्यक्ति को दस हजार रूपये का एक माह का मेहनताना मिला, उस व्यक्ति ने अपना सारा का सारा मेहनताना किसी गरीब को दे दिया, तो यह नहीं माना जायेगा कि उसने अपना सारा फल किसी और को दे दिया। क्योंकि दान देने वाले का, दान देना एक नया कर्म है, जिसका कि शुभ फल उसे ईश्वर भविष्य में प्रदान करेगा। ठीक इसी प्रकार कोई पापी व्यक्ति अपने पाप कर्म का दोष किसी निर्दोष व्यक्ति पर लगाकर उसे दण्ड दिलवा देता है, तो यह भी एक नया कर्म बन जायेगा। उसे इसका फल भी मिलेगा और साथ ही पुराने बुरे कर्म का भी फल मिलेगा।

रही बात यह कि, क्या मंत्र के जाप से, यज्ञ करने से अथवा दान देने से कष्ट दूर हो सकते हैं? उत्तर यह है कि–

(1) **हम यज्ञ करेंगे, मंत्र का जाप करेंगे, तो भगवान हमको सहनशक्ति देगा, उससे कष्ट हमारे लिए हल्का हो जाएगा।** कष्ट भोगना तो पड़ेगा, पर वह उतना भारी नहीं रहेगा, हल्का लगेगा। आराम से निपट जाएगा।

(2) **मंत्र के जाप से आगे के लिए बुद्धि अच्छी हो जाएगी। फिर हम और अधिक अच्छे–अच्छे काम करेंगे।** आगे अपराध नहीं करेंगे, तो आने वाले कष्ट टल जाएंगे। क्योंकि आगे अपराध ही नहीं करेंगे, तो पाप का दंड क्यों मिलेगा? इसलिए मंत्र जाप करना चाहिए, यज्ञ करना चाहिए।

(3) गायत्री मंत्र का पाठ करना एक अच्छा काम है। चोरी करना, यह बुरा काम है। अच्छे काम से बुरा काम कैंन्सिल नहीं होता। आपने एक लाख **गायत्री मंत्र का जप किया, उसका अलग फल मिलेगा। चोरी की, उसका अलग दण्ड मिलेगा।** इसलिए दोनों कर्मों का फल अलग–अलग है।

(4) यदि व्यक्ति चोरी कर दान देता है तो भी वह चोरी के दण्ड से नहीं बचता। गरीबों का शोषण करना, खून चूसना यह एक अपराध है। एक सेठ ने यह अपराध किया, इसलिए उसका दंड सेठ को मिलेगा। किसी ने सेठ का धन लूट लिया, वह भी अपराध है। उसे लूटने का भी दंड मिलेगा। उसको यह अधिकार नहीं है कि वह सेठ की संपत्ति को लूट (चुरा) ले और दूसरों को दान दे दे। लूट करके दान देना उसका अधिकार नहीं है। अपना धन कमाओ और गरीब को दो, कौन रोकता है? यह राजा (सरकार) का काम है या परमात्मा का काम है, वो उसको दंड देगा। दूसरा व्यक्ति कानून हाथ में नहीं ले सकता। दान देना 'शुभ कर्म' है, लूटमार करना 'अशुभ कर्म' है। दोनों कर्म अलग–अलग हैं। दोनों का अलग–अलग फल है।

(5) एक व्यक्ति समाधि लगाता है, ईश्वर की उपासना करता है, तो उसको ईश्वर की अनुभूति होती है, ईश्वर से आनंद मिलता है, ज्ञान मिलता है, बल मिलता है, उत्साह मिलता है, बहुत सारे अच्छे गुणों की प्राप्ति होती है। समाधि–काल में ईश्वर की उपासना ही एकमात्र कर्म होता है।

समाधि–काल में भी उसके जो पहले किए हुये कर्म हैं, वो जमा रहते हैं। इससे कर्म नष्ट नहीं होते। दरअसल, कर्म बिना फल भोगे नष्ट होते ही नहीं हैं। वो चाहे समाधि लगाए, या न लगाए। यदि किसी व्यक्ति ने कोई भी कर्म किया है, तो उसका फल निःसंदेह भोगना ही पड़ेगा।

कर्म, बिना फल दिए कभी भी नष्ट नहीं होते, वो हमेशा जमा रहते हैं। जब उनका फल मिलता जाता है तो फल भोगने से वो कर्म हट जाते हैं। मान लीजिए, किसी व्यक्ति के दो हजार कर्म थे। तीन सौ कर्मों का फल मिल गया, सत्रह सौ बाकी रह गए। अब समाधि लगाओ अथवा न लगाओ कोई फर्क नहीं पड़ेगा। वे बचे हुए सत्रह सौ कर्म, फल भोगकर ही नष्ट होंगे, अन्यथा नहीं।

प्रश्न– गलत काम हो गया और पता चल गया कि गलती हो गई है तो उसका क्या प्रायश्चित्त करना चाहिये?

किये जा चुके बुरे कर्मों के प्रति मन में, ग्लानि और दुःख को

अनुभव करना और ऐसे कामों को आगे से न करने की दृढ़ प्रतिज्ञा, चित्त का निश्चय, प्रायश्चित्त कहलाता है।

अपनी गलती का प्रायश्चित्त करने से न तो हम उसके फल से बच सकते हैं, और न ही उसके फल को कुछ कम कर सकते हैं। इसीलिये प्रायश्चित्त में कर्मफल को नष्ट करने की सामर्थ्य नहीं है।

प्रायश्चित्त से जो लाभ होता है, वो ये है कि उससे हमारे, उस कर्म को करने के बुरे संस्कार (वासना) कमजोर और क्षीण हो जाते हैं। और जब वे संस्कार नहीं रहते हैं, या कम रहते हैं तो उन बुरे कर्मों को करने की मन में इच्छा नहीं पैदा होती है या पहले की तुलना में कम होती है, जिससे उन कर्मों को दोबारा करने से हम बच सकते हैं। यह प्रायश्चित्त का बहुत अच्छा लाभ है। मनु महाराज कहते हैं :–

प्रायो नाम तपः प्रोक्तं चित्तं निश्चय उच्यते।
तपो निश्चयसंयुक्तं प्रायश्चित्तमिति स्मृतम्। (मनु स्मृति 11/4)
कृत्वा पापं हि सन्तप्य तस्मात्पापात्प्रमुच्यते।
नैवं कुर्यात् पुनरिति निवृत्त्यापूयते तु सः।। (मनु स्मृति 11/23)

मनु जी ने कहा है कि– **''प्रायः''** यह **प्रायश्चित्त** शब्द का पहला टुकड़ा है। इसका अर्थ है– **तप करना**। तप करना यानी थोड़ा दुख भोगना। दूसरा टुकड़ा है– **''चित्तम''**। इसका अर्थ है– **निश्चय**। जब ये दोनों इकट्ठे हो जाते हैं, तो व्यक्ति दुख भी भोगता है और आगे गलती न करने का निश्चय भी करता है। यह प्रायश्चित्त कहलाता है।

जो पाप कर्म हो चुका, उसके लिए प्रायश्चित्त करें अर्थात् निश्चित रूप से यह ठान लें और प्रतिज्ञा करें कि मैं पुनः इस प्रकार का पाप नहीं करूँगा। इससे वह व्यक्ति पवित्र आचरण वाला बन जाता है।

पाप करने के पश्चात थोड़ा दुख भोगकर व्यक्ति पाप के संस्कार को नष्ट कर, उस संस्कार से छूट जाता है। कष्ट उठाने से संस्कार नष्ट हो जाता तो आगे वह पाप नहीं करेगा। फिर संकल्प करेगा तो उस संकल्प से व्यक्ति पवित्र हो जाता है।

सावित्रीं च जपेन्नित्यं पवित्राणि च शक्तितः।
सर्वेष्वेव्रतेष्वेवं प्रायश्चित्तार्थमादृतः।। (मनु स्मृति 11/18)

अर्थात् प्रायश्चित्तकर्ता प्रायश्चित्तकाल में अपनी शक्ति के अनुसार अधिक से अधिक गायत्री मंत्र और मन को पवित्र करने वाले मन्त्रों का जप करे। ऐसा

करना सभी व्रतों में प्रायश्चित्त के लिए उत्तम माना गया है। **बुरे कर्मों के संस्कार न बने, हमारा जीवन पवित्र बना रहे और उन्नति को प्राप्त होता रहे, इसलिए प्रायश्चित्त बहुत महत्त्वपूर्ण साधन है।** अतः शास्त्रकारों ने इसका विधान किया है।

उसका विधान ये है कि **शारीरिक अपराध किया तो शारीरिक प्रायश्चित्त करें, शरीर से कुछ दंड लेवें। वाणी से अपराध किया तो, वाणी का दंड लें। मानसिक अपराध किया तो मानसिक दंड लें।** दंड लेने का मतलब कुछ कष्ट उठायें, कुछ अफसोस मनायें और संकल्प करें कि अब तो गलती हो गई, अब दोबारा नहीं करूंगा।

उदाहरण के लिये, टेबल पर शीशे का गिलास रखा था और भूल से हाथ लग गया तो वो गिर कर टूट गया। इससे बीस रूपये का नुकसान हो गया। ये शारीरिक अपराध हुआ, ये शरीर से गलती हुई। वो उसका शारीरिक दंड लेगा। एक तो शारीरिक कष्ट उठायेगा जैसे कि 20 रूपये का नुकसान हुआ तो निश्चय किया कि चलो आज दोपहर के भोजन में 50 परसेंट भोजन कम खायेंगे। ये प्रायश्चित्त के रूप में थोड़ा कष्ट उठायेंगे और अच्छी तरह से मन में जोरदार मजबूत संकल्प करेंगे कि आज तो लापरवाही से गिलास टूट गया, लेकिन अब ऐसी गलती दोबारा नहीं करेंगे। इस तरह से शारीरिक गलती हुई तो शारीरिक दंड लेकर प्रायश्चित्त होता है।

अगर वाणी की गलती हुई, जैसे किसी को झूठ बोल दिया, कठोर भाषा बोल दी, उसका मजाक उड़ा दिया, तो वाणी का दंड लेवें। वाणी का दुरूपयोग किया तो 2 घंटा अभी ब्लाक करो वाणी को, आज दो घंटा बात नहीं करेंगे, वाणी का 2 घंटा मौन रखेंगे और मन में संकल्प करेंगे, अफसोस मनायेंगे कि मुझसे क्यों ऐसी भूल हुई? बहुत गलती हुई, अब नहीं करूंगा। और उसमें कुछ समय भगवान से प्रार्थना करें, संकल्प करें, भगवान से शक्ति मागें कि आज भूल हो गई, अब आगे नहीं करूंगा।

मन में किसी के बारे में कोई बुरा विचार कर लिया, उसका इस तरह का निर्णय कर लिया कि हे भगवान मेरे पड़ोसी की टांग टूट जाये, इसकी दुकान में आग लग जाये तो उसका मानसिक प्रायश्चित्त करें। उसमें भी एकांत में जाकर के ईश्वर का ध्यान करें, मन से ईश्वर का चिंतन करें, भगवान से प्रार्थना करें कि हे भगवान! मैंने गलत सोचा, मैं इसका प्रायश्चित्त करता हूँ, और बहुत अफसोस मनाता हूँ, मुझसे वास्तव में भारी भूल हुई है, मैं आगे ऐसा नहीं करूंगा, आप मुझे विद्या दीजिये, बल, बुद्धि, शक्ति–सामर्थ्य दीजिये, मुझे उत्साह–हिम्मत दीजिये ताकि मैं ऐसी गलतियां आगे न करूं। अगर मैं ये गलतियां करता रहूंगा तो आप

मुझे दण्ड देंगे, मैं दण्ड भोगना नहीं चाहता। इसीलिये मैं खूब जोर से संकल्प करता हूँ कि अब ऐसी गलतियां नहीं करूंगा। इस तरह से उसका प्रायश्चित्त करना चाहिये।

प्रश्न– आधी जिंदगी बीत गई, आज कर्मफल के बारे में समझ मिली। अज्ञानता वश जो पाप कर्म हो गये, इनकी सजा या दण्ड से बचने के लिये कोई उपाय?

अब जो हो गया सो हो गया। आगे ये मान कर चलना है कि जब जागो, तभी सवेरा। वैसे तो सुबह चार बजे, पांच बजे उठना चाहिये, और एक आदमी सोता रहा, और सोते–सोते अब दस बजे आंख खुली, तो क्या वो दस बजे उठ करके अपनी दैनिक दिनचर्या नहीं करेगा? करेगा न। चार बजे, पांच बजे उठता तो भी वो ही करता, अब दस बजे उठा तो भी वो ही करेगा। आज जाग गये तो बस आज से सवेरा शुरू हो गया।

आज से अच्छे काम शुरु करो, जो बुरे काम चल रहे हैं, उनको बंद करो। अब तक जो घोटाला कर लिया, सो कर लिया। अब आगे ये करना है कि घोटाले बंद करो, अच्छे काम शुरू करो और मरने से पहले अपने अच्छे कर्मों का बैलेंस बढ़ा लो, 50 प्रतिशत से अधिक कर लो। अगला जन्म मनुष्य का मिल जायेगा। **पापों की कोई माफी नहीं है, ईश्वर छोड़ेगा नहीं।** अब जितना समय जीवन का बचा है, वो आपके हाथ में है, इसलिए जल्दी से जल्दी, अच्छे–अच्छे काम करें, अधिक से अधिक अच्छे काम करे।

❖❖❖

अध्याय 4

कर्म और फल
पुरूषार्थ और भाग्य

कर्मफल सिद्धांत समझना बड़ा कठिन

यह ''कर्मफल सिद्धांत'' विषय बहुत कठिन है। दुनियाभर में इस विषय पर बहुत सी भ्रांतियां फैली हुई हैं, इसलिए इस विषय को समझने में आपको थोड़ा परिश्रम करना पड़ेगा।

अगर आपको गणित विद्या पढ़ानी हो तो बहुत आसान है। ऐसा इसलिए क्योंकि गणित पढ़ाने में कहीं कोई कठिनाई नहीं है। भारत से अमेरिका तक सब देशों में एक जैसा गणित पढ़ाते हैं। यदि आप 5 को 8 से गुणा करेंगे तो सब जगह एक ही उत्तर आएगा– चालीस। इसलिए गणित को पढ़ाने में कोई समस्या, कोई झगड़ा, कोई मतभेद नहीं है। लेकिन **जिस विषय पर पहले ही सैकड़ों प्रकार का मतभेद फैला हुआ हो, उसको पढ़ाना तो बहुत कठिन है।**

जब अध्यापक गणित विद्या को पढ़ाते हैं और कहीं दो व्यक्तियों का उसमें मतभेद हो जाए, विचार–भेद हो जाए तो कैसे पता चले कि दो में से कौन ठीक है? तो इसका उत्तर होता है कि गणित की पुस्तक उठाकर देख लीजिए, पुस्तक जो कहती है, वो ठीक है। इस विषय में गणित की पुस्तक ही प्रमाण है।

कर्मफल के विषय में लोगों का बहुत सा मतभेद है। कर्मफल के विषय में कोई कुछ मानता है, कोई कुछ मानता है। पहले से ही बहुत सारे विचार भेद हैं; लोगों में बहुत सारा टकराव है। सैकड़ों वर्षों से ये भ्रांतियां मन–मस्तिष्क में जमी बैठी हुई हैं। उन भ्रांतियों को, संशयों को, दो–चार घंटे में दूर करना बहुत कठिन है। यहां ध्यान रखने योग्य है कि जो लोग स्वाध्याय नहीं करते, सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, दर्शन, उपनिषद्, वेद, मनुस्मृति आदि ग्रन्थों का अध्ययन नहीं करते, तो उनको बात समझने में देर लगेगी। क्योंकि उनका अपना आधार (बैकग्राउण्ड) नहीं है।

वेद व वेदानुकूल ग्रन्थों के आधार पर कर्मफल सिद्धांत को समझना चाहिए।

इस पुस्तक के पठन के दौरान आपके मन में इस तरह का संशय पैदा हो

सकता है कि अब तक तो हम यही सुनते आ रहे हैं, बचपन से कुछ और मानते आ रहे हैं, और आज आप हमें नई बात बता रहे हैं। ऐसे में आपकी बात ठीक मानें या अब तक जो सारी दुनिया मानती आ रही है, वो ठीक मानें?

यहां मेरा उत्तर यही होगा कि **इस विषय की जो पुस्तक प्रमाण है, वो है– वेद, दर्शन शास्त्र, उपनिषद्, मनुस्मृति, सत्यार्थ प्रकाश आदि–आदि,** उसे उठाकर देख लीजिए। ये जो ऋषियों के बनाए गए ग्रंथ हैं, वेदों पर जो व्याख्यान ऋषियों ने लिखे हैं, वो प्रामाणिक पुस्तकें हैं। उन पुस्तकों के प्रमाण से हम इस विषय को प्रस्तुत करने का प्रयत्न करेंगे। ऋषियों से, वेदों से बाहर हम नहीं जाएंगे। इन्हीं के आधार पर हम जो भी कहेंगे, सच–सच कहेंगे। जैसे न्यायालय में लोग 'गीता' पर हाथ रखकर कसम खाते हैं कि जो कुछ कहूंगा, सच–सच कहूंगा, सच के सिवाय कुछ नहीं कहूंगा। ऐसे ही मैं भी आपके सामने शपथ लेता हूँ कि जो भी कहूंगा, वेदों की, ऋषियों की बात कहूंगा, इसके अलावा कुछ नहीं कहूंगा। अतः आप भी उसी भावना से, उसी दृष्टि से इस विषय को पढ़ें–सुनें और समझने का प्रयत्न करें।

कर्मफल के दस नियम

क्या नियम होंगे कर्मफल के? **पहला नियम है– अच्छे कर्म का अच्छा फल। दूसरा नियम है– बुरे कर्म का बुरा फल। तीसरा नियम है– मिश्रित कर्म का मिश्रित फल।**

चौथा नियम है– पहले कर्म, बाद में फल। ठीक है न? या उलट दें इसको। पहले फल और बाद में कर्म। ये ऐसा नहीं चलेगा। एक व्यक्ति से कहो कि पहले छह महीना जेल में रहो, फिर बाद में चोरी कर लेना। क्या वो स्वीकार करेगा? नहीं करेगा। वो कहेगा– जब तक मैंने चोरी नहीं की, मुझे जेल में कैसे डाल सकते हैं? जब तक मैंने कर्म नहीं किया, आप दण्ड कैसे दे सकते हैं? तो न्याय का चौथा नियम यही है– पहले कर्म और बाद में फल। विद्यार्थी पहले परीक्षा देगा, उसके बाद में उसको नम्बर मिलेंगे। कोई टीचर एडवांस में फल नहीं देगा, एडवांस में नम्बर नहीं देगा। वह यह नहीं कहेगा कि, चलो, 80 प्रतिशत अंक ले जाओ, बाद में तुम परीक्षा देते रहना।

पाचवां नियम– जो व्यक्ति कर्म करे, उसी को फल। परीक्षा कोई और दे और नम्बर किसी और को दे दें, चलेगा? अन्यों को फल देना, नहीं चलेगा। ये पाचवां नियम है।

छठा नियम– जितना कर्म, उतना फल। कम भी नहीं, अधिक भी नहीं। एक महीने नौकरी की तो कितने महीने का वेतन मिलना चाहिए? एक महिने का।

एक व्यक्ति ने पूछा कि क्या व्यक्ति को बुरे कर्म के बाद अन्य सभी योनियों को भोगना पड़ेगा? मैंने बताया कि एक व्यक्ति ने 20 हजार रूपए की चोरी की, दूसरे व्यक्ति ने दो अरब रूपये की चोरी की। वस्तुतः चोरी दोनों ने की, इसलिए दोनों अपराधी हैं। निःसंदेह दोनों को दण्ड मिलेगा। लेकिन दण्ड की मात्रा दोनों की समान नहीं बल्कि कम–अधिक होगी। यदि दोनों को बराबर दण्ड दिया जाए, तो यह न्याय थोड़े ही होगा, यह तो अन्याय होगा। **एक ने अपराध थोड़ा किया, तो उसको थोड़ा दण्ड। एक ने अपेक्षाकृत अधिक अपराध किया, तो उसको अधिक दण्ड, यह न्याय है।** जिसने थोड़ा अपराध किया, वह कम योनियों में धक्का खाएगा। जिसने ज्यादा अपराध किए, वो ज्यादा योनियों में जाएगा।

जब पाप कम–अधिक करते हैं, तो फल भी कम–अधिक होना चाहिए। अगर एक मरा वो भी चौरासी लाख योनियों में डाल दिया, दूसरा मरा, वो भी चौरासी लाख योनियों में, तो यह न्याय नहीं है। जिसने जितने कर्म किए हैं, उसको उतना दंड मिलेगा। जिसने बीस प्रतिशत पाप अधिक किए, उसको उतने कर्मों का दंड भोगने के लिए दस–बीस, पच्चीस–पचास योनियों में चक्कर काटना पड़ेगा। इसलिए सब को 84 लाख योनियों में नहीं जाना। वो कितनी योनियों में चक्कर काटेगा, वो भगवान जाने, हम नहीं जानते।

मान लीजिए कि भारत के संविधान में 500 कानून लिखे हैं– किसी ने एक कानून तोड़ा तो उसका दण्ड मिलेगा, दूसरा तोड़ा तो उसका दण्ड मिलेगा। जितने कानून हैं, उतने दण्ड भी हैं। तो 500 कानून और 500 दण्ड। क्या कोई व्यक्ति सबके सब 500 के 500 कानून तोड़ता है? नहीं तोड़ता और उसने दो कानून तोड़े, चार तोड़े और उसको 500 कानून तोड़ने के दण्ड दिए जाएं, क्या ये न्याय है? नहीं है। उसने 4 कानून तोड़े तो 4 दण्ड मिलेंगे। 6 कानून तोड़े तो 6 दण्ड मिलेंगे। और अगर 10 कानून तोड़ने पर 500 दण्ड दिए जाएं तो वो न्याय नहीं कहा जाएगा।

अब मेरा प्रश्न है कि इस संसार में जितने भी लोग हैं, क्या सबके सब लोग बराबर मात्रा में पाप करते हैं या कम अधिक? कम अधिक। और सबको आप 84 लाख योनियों में डाल दो तो क्या ये न्याय होगा? नहीं होगा। ईश्वर न्यायकारी है या अन्यायकारी है? जब वो न्यायकारी है तो सबको 84 लाख में क्यों डालेगा? जो जितनी गलती करेगा, उतना दण्ड भोगेगा। कोई 2 योनियों में जाएगा, कोई 10 में जाएगा, कोई 20 में जाएगा। जितने पाप किए, उतना दण्ड भोगेगा। और वापस मनुष्य बनेगा।

सातवां नियम– यदि कोई व्यक्ति कर्म करे तो उसका फल उसको

अवश्य देना चाहिए या माफ कर देना चाहिए? फल देना चाहिए। कर्म न किया जाए तो फल भी नहीं देना।

कर्म को जानकर ही ठीक–ठीक फल दिया जा सकता है। ये आठवां नियम है। कोई व्यक्ति न्यायाधीश है और वो न्यायालय में बैठकर कर्मों का फल देता है, न्याय करता है। क्या वो बिना मुकदमा सुने ठीक–ठीक न्याय कर पाएगा? नहीं कर पाएगा। कर्मफल ठीक–ठीक देने का एक कारण ये भी होगा कि उसको पहले पता तो हो कि अपराधी कौन है, किसने अपराध किया, क्या अपराध किया, कहां पर किया, कितना किया, कैसे किया? उसका प्रमाण लाओ, जब तक प्रमाण नहीं मिलेगा, उसका निर्णय ठीक–ठीक नहीं हो पाएगा।

नौवां नियम– ये तो जान लिया कि अमुक व्यक्ति ने ये कर्म किया। बुरा किया, इतना किया, ऐसे किया, यहां किया। इस प्रकार उसके किए गए कर्म को जान लिया। प्रमाण भी मिल गया। उससे सिद्ध हो गया कि ये व्यक्ति अपराधी है। अब बात है फल की।

यदि फल देने वाले न्यायाधीश को भारतीय दंड संहिता (आईपीसी–इंडियन पीनल कोड) का पता नहीं है कि किस अपराध का, कितने अपराध का क्या दण्ड दिया जाए तो क्या वो ठीक–ठीक न्याय कर पाएगा? तो **नौवां नियम ये हुआ कि कर्म को जानने के साथ–साथ फल को जानना भी आवश्यक है।** इसके बिना भी ठीक से न्याय नहीं हो पाएगा।

दसवां नियम है– **अधिकारी व्यक्ति ही कर्म का फल देगा,** चाहे जो व्यक्ति नहीं। जैसे पहले कहा था कि सड़क पर चलने वाले व्यक्ति को ये अधिकार नहीं है कि चोर को दण्ड देना शुरु कर दे। किसको अधिकार है? न्यायाधीश महोदय को अधिकार है दण्ड देने का। हर आदमी दण्ड नहीं दे सकता। उसको अधिकार नहीं है। तो ये दस नियम हुए कर्मफल के।

कर्मफल का ज्ञान होना सुधार का कारण है

आज से करोड़ों वर्ष पहले सृष्टि के आरंभ में जब ईश्वर ने मनुष्य (शरीर) को इस जगत में उत्पन्न किया तब उसने चार वेदों का ज्ञान भी दिया। जिनमें सांसारिक जीवन कैसे जिएं और मोक्ष कैसे प्राप्त करें, आदि ये सब प्रकार की विद्याएं बताई गई हैं। ये जो मोक्ष प्राप्त करने की विद्या है, इसका नाम ''अध्यात्म विद्या'' है। इस विद्या में मुख्य रूप से आत्मा, परमात्मा, कर्मफल, पुर्नजन्म, स्वर्ग–नरक, बंधन–मोक्ष आदि आदि इन विषयों पर विचार किया जाता है। तो जिस तरह हमें अपना जीवन अच्छी प्रकार से जीने के लिए भौतिक साधन जैसे मकान, भोजन, वस्त्र, कम्प्यूटर, रेडियो, टेलिविजन आदि चाहिए, इसी तरह से

आत्मा को स्वस्थ–आनंदित रखने के लिए भी कुछ विद्या की आवश्यकता होती है। जिसे हम योग या अध्यात्म विद्या के नाम से जानते हैं। हम अपना जीवन कैसे जिएं, हम सोचें कैसे, बोलें कैसे और आचरण कैसे करें? क्या करें, क्या न करें, क्या ठीक है और क्या गलत है। इन बातों को जानना बहुत आवश्यक है। **आज अधिकांश व्यक्तियों को यही पता नहीं है कि मैं कौन हूँ, मैं कहां से आया हूँ, मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है, मैं कुछ भी काम कर रहा हूँ तो क्यों कर रहा हूँ? इसलिए प्रायः वे दिशाहीन जीवन जी रहे हैं।**

अगर विद्यार्थियों से कहा जाए कि एक वर्ष तक खूब पढ़ाई करो और वर्ष के अंत में परीक्षा होगी, और जो परीक्षा में अच्छे नम्बर लाएगा, उसको ईनाम दिया जाएगा तो विद्यार्थी पढ़ेंगे। यदि यह कहा जाए कि पढ़ाई तो खूब अच्छी तरह पूरी करो, लेकिन परीक्षा नहीं होगी, कोई नम्बर नहीं आएगा, ईनाम–मैडल आदि नहीं मिलेगा, कुछ नहीं दिया जाएगा। अब बताईये क्या विद्यार्थी पढ़ेंगे? नहीं पढ़ेंगे। परीक्षा होगी तो पढ़ने में मेहनत करेंगे और परीक्षा ही नहीं होगी तो क्यों मेहनत करेंगे? इसी बात से हमारे विचार में, चिन्तन में, व्यवहार में अन्तर आ जाता है। इसी तरह से **यदि हमें बताया जाए कि मरने के बाद दूसरा जन्म होगा और हमारे अच्छे–बुरे कर्मों का आगे फल मिलेगा। अच्छे काम करेंगे तो ईनाम मिलेगा। बुरे काम करेंगे तो दण्ड मिलेगा। अगर ये बताया जाए तो व्यक्ति कैसे काम करेगा? अच्छे करेगा।** और यदि ये बताया जाए कि बस यही पहला और आखिरी जन्म है, न इससे पीछे कोई जन्म था और न मरने के बाद कोई जन्म है। खाओ–पीओ–भोगो। फिर कैसे काम करेंगे? फिर जब दण्ड तो मिलना नहीं है, तो जो मर्जी आए, करो। इसलिए इस बात को जानना बहुत आवश्यक है कि मरने के बाद दूसरा जन्म होगा या नहीं?

अगर हम इन नियमों पर बार–बार चिंतन करेंगे, मनन करेंगे और गहराई में उतरेंगे, फिर समझने की कोशिश करेंगे तो हमारे बहुत सारे प्रश्न हल हो जाएंगे, बहुत सारी समस्याएं हल हो जाएंगी, बहुत सारी भ्रांतियां दूर हो जाएंगी। और हमें ये भी पता चल जाएगा कि कैसे जीना चाहिए, कैसे सोचना चाहिए, कैसे बोलना चाहिए, कैसे काम करना चाहिए?

जैसे कि इन नियमों में सातवां नियम बताया था कि कर्म का फल माफ नहीं होगा। अगर ये नियम समझ में आ जाए तो लोग फटाफट सुधर जाएंगे। आप यही तो चाहते हैं कि देश बिगड़ रहा है, इसका सुधार होना चाहिए। वो सुधार इसी नियम से होगा कि कर्म का फल माफ नहीं होगा। एक मोटा सा दृष्टांत देता हूँ। मान लो, यहां बिजली की तार है और इसमें 220 वोल्ट का करंट है और कोई व्यक्ति इस तार को छू ले तो क्या होगा? दण्ड मिलेगा न। आप इस

बात को समझते हैं, बिजली का तार छुआ जाए तो तुरंत दण्ड मिलेगा। जैसे ये बात आपको अच्छी तरह समझ में आ गई, 100 परसेंट आ गई कि बिजली का तार छूते ही दण्ड मिलेगा। हम अगर झूठ बोलेंगे, चोरी करेंगे, धोखा देंगे, बेईमानी करेंगे तो ईश्वर हमको कुत्ता बनाएगा, सांप बनाएगा, उल्लू बनाएगा, गधा बनाएगा, क्या ये बात समझ में आई? सबको नहीं आई, किसी–किसी को आई। जिसको समझ में आई, वह झूठ नहीं बोलेगा। जिसको समझ में आई, बिजली का तार माफ नहीं करेगा, वह बिजली का तार नहीं छुएगा। जिस दिन ये समझ में आ जाएगा कि हम झूठ बोलेंगे तो भगवान कुत्ता, सांप, उल्लू, बकरी बनाएगा, बरगद का पेड़ बना देगा तो 200–500 साल तक खड़े रहना पड़ेगा, दण्ड भोगना पड़ेगा तो लोग झूठ बोलना, चोरी करना, छल–कपट करना बंद कर देंगे, अपने भाई का हिस्सा नहीं मारेंगे।

आज तो यहां व्यापारी एक दूसरे को धोखा देते हैं। भाई एक दूसरे को धोखा देते हैं। बाप बेटे के साथ गड़बड़ चल रही है। कितनी घटनाएं रोज अखबार में छपती हैं। ये सारी गड़बड़ इसीलिए है कि लोग कर्मफल का सिद्धांत जानना–समझना नहीं चाहते। इसको हम समझने का प्रयास करें तो हमारी बहुत सारी समस्याएं हल हो जाएंगी और हम बहुत अच्छे काम करेंगे, शुभ–कर्म करेंगे। और कोशिश करेंगे कि हम निष्काम–कर्म करें और फटाफट इस दुनिया के चक्कर से छूट जाएं। मोक्ष प्राप्त करें, ऐसा भी हमारे मन में धीरे–धीरे आएगा। चलो मोक्ष तो दूर की बात है, कम से कम ये जन्म तो सुधार लें। फिर अगला भी सुधार लेंगे।

विदेशों में अमेरिका, इंग्लैंड आदि देशों में ऐसा नियम बना रखा है कि विद्यार्थी को दण्ड नहीं दे सकते, उसकी पिटाई नहीं कर सकते। ये विदेशी सभ्यता के कानून हैं। अपने देश वालों ने भी नकल करके यहां ये लागू कर दिया। उन्होंने उसके परिणाम नहीं देखे कि परिणाम क्या होगा? बच्चों को मत पीटो तो फिर सवाल उठता है कि बड़े को क्यों पीटो? उनको भी अपराध करने पर छोड़ क्यों नहीं देते? जब बड़े को नहीं छोड़ते तो बच्चे को क्यों छोड़ा? बच्चे को छोड़ा तो बड़े को भी छोड़ो? फिर देखेंगे देश कैसे चलता है? बड़े–बड़े अपराधियों को छोड़ देंगे क्या? नहीं छोड़ेंगे। इसलिए मैं सुनाता हूँ कि बच्चा हो या बड़ा, दण्ड के बिना कोई नहीं सुधरता। ये ईश्वर का नियम है, वेदों में लिख रखा है।

दण्ड का प्रकार अलग–अलग हो सकता है। दण्ड गलती के हिसाब से दिया जाता है। दण्ड का प्रयोजन अपना गुस्सा उतारना नहीं है। दण्ड देने

का प्रयोजन है– अपराधी का सुधार करना। जिसने गलती की, उसका सुधार करो ताकि वह आगे गलती न करे। जब तक आप उसको दण्ड नहीं देंगे, वो सुधरेगा नहीं।

जब पुलिस वाले खड़े होते हैं, तब आदमी लालबत्ती पर रुकते हैं और जब पुलिस वाले नहीं हैं तो भाग जाते हैं। तो दण्ड के बिना कोई सुधरता नहीं, बच्चा हो या जवान हो, बूढ़ा हो, कोई नहीं सुधरता।

ईश्वर हमारे पाप का दण्ड माफ इसीलिए नहीं करता क्योंकि वह जानता है कि मैंने माफ कर दिया तो ये और ज्यादा गुना पाप करेगा। ईश्वर यदि पाप का दण्ड माफ कर देगा तो जो पाप नहीं करता वो भी शुरू कर देगा। वो ये सोचेगा कि दण्ड तो मिलता ही नहीं तो मैं भी क्यों न करूं गड़बड़। वो भी शुरू हो जाएगा।

बच्चों को ये नियम बना रखा है कि उनको डांटो मत, उनको पीटो मत, उनको दण्ड मत दो, ये नियम गलत है। इसका परिणाम आप अमेरिका में देख सकते हैं। वहां के बच्चे चरित्रहीन हैं, बिगड़े हुए हैं, बहुत बुरी हालत है उनकी, किसी का नियंत्रण नहीं है, किसी के अनुशासन में नहीं चलते। इसलिए व्यक्ति का निर्माण इससे नहीं होता, दण्ड का होना आवश्यक है।

कभी न कभी तो फल मिलेगा, भाग्य बदलेगा

माता–पिता से लेकर न्यायाधीश तक ये सारे के सारे कर्मफल प्रदाता तो हैं, लेकिन एक तो ये सारे कर्मों को पूरी तरह से नहीं जान पाते हैं और कई बार राग–द्वेष आदि रखने के कारण कर्मों का फल कम या अधिक भी दे देते हैं। इसलिये यदि जिन कर्मों का फल माता–पिता, राजा आदि द्वारा आधा–अधूरा दिया जाता है अथवा बिल्कुल भी नहीं दिया जाता है, तो उन सब बचे हुये कर्मों का फल अंत में ईश्वर के द्वारा प्रदान किया जाता है। इसलिए कर्म कभी व्यर्थ नहीं जाता है।

जो कार्य करता है, वही उसका फल भोगता है

इस जगत् में कौन अपने कर्म का फल नहीं भोगता है? जो कार्य करता है, वही उसका फल भी भोगता है। आज नहीं तो कल, कर्म ही फल देता है। **जिस–जिस मनुष्य ने अपने–अपने पूर्वजन्मों में और पूर्व काल में जैसे–जैसे कर्म किये हैं, वह अपने ही किए हुए उन कर्मों का फल सदा अकेले तो भोगता ही है।** कर्म बिना फल दिये कभी नष्ट नहीं हो सकते। शास्त्र कहता है–

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्। (महाभारत)
येन येन यथा यद् यत् पुरा कर्म समीहितम्। तत्त देकरो भुंक्ते नित्यं विहितमात्मना। (महाभारत अनुशासन पर्व, 6–10)
नाभुक्तं क्षीयते कर्म कल्पकोटिशतैरपि।। (आत्रि स्मृति)
यथा धनेसहस्त्रेषु वत्सो गच्छति मारतम्।
तथा यच्च कृतं कर्म कर्त्तारमनुगच्छति।। (चाणक्य नीति, 13/14)

कर्म शुभ हों या अशुभ, चाहे वह ज्ञानपूर्वक किए गए हों या अज्ञान पूर्वक, उनका फल अवश्य भोगना ही पड़ता है। करोड़ों जन्म, कल्प सृष्टि भी क्यों न बीत जाए, बिना फल भोगे उन कर्मों का क्षय नहीं होता।

आत्मा के द्वारा किए गए दोषों का फल निश्चित रूप से उसी जिम्मेदार आत्मा को भोगना पड़ता है। जैसे उधार ले लिया हो लेकिन न चुकाया हो तो वह उधार कर्जदार के मन को बांध के रखता है, वैसे ही किया हुआ पाप कर्म भी इस लोक या परलोक में फल भोगे बिना छाया के समान पीछा नहीं छोड़ता। अतः अच्छा हो या बुरा, भविष्य जैसा भी हो, उसे बनाना हमारे हाथ में है। प्रायश्चित्त आदि साधनों से पाप का संस्कार दबता है, लेकिन पाप के फल से नहीं बचा जा सकता।

आत्मा के शरीर छोड़ते ही, घर, घर पर रह जाता है तथा घरवाले श्मशान में छूट जाते हैं। केवल पाप तथा पुण्य ही उसके साथ में रह जाते हैं। इसे कहते हैं– **अपनी करनी, अपने साथ।**

पूर्व जन्म में प्राणी जो कर्म करता है, वही उसके इस जन्म में फल देता रहता है। **इस जन्म में जो कर्म करता है, वह कर्म इस जन्म में भी फल प्रदान करता है और बाकी का अगले जन्म में भी।** अपने अनिवार्य कर्मफल के आगे कोई जोर नहीं चल सकता। उद्यम न करने पर भी भाग्य द्वारा नियोजित पूर्व जन्मों में किया हुआ कर्म शुभ–अशुभ, सुख–दुःख रूपी फल प्रदान करता है। **वह भाग्य का प्रभाव इस मनुष्य जन्म में अच्छा शरीर, अच्छा परिवार, अच्छा स्थान मिलने तक सीमित रहता है।** जन्म मिलने के बाद पूर्वकृत कर्म जनित भाग्य समाप्त होने से वह उसके प्रभाव से स्वतंत्र हो जाता है।

जब से बालक होश संभाल लेता है, जब से उसे अच्छे–बुरे की समझ (पांच–सात वर्ष की अवस्था में) आने लगती है, जब से बालक बुरा कर्म करते हुए ईश्वर की ओर से भय–शंका–लज्जा की अनुभूति करने लगता है और अच्छा कर्म करते समय ईश्वर की ओर से आनंद–उत्साह और निर्भीकता की अनुभूति करने लगता है अथवा जिस अवस्था में बच्चे को काम करने पर होने वाली

हानियों का या लाभ का पता चल जाए तो तब से वह पूरा सुख–दुख फल बनाने वाले कर्मों को करना प्रारंभ कर देता है। तात्पर्य है कि कर्मों का फल पूरी मात्रा में मिलता है। जब बालक को पूरी समझ नहीं होती तो उस समय किए कर्मों का फल भी उसे कम मात्रा में मिलता है, पूरा नहीं।

जन्म से अपाहिज संतान, ''माता–पिता और संतान'', इन तीनों लोगों का कर्मफल है। इसीलिए जन्म से ही व्यक्ति विकलांग और मंद–बुद्धि पैदा हुआ। तीनों लोगों के कर्म आपस में मिलते–जुलते हैं। इसलिए ईश्वर ने सोच–समझकर ऐसी संतान, ऐसे माता–पिता के यहाँ भेजी है। संतान के भी कर्म खराब हैं, उसको विकलांग बनाना है और माता–पिता के भी खराब हैं, उनको विकलांग संतान देनी है। तो तीनों मिलके अपना कर्मफल भोगेंगे। यह परमात्मा का कर्मफल विधान है। इसका प्रमाण 'न्याय–दर्शन' में लिखा है। कई बार ऐसी संतान को अशुभ मान कर उसे ही जिम्मेदार मान लिया जाता है, जबकि उस संतान की उत्पत्ति के लिए माता–पिता के कर्म भी जिम्मेदार हैं।

पूर्व जन्म के संस्कार व विद्या इतने प्रबल हों कि पांच साल के बच्चे को पच्चीस–तीस नहीं, तो बारह–पंद्रह साल के बच्चे जितनी योग्यता प्राप्त हो जाए। वह और मेहनत करे, तो आठ–दस साल की उम्र में पच्चीस–तीस वर्ष के बराबर योग्यता अर्जित कर सकता है। अपवाद के रूप में कभी–कभी ऐसा हो सकता है। यह पूर्व जन्म के संस्कारों व विद्या पर निर्भर है।

बालक को ईश्वर ने जिस माता–पिता के यहाँ भेजा, उस दिन माता–पिता की जो स्थिति है, वहाँ तक तो उसका कर्मफल है। उस के बाद उसमें बिगाड़ भी हो सकता है, सुधार भी हो सकता है।

मान लीजिए, एक अच्छे सेठ के यहाँ एक आत्मा को ईश्वर ने भेजा। जिस समय आत्मा को सेठ के परिवार में भेजा, उस समय सेठ बहुत संपन्न था। जन्म होने के दो तीन दिनों बाद बेचारे सेठ का दिवाला पिट जाने से वो गरीब हो गया। जिस समय ईश्वर ने आत्मा को उस परिवार में भेजा उस समय उस बालक के कर्मफल के अनुसार भेजा। आगे का भोग घट भी सकता है, बढ़ भी सकता है। उसकी गारंटी कुछ नहीं।

जैसे कि, जन्म होने के बाद चपरासी को एक करोड़ की लॉटरी लग जाए, तो पहली बात यह है कि एक करोड़ की लॉटरी लगना कोई कर्म–फल नहीं था। दूसरी बात है कि लॉटरी खरीदना तो जुआ है। वेद में 'जुआं खेलना' मना किया गया है। अतः जुए से जो पैसा मिलता है, वह कोई अच्छे कर्म का फल नहीं है। जबकि लोग यह समझते हैं, कि लॉटरी लगने पर मिलने वाला धन किसी पिछले शुभ कर्म का फल है। ऐसा समझना गलत है।

भाग्य तो एक बार जन्म से मिल गया, सो मिल गया। बाकी तो पुरूषार्थ बलवान है। यह भाग्य से भी बलवान है। **पुरूषार्थ अच्छा है, तो भविष्य भी अच्छा है। और पुरूषार्थ खराब है, तो भाग्य भी सो जाएगा।** भविष्य जानने के लिए किसी से पूछने की जरूरत नहीं है। देखो, हम किसी ज्योतिषी से अपना भविष्य पूछते नहीं।

जैसी करनी, वैसी भरनी

जो जैसा कर्म करता, वह वैसा ही फल भोगता। जैसा बीज, वैसा फल, ऐसा नहीं की बोई गेहूं और काटी धान, बोए बबूल और काटे आम। अतीत में जिस तरह से किया गया कर्म, भविष्य में उसी रूप में प्रकट होगा। इसलिए भाग्य के संबंध में एक बात निश्चित है कि वह वर्तमान कर्म के हिसाब से बदलेगा।

जैसे खेत में बीज बोने के बाद खाद–पानी डालने से फसल बढ़ती है, वैसे ही पिछले कर्म करने के बाद नए पुरुषार्थ से कर्मफल भी बढ़ता है। अपने किए हुए शुभ और अशुभ कर्मों का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। प्रारब्ध–कर्म अपना फल बिना दिए नष्ट नहीं होता है, जैसे लक्ष्य को सटीक निशाना लगा कर छोड़ा गया बाण अपना फल बिना दिए नहीं रहता है। इस प्रकार की सोच रखने वाला व्यक्ति पुरूषार्थी बनता है।

कर्म का असली फल क्या है?

वास्तव में सुख और दुःख ही कर्म का फल होता है। संसार में पत्नि–पुत्र, धन–संपत्ति, पद–प्रतिष्ठा, सेवक आदि को ही फल के रूप में माना जाता है, जबकि ये सुख–दुःख के साधन मात्र हैं। जैसे अच्छे कर्मों का परिणाम मनुष्य जन्म के रूप में और निष्काम कर्मों का परिणाम मोक्ष माना जाता है। लेकिन वास्तव में ये सुख प्राप्ति के और दुःख निवृत्ति के साधन हैं। इसमें शास्त्र का प्रमाण है– **प्रवृतिदोषजनितोऽर्थः फलम्। (न्याय दर्शन 1/1/20)** अर्थात फल की उत्पत्ति दो चीजों के मिलने से होती है। पहला– प्रवृत्ति अर्थात क्रिया और दूसरा– दोष अर्थात राग–द्वेष की भावना। राग–द्वेष की भावना से युक्त कर्म से उत्पन्न अर्थ का नाम कर्म–फल है। यहां सकाम कर्मों की बात हो रही है। इसी तरह, निष्काम भावना से किए गए कर्म से जो चीज उत्पन्न होती है, उस कर्मफल का नाम मोक्ष है। **तत्सम्बन्धात् फलनिष्पत्तेस्तेषु फलवदुपचारः। (न्याय दर्शन 4/1/54)** स्त्री, पुत्र, सोना, चांदी, भूमि, भवन, वाहन, मान, पद, प्रतिष्ठा का सुख–दुख के साथ संबंध है। ये यदि आपके पास उपलब्ध हैं, तो आपको इनके माध्यम से सुख मिलेगा, नहीं हैं तो नहीं मिलेगा।

इसलिए असली फल है, सुख–दुख। और सुख–दुःख रूपी फल की प्राप्ति होती है, इन स्त्री, धन आदि साधनों से। इसलिए स्त्री आदि सुख के साधनों को फल कह दिया जाता है। **आत्मेन्द्रियमनोऽर्थसन्निकर्षात् सुख–दुःखे। (वैशेषिक दर्शन 5/2/15)**

जीवात्मा का मन, नेत्र, कान आदि इन्द्रियों तथा रूप, रस आदि विषयों के साथ सम्बन्ध होने पर सुख–दुःख रूप फल उत्पन्न होते हैं। जैसे हम आत्माओं का मन से, मन का आंख से संबंध जुड़ने पर, हमें बाहर की भोजन, वस्त्र, भवन आदि वस्तुएं दिखने लगती हैं। बाहर की दिख रही वस्तुएं, हमें मन को कभी सुखी भी करती हैं तो कभी दुःखी भी करती हैं।

पुरूषार्थ से भाग्य बनता है

सभी जीवात्मा एक जैसे हैं। सबका स्वरूप मूल रूप से समान है। **जिस काम को एक जीवात्मा कर सकता है, उस काम को दूसरा भी कर सकता है।** एक व्यक्ति एम.ए. कर सकता है तो दूसरा क्यों नहीं कर सकता है? दूसरा भी कर सकता है, तीसरा भी कर सकता है। जो पुरूषार्थ करेगा, वह एम.ए. कर लेगा, पी.एच.डी. कर लेगा, एम.एस.सी. कर लेगा, एम.टेक हो जाएगा, एम.बी.ए. हो जाएगा, डॉक्टर भी बन सकता है, मोक्ष में भी जा सकता है। बारी–बारी से सब मोक्ष में जाएंगे।

हमारी बुद्धि भी बढ़ती–घटती है, धीरे–धीरे बुद्धि का विकास होता है। आज से दस वर्ष पहले क्या आपका ज्ञान इतना ही था जितना कि आज है? बढ़ गया न, और अगले दस साल में और कितना बढ़ जाएगा? ऐसे पुरूषार्थ करने से, अनुभव बढ़ने से, ज्ञान का स्तर बढ़ता है। **यदि व्यक्ति में पुरूषार्थ की और थोड़ी ज्ञान–विज्ञान की कमी है। वह व्यक्ति पुरूषार्थ करेगा तो आगे बढ़ जाएगा, उसका ज्ञान बढ़ेगा।** कभी ऐसा भी होता है कि ज्ञान बढ़ने के बाद भी व्यक्ति आलसी–प्रमादी हो सकता है। लेकिन अंत में पुरूषार्थ तो उसे करना पड़ेगा।

ऐसा भी होता है कि व्यक्ति ने कुछ पुरूषार्थ किया, उसकी गति कम है। उसको थोड़ा ज्ञान हुआ, कुछ–कुछ समझ में आया, फिर आगे पुरूषार्थ नहीं किया। एक व्यक्ति पुरूषार्थ तो बहुत करता है, पर बुद्धिपूर्वक नहीं करता, बुद्धि भी साथ में चाहिए। कितने ही लोग खूब मेहनत करते हैं। पर धंधे में बुद्धि से काम नहीं करते, इसलिए बहुत नहीं कमा पाते। कई लोग बुद्धि से काम लेते हैं, मेहनत कम करते हैं, वो बहुत कमा लेते हैं। इसलिए **बुद्धि और पुरूषार्थ दोनों चाहिए। ऐसे दोनों को मिलाकर साथ चलेंगे तो फिर जल्दी विकास होगा।** यदि मनुष्य पुरूषार्थ करता है और उसका फल नहीं मिलता या कम मिलता है, तो निःसंदेह फल देने वाला दोषी है।

कुछ कर्मों का फल इस जन्म में नहीं मिला तो वो अगले जन्म (नेक्स्ट) में मिलेगा। अगर अगले जन्म में भी नहीं मिला तो तीसरे में मिलेगा, चौथे, दसवें में, पचासवें में, जब भी उसका नम्बर आएगा तब उसका फल मिलेगा। ये कर्मफल की व्यवस्था है, कर्मफल का सिद्धांत है। कर्मफल के विषय में बताया था कि कुछ कर्मों का फल इस जन्म में मिल सकता है और किसी कर्म का फल दो साल में, पांच साल में, बीस साल में, पचास साल में मिलता है। इस प्रकार से कर्मों का फल जल्दी भी मिलता है और देरी से भी।

एक व्यक्ति ने पूछा कि सारे कर्मों का फल इसी जन्म में क्यों नहीं मिल जाता? मैंने उससे पूछा– आप एक महीने में जितने पैसे कमाते हैं, क्या एक महीने में वे सारे खर्च कर देते हैं या कुछ बचाते भी हैं? बचाते हैं। क्यों बचाते हैं? वे आगे काम आएंगे। ऐसे ही ईश्वर भी कुछ कर्म आपके इस जन्म में बचा के रखेगा। सारे खिला दिए तो अगले जन्म में क्या खाओगे? इसलिए सारे कर्मों का फल ईश्वर एक जन्म में नहीं देता ताकि हमारी व्यवस्था ठीक–ठीक बनी रहे।

ये कर्मफल की बात हुई कि कुछ कर्मों का फल इस जन्म में, कुछ का अगले जन्म में, कुछ का और अगले जन्म में, कुछ कर्मों का फल मोक्ष में भी मिलता है। और मोक्ष में जाने के पहले भी कुछ कर्म बचे रह जाते हैं। उन बचे हुए कर्मों का फल मोक्ष से लौटकर मिलता है। जब तक किन्हीं कर्मों के फल हमें मिल नहीं जाते हैं, तब तक कर्म हमारे बचे रहते हैं, तब तक वो संचित रहते हैं। करोड़ों साल तक भी अरबों–खरबों वर्ष तक भी वो जमा रहते हैं।

यह वेदों का, ऋषियों का सिद्धांत है कि जब तक किसी कर्म का फल हम भोग नहीं लेंगे, तब तक वो मिटेगा नहीं, नष्ट नहीं होगा। जिनका फल मिलना शुरू नहीं हुआ, तब तक वे संचित रहेंगे।

कर्म, हमारे भाग्य निर्माता

यदि मनुष्य सर्वथा कर्महीन निष्क्रिय हो जाए तो उसका जीवन चलाना भी कठिन है। कहा भी है– **शरीर यात्रापि च ते न प्रसिद्धयेदकर्मणः। (गीता 3–8)** अर्थात बिना कर्म किए तो शरीर को जीवित रखने के लिए खाने–पीने, पहनने–रहने को भी नहीं मिलता। कर्म करना चाहिए लेकिन किस भाव से? **तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर। (गीता 3–19)** अर्थात अनासक्त भाव से व्यक्ति को करने योग्य कर्म का आचरण करना चाहिए। वेद कहता है कि, इच्छा बिना कर्म नहीं, कर्म बिना फल नहीं। इच्छा अर्थात कामना वाला पुरूष ही

फल आदि को ग्रहण करता है। **कोऽदात्कस्माऽअदात्कामोऽदात्कामायादात्। कामो दाता कामः प्रतिग्रहीता कामैतत्ते।। यजुर्वेद (7–48)** अर्थात ईश्वर ने कामना करने वाले पुरुषार्थियों के लिए ही अच्छे–अच्छे फल देने की व्यवस्था की है। इस प्रकार, संसार में कर्म को करने वाले जीव हैं और फल को देने वाला ईश्वर है।

अगर हमारा भविष्य पहले से बना हुआ होता तो हमें नया कर्म कुछ भी नहीं करना चाहिए था परन्तु कर्म तो हमें रोज–रोज नया–नया करना पड़ता है। दूसरी बात, आज जो हम कर रहे हैं, क्या उन नए कर्मों का फल हमें नहीं मिलेगा? क्या वे व्यर्थ में चले जाएंगे? नहीं। इसलिए यह मानकर चलना चाहिए कि **एक बार पैदा हो गए तो अब बाद का भविष्य पहले से बना हुआ नहीं होता है। जब हम कर्मों से उसका निर्माण करते हैं, तब जाकर वह बनता है।** अब प्रश्न है, बनता कैसे है?

शतपथ ब्राह्मण कहता है कि– **यन्मनसा ध्यायति तद्वाचा वदति यद्वाचा वदति तद् कर्मणा करोति। यद् कर्मणा करोति तद् अभि सम्पद्यते।।** शरीर, मन, इन्द्रियों का स्वामी जीवात्मा जैसा अपने मन से विचारता है, वैसा ही वाणी से बोलता है, और जैसा वाणी से बोलता है, वैसा ही आचरण किया करता है और जैसा आचरण करता है, उसी के अनुरूप वह सुख दुःख रूपी फल, परिणाम और प्रभावों को प्राप्त करता है अर्थात् सुख–दुःख का मूल उत्पादक वह स्वयं ही होता है। तात्पर्य है कि जैसा संकल्प होता है, वैसा ही व्यक्ति बोलता है। जैसा वचन होता है, वैसा ही कर्म होता है, और जैसा कर्म होता है, वैसा ही उसका फल यानी भाग्य होता है। इस प्रकार **हमारा कहा गया प्रत्येक अच्छा–बुरा शब्द, मन का विचार और किया गया शारीरिक कर्म ही हमारे भाग्य का निर्माण करता है। इसलिए पहले किए हुए कर्मों (पुरूषार्थ) के अतिरिक्त भाग्य और क्या है?** कुछ भी तो नहीं।

भविष्य को ढालने की शक्ति से सम्पन्न हम लोग, अपने ऐश्वर्य स्वयं बनाते हैं, हम स्वयं अपनी तकदीर का निर्माण करते हैं और कभी हम उसे भाग्य कहते हैं तो कभी कहते हैं, होनी। पूर्व के जन्मों के किए गए कर्मों के आधार पर ईश्वर ने हमें किसी स्थान–परिवार–परिस्थिति में मनुष्य का जन्म दिया और साथ में काम करने का सामर्थ्य और साधन आदि दिए। इस प्रकार पहले किए गए कर्मों का फल जाति–आयु–भोग के रूप में मिलना भाग्य कहलाता है और जो कर्म वर्तमान में किए जा रहे हैं, वह पुरूषार्थ कहलाता है। उस पुरूषार्थ का कुछ फल इस जन्म में मिल जाएगा और बाकी का अगले जन्मों में।

वेद कहता है– **''कृतं में दक्षिणे हस्ते, जयो मे सव्य आहितः।''** 'अर्थात् कर्म मेरे दायें हाथ में है, तो फल बायें हाथ में'।

लोग आलसी हैं, कर्म करना नहीं चाहते। वे केवल लकीरों को देखते रहते हैं। ''ऐ हाथ की लकीरों में किस्मत देखने वालों... किस्मत तो उनकी भी होती है, जिनके हाथ नहीं होते।'' जब हाथ ही नहीं, तो लकीरें कहाँ है उनकी? पर उनकी भी किस्मत होती हैं। किस्मत तो हमारे पुरूषार्थ में है। इसलिए इन लकीरों में कुछ नहीं रखा। ऐसा ही कहा गया है कि–

आरभेतैव कर्माणि श्रान्तः पुनः पुनः।
कर्माप्यारभमाणं हि पुरूषं श्रीर्निषेवते।। (मनुस्मृति 9।300)

बार–बार कार्यनाश होने पर, बार–बार हारा थका हुआ होने पर भी कार्यों का आरम्भ बार–बार करते ही रहें क्योंकि बराबर कार्यों को आरंभ करने वाले मनुष्य को विजय श्री, निश्चित ही मिलती है।

अर्थस्य मूलमुत्थानमनर्थस्य विपर्ययः।
चाणक्य (अर्थशास्त्र, 1।19।40)

उद्योग (प्रयत्न) ही धन–सम्पत्ति का मूल कारण है और उद्योगी न होना अनर्थों का कारण है।

उद्यमेन हि सिद्धयन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति सुखे मृगाः।।
विष्णु शर्मा (पंचतंत्र 2।141)

कार्य उद्यम से ही सिद्ध होते हैं, मनोरथों से नहीं। जैसे– सोते हुए सिंह के मुख में हिरण कभी प्रवेश नहीं करते।

अनुद्योगेन तैलानि तिलेभ्यो नाप्तुमहंति।
नारायण पंडित (हितोपदेश, प्रस्ताविका, 30)

बिना उद्योग किए कोई व्यक्ति तिल से भी तेल प्राप्त नहीं कर सकता।

जो लोग सदा परिश्रम करते रहते हैं, वे कभी निराश नहीं होते। साहसपूर्वक खड़े होने पर उनका भाग्य भी उठ खड़ा होता है। जब पूर्वजन्म के और इस जन्म के शुभ या अशुभ कर्म आगे–पीछे आज नहीं तो कल फल देने वाले हैं ही तो बुद्धिमान को शोक करने का क्या अवसर है?'' वेद कहता है कि–

उत्क्रामातः पुरूष माव पत्था। अथर्ववेद (8।1।4)

हे मनुष्य! तू ऊपर चढ़, नीचे मत गिर।

जो पाप–कर्म से रुक जाता है, वही भाग्यवान् है, परन्तु जो दुष्कर्म से नहीं रुकता, वह भाग्यहीन है।

पुरुषार्थ ही भाग्य है

पिछली पंक्तियों से यह रहस्य खुला कि **अपने भाग्य के निर्माता हम स्वयं ही हैं।** हां, सचमुच में अपने भाग्य के विधाता हम ही हैं। **आज का पुरूषार्थ ही कल का भाग्य है।** पुरूष का पौरूष ही भाग्य के रूप में परिवर्तित होता है। किए हुए पुरूषार्थ का ही भाग्य अनुसरण करता है। निःसंदेह, **कर्म में उसका फल, पुरूषार्थ में उसका भाग्य छिपा हुआ होता है।** फल देने वाले पुरूषार्थ के द्वारा अमीरी–गरीबी, मान–अपमान व सत्ता–दासता की प्राप्ति रूप फल सिद्धि का नाम ही भाग्य है।

एक 'कर्म' के ही दो भेद किए गए हैं– पूर्वजन्म में या पूर्व काल में किया हुआ कर्म 'भाग्य' है और इस जन्म में किया हुआ और आगे किया जाने वाला कर्म 'पुरूषार्थ' है। भाग्य व पुरूषार्थ पर ही यह सम्पूर्ण जगत् टिका हुआ है। **जैसे–जैसे पुरूषार्थ बढ़ता जाता है, उसका सहारा पाकर वैसे–वैसे भाग्य भी बढ़ता जाता है।**

सब कुछ नष्ट हो गया दिखने पर भी चिंता की कोई बात नहीं। तब भी एक चीज बाकी रह जाती है। भूतकाल में किए गए कर्मों के ज्ञान के आधार पर उसको जाना जा सकता है। मृत अतीत को दफनाने के बाद जो बाकी बच गई, वो चीज है, भविष्य। हां, हमारा यह भविष्य अब भी हमारे सामने है।

ठीक है कि जो हो चुका है, वह तो हमारे हाथ में नहीं है, लेकिन इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि जो होना है, वह भी हमारे हाथ में नहीं है।

न्यायकारी दैव के फल प्रदान करने के मामले में नियम यह है कि वह किसी भी व्यक्ति–विशेष को बिना पुरूषार्थ के कुछ नहीं दे सकता। इसलिए मान के चलो कि उद्यम किये बिना आपकी मनोकामनाएं पूरी नहीं होने वाली। हां, यह अलग बात है कि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को न्याय से अधिक या कम फल या बिना कुछ किए भी फल प्रदान कर सकता है। लेकिन दयालु ईश्वर की असीम दया किसी एक पर नहीं, सब पर समान रूप से बरसती है।

भाग्य में रोकने की शक्ति नहीं है

सच तो यह है कि हम जब चाहे, अपनी योजना बदल सकते हैं, जब चाहे बना सकते हैं। हमारी मर्जी है। हम कर्म करने में स्वतंत्र हैं। अपने भविष्य के निर्माता हम स्वयं हैं। **एक–एक मिनट में हम अपना भविष्य बनाते हैं। आप**

भाषा में बिगाड़ कर दीजिए, देखिए आपका भविष्य तुरंत बिगड़ जाएगा। आपकी क्रिया ठीक–ठीक चल रही है, आपका भविष्य अच्छा है। आप गलत क्रिया शुरू करो, देखो आपका भविष्य तुरंत बिगड़ जाएगा। इस प्रकार अपना **भविष्य बनाना–बिगाड़ना हमारे हाथ में है। एक–दो मिनट में हम अपना भविष्य बना सकते हैं या बिगाड़ सकते हैं।**

मनुष्य को कुमार्ग से हटाकर सुमार्ग में लगा दे और सुमार्ग से हटाकर कुमार्ग पर लगा दे, ऐसी शक्ति भाग्य में नहीं है। भविष्य का विचार कर कार्य को करने वाला और उपस्थित बाधा के प्रतिकार में समर्थ बुद्धि वाला व्यक्ति सुख को प्राप्त करता है। वह जानता है कि ब्रह्मा से कुछ लिखा कर भाग्य में वह नहीं लाया है। जन्मोपरांत, अब वह अपना सुख अपने भुजबल और बुद्धि बल से ही प्राप्त कर पाएगा।

जैसे गुरु अपने शिष्य को उसके लक्ष्य तक पहुंचा देता है, ठीक उसी तरह, पहले किया हुआ पुरूषार्थ ही एकत्रित होकर भाग्य के रूप में बदलकर अपने अभीष्ट स्थान पर ले जाता है। इसलिए हम मनुष्यों की अपनी वृद्धि और क्षय का एकमात्र कारण कर्म रूप भाग्य ही है।

ठीक है कि हम ये नहीं बता सकते कि हम आगे क्या बनेंगे, आगे क्या–क्या हमारे पास होगा। जिसके विषय में सटीक रूप से कुछ सोचा न जा सकता हो, यह वही दैव का विधान है। लेकिन हम ये जरूर अधिकार के साथ कह सकते हैं कि अगर हमने अच्छे कर्म किये तो निश्चित रुप से हमारा भविष्य सुखमय और उज्जवल होगा।

पुरुषार्थ, भाग्य से बड़ा है

पुरूषार्थ से भाग्य या संचित कर्म बनता है, और उसी के सुधरने से सब सुधर जाता है और उसी के बिगड़ने से सब बिगड़ जाता है। इसी कारण से भाग्य की अपेक्षा पुरूषार्थ बड़ा माना जाता है। **उत्कृष्ट पद की अभिलाषा वाले लोग तो पुरुषार्थ द्वारा ही उत्कृष्ट पद को प्राप्त करते हैं।**

ईमानदारी, बुद्धि और पुरुषार्थ भाग्य निर्माण के साधन हैं

भूतकाल को जानने से कोई लाभ नहीं है। जो बीत गया सो बीत गया। और वर्तमान में क्या हो रहा है, यह तो आप जानते ही हैं। इसको जानने से भी कोई लाभ नहीं है। एक भविष्यकाल की बात रही– **अगर आप ईमानदार, बुद्धिमान और पुरूषार्थी हैं, तो आपका भविष्य उज्जवल है, बस। अगर आप में बेईमानी, बुद्धिहीनता और आलसीपन आ गया, तो आपका**

भविष्य खराब है। बस, इस एक बात में सब बात आ जाती है। **तात्पर्य है कि, अंगूठियों से काम नहीं चलता है। तीन बातों से चलता है, वो नोट कीजिए।**

पहली बात है– पूरी ईमानदारी। ईमानदारी से जियो। छल–कपट–धोखा मत करो। आपका भविष्य बहुत अच्छा बनेगा।

दूसरी बात है– बुद्धिमत्ता। आपका जो भी निर्णय (डिसीजन) है, वो बुद्धिमत्तापूर्ण होना चाहिए। मूर्खता के डिसीजन नहीं होना चाहिए। जो भी मैं काम करने जा रहा हूं, इसका परिणाम क्या निकलेगा, बहुत सोच–समझकर दूरदृष्टि से काम लेना चाहिए? दूर तक सोचिए, अगर परिणाम अच्छा आएगा तो काम कीजिए। अगर उसका परिणाम अच्छा नहीं आएगा तो बंद कर दीजिए, नहीं करना। तो ये दूसरी बात हुई।

तीसरी बात है–मेहनत। अपने कार्य में कामचोरी न करें, आलस्य न करें, प्रमाद न करें, पूरी मेहनत से काम करें। आपका भविष्य बहुत अच्छा होगा। और जो इन तीन में गड़बड़ करेगा, उसका भविष्य बिगड़ेगा।

पुरूषार्थ से सारी चीजें सिद्ध हो जाती हैं। पुरूषार्थ ही इस दुनिया में सब कामना पूरी करता है। पुरूषार्थ करो, भविष्य अच्छा है। तीन बातें सीख लेनी चाहिए– पुरूषार्थ, बुद्धिमत्ता और ईमानदारी। आपका भविष्य बहुत अच्छा है।

आपकी बुद्धि, आपके परिश्रम, आपके पुरूषार्थ, आपकी ईमानदारी और आपके संस्कारों से आपका भविष्य बनता है। अपने संस्कारों को देखें, अच्छे विचार जगाएं, बुरे विचार को रोकें, अच्छे काम करें, अच्छी भाषा बोलें, अच्छा चिंतन करें, आपका भविष्य बहुत अच्छा बनेगा।

आओ, हम लोग,
ईमानदारी रूपी सर्वोत्तम नीति,
बुद्धि रूपी सर्वोत्तम नैत्र, और
मेहनत रूपी सर्वोत्तम सहारे से,
जीवन अपना.... संवार लें।

❖❖❖

अध्याय 5 कर्म का परिणाम, प्रभाव और फल

जब हम कर्म करते हैं तो उस कर्म को करने के पश्चात्, उसकी तीन प्रतिक्रियाएं होती हैं। उन प्रतिक्रियाओं के नाम हैं– (1) कर्म का परिणाम। (2) कर्म का प्रभाव। (3) कर्म का फल।

कर्म का परिणाम

जब कोई व्यक्ति मन से, वाणी से, शरीर से, कोई विशेष चेष्टा करता है, उसको कर्म कहते हैं। जब वो कर्म होता है तो उसकी एक निकटतम प्रतिक्रिया होती है। सांइस का भी एक सिद्धांत है, क्रिया की निकटतम् प्रतिक्रिया (एक्शन का नियरेस्ट रियेक्शन)। **जब भी कोई एक्शन किया जायेगा, उसका तुरंत एक रियेक्शन होगा। वो जो निकटतम प्रतिक्रिया है, उसका नाम है, कर्म का परिणाम।**

उदाहरण के लिये, कुछ बच्चे गार्डन में क्रिकेट का खेल, खेल रहे थे। एक बच्चा बैटिंग कर रहा था। सामने से बॉल आयी, उसने जोर से शॉट मारा और वो बॉल पड़ोस में एक सेठ जी के मकान की खिड़की के शीशे पर जाकर टकरायी और शीशा टूट गया। शीशा टूटने की आवाज सुनकर सेठ जी बाहर निकलकर के आये और पूछा कि किस दुष्ट ने मेरा शीशा तोड़ा? पता लगा कि इस बच्चे ने तोड़ा तो उस बच्चे को पकड़ लिया गया। सेठ ने कहा– तुमने हमारा 200 रूपये का शीशा तोड़ दिया। सेठ ने दो थप्पड़ भी लगाये, 200 रूपये जेब से निकलवाये। तो जो बच्चे ने शॉट मारा, बॉल गई और शीशे से टकरायी। यह है कर्म, और इस कर्म का परिणाम क्या हुआ? जो एक्शन हुआ तो उसका कोई न कोई रियेक्शन तो आयेगा न। **शीशे से बॉल टकरायी, यह कर्म है और टकराने से शीशा टूट गया, यह उसका परिणाम है।** यह है क्रिया की प्रतिक्रिया अर्थात एक्शन का रियेक्शन। जब भी कोई कर्म होता है, उस क्रिया की निकटतम प्रतिक्रिया, एक्शन का नियरेस्ट रियेक्शन होता है। उसको बोलेंगे, परिणाम।

कर्म का प्रभाव

जब सेठ जी को पता लगा कि मेरा शीशा टूट गया तो सेठ जी को सुख हुआ या दुःख हुआ? दुःख हुआ। यह जो दुःख हुआ, यह बच्चे के कर्म का प्रभाव

है। देखिये, कर्म कर रहा बच्चा और प्रभाव पड़ रहा है सेठ जी पर। कर्म कोई कर रहा है, प्रभाव कोई और भोग रहा है, रोज ही ऐसा होता है न? सड़क पर लालबत्ती पे ट्रैफिक जाम हो गया। कई लोग हॉर्न बजाते हैं, चलो–चलो आगे निकलो, जल्दी करो–जल्दी करो, फिर आपस में कहीं–कहीं कहा–सुनी, कुछ गर्मा–गर्मी भी हो जाती है, तो कर्म कोई और करता है, भोगना किसी और को पड़ता है।

जब कोई कर्म हुआ, उस कर्म की सूचना–जानकारी जिस–जिस व्यक्ति को मिलेगी, उस–उस पर प्रभाव पड़ेगा। सेठ जी को पता लग गया कि मेरे मकान का शीशा टूट गया तो सेठ जी पर प्रभाव पड़ेगा। सेठ जी का बेटा कॉलेज में पढ़ने गया। उसको नहीं मालूम कि मेरे घर का शीशा टूटा तो उसके बेटे पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। **यहां प्रभाव की शर्त यह है कि यदि उसकी सूचना मिलेगी तो प्रभाव पड़ेगा, सूचना नहीं मिली तो नहीं पड़ेगा।**

प्रभाव पर एक और दृष्टांत देता हूँ। एक व्यक्ति दिल्ली में रहता है। उसका एक भाई लंदन में रहता है। दिल्ली वाले व्यक्ति का एक्सीडेंट हो गया। वह हॉस्पिटल में गया, प्लास्टर चढ़ा दिया गया। उसके लंदन वाले भाई को सूचना नहीं दी गई कि दिल्ली वाले भाई का एक्सीडेंट हुआ था। दो महीने तक उसकी टांग पर प्लास्टर चढ़ा रहा। दो महीने बाद प्लास्टर खुला फिर उसकी फिजियोथेरेपी कराई गई और छः महीने में उसकी टांग बिल्कुल पहले जैसी हो गई। अब छः महीने बाद लंदन वाले भाई को सूचना दी कि आज से छः महीने पहले तुम्हारे भाई की टांग टूटी थी। जिस दिन सूचना देंगे, क्या तब से उस लंदन वाले भाई को दुःख होना शुरू होगा या नहीं होगा? होगा न। जब तक सूचना नहीं दी तब तक कोई प्रभाव नहीं पड़ा। आज सूचना दे दी, आज से प्रभाव शुरू हो गया जबकि अब उसको कोई तकलीफ नहीं है। फिर भी वो लंदन वाला भाई अब दुःखी हो रहा है। तो ये प्रभाव का उदाहरण है। यदि सूचना मिलेगी तो प्रभाव पड़ेगा, सूचना नहीं मिलेगी तो कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

कर्म का फल

मैं इस उदाहरण को ले रहा था कि कर्म किया बच्चे ने और परिणाम हुआ शीशे पर, प्रभाव पड़ा सेठ जी पर और सेठ जी ने गुस्से में आकर दो थप्पड़ रसीद कर दिए और 200 रूपये वसूल लिये। यह कर्म का फल हुआ। ऐसा परिणाम, प्रभाव व फल ही सारी दुनिया में होता है।

जो पहले कर्मफल की बात बताई गई थी, कि जब हम सकाम कर्म करेंगे, तो हमको जाति, आयु और भोग ये तीन फल मिलेंगे। और यदि निष्काम कर्म

करेंगे तो मोक्ष फल मिलेगा। मोक्ष में आनंद मिलेगा ईश्वर का।

फल का नियम बताया था कि जो कर्म करेगा, उसी को फल मिलेगा, दूसरे को नहीं। यहां शीशा किसने तोड़ा था? जो बच्चा क्रिकेट खेल रहा था उसने। तो जिस बच्चे ने शीशा तोड़ा, उसी को दंड मिलना चाहिये और उसी को दंड देंगे तो वो कहलाएगा फल।

मान लो तोड़ा किसी और बच्चे ने, और पकड़ लिया किसी और को, और उसकी पिटाई कर दी। अब क्या इसको फल माना जायेगा? फल नहीं माना जायेगा। फल तो वो तभी माना जायेगा कि जिसने कर्म किया था, उसी को दण्ड मिलना चाहिये। जो भी अच्छा किया तो ईनाम और बुरा किया तो दंड। जिसने कर्म किया, उसी को फल मिलना चाहिये। यह न्याय की बात है।

तो जैसे इस उदाहरण में हमने देखा कि **शॉट मारना एक कर्म है, शीशे का टूटना उसका परिणाम है, सेठ जी का दुःखी होना उसका प्रभाव है और बच्चे को दंड मिलना, ये उसके कर्म का फल है।** अगर हम इन तीन चीजों को समझ लेंगे, तो हमें बहुत सारे प्रश्नों के उत्तर मिल जायेंगे।

ट्रक ड्रायवर ने लापरवाही से गाड़ी चलाई और स्कूटर वाले को ठोंक दिया। यह जो ठोंक दिया, यह हुआ कर्म। और इसका परिणाम क्या हुआ? स्कूटर वाले की मृत्यु हो गई। ये है कर्म का, परिणाम। ये ड्रायवर के कर्म का परिणाम है। यह मरने वाले का कर्मफल नहीं है। प्रश्न उठा कि उसका कर्मफल नहीं तो भोगना क्यों पड़ा? इसलिये भोगना पड़ा क्योंकि उसने संसार में जन्म लिया। जन्म नहीं लेता तो स्कूटर पर नहीं आता, हाइवे पर नहीं आता तो नहीं मरता। अब जन्म ले लिया, टू–व्हीलर चला रहा है, हाइवे पर चल रहा है फिर तो कोई ठोंक भी सकता है, नहीं भी ठोंक सकता है। यह तो संयोग की बात है।

संसार में अचानक कहीं भी कुछ भी हो सकता है, किसी के साथ भी हो सकता है। ट्रक ड्रायवर ने लापरवाही की, तो स्कूटर वाला मारा गया। यह ड्रायवर के कर्म का परिणाम है, जो उस बेचारे स्कूटर वाले को भोगना पड़ा।

अब मरने वाले के परिवार वाले को जब सूचना मिलेगी, कि हमारे परिवार का एक सदस्य दुर्घटना में मारा गया तो उन सबको दुःख होगा। ये ड्रायवर के लापरवाही रूपी कर्म का प्रभाव है, जो मरने वाले के परिवार वाले दुःखी हो रहे हैं।

फिर ड्रायवर को पकड़ा जायेगा, उस पर केस चलेगा और उसको दंड मिलेगा, यह उसका फल होगा। जिसने गलती की, उसी को फल मिलेगा और फल इन्हीं दस नियमों के अनुसार मिलेगा। जहां इन दस नियमों के अनुसार

मिल रहा हो सुख–दुःख तो वहां समझ लेंगे कि यह कर्म का फल है।

जहां ये दस नियमों के विरूद्ध मिल रहा है, ये नियम लागू नहीं हो रहे और सुख–दुःख मिल रहा है तो समझ लीजिये ये कर्म का फल नहीं है। यह या तो कर्म का परिणाम है या कोई प्रभाव है, ऐसा मानना चाहिये।

कोई दुर्घटना में मर गया, सेठ के यहां चोरी हो गई, ऐसे–ऐसे नुकसान होते रहते हैं। वो सब पिछला कर्मफल मानते हैं, जबकि यह पिछला कर्मफल बिल्कुल नहीं है।

अगर ये सेठ का पिछला कर्म है, तो चोर अपराधी बिल्कुल नहीं है। उसने तो सेठ का कर्मफल दिया और वो चोरी करना कर्म का फल देना ही ईश्वर ने कहा था, तो फिर चोर को भी ईनाम देना पड़ेगा, वो आप देंगे नहीं। इससे सिद्ध हो गया कि वो कर्मफल नहीं है। तो फिर यह क्या है?

चोर ने चोरी की, वो उसका कर्म है। सेठ को 4 लाख का नुकसान हुआ, यह उसके कर्म का परिणाम है और सेठ के घर वाले सब दुःखी हो गये, यह उसका प्रभाव है। उस चोर को पकड़ के जेल में डाला, यह उसका फल है। जो चोरी करेगा तो उसको फल मिलेगा, दण्ड मिलेगा। इस प्रकार से कर्म का परिणाम, प्रभाव और फल, ये तीन चीजें हमको अलग–अलग समझनी चाहिये। तब हम बहुत सारी समस्याओं से बाहर आ जायेंगे।

सिद्धांत यह बनता है कि **अच्छे कर्म करने का फल तो कर्ता को ही समय पर ईश्वर से मिलेगा, किन्तु उसके अच्छे कर्म का परिणाम–प्रभाव अन्य व्यक्तियों पर सुख रूप में भी पड़ सकता है और दुःख रूप में भी।** कभी–कभी बिना स्वयं किए हुए भी फल भोगने को मिल जाता है। शास्त्र कहता है कि– **अकर्तुरपि फलापोपभोगोन्नाद्यवत्। सांख्य।।1–105।।** बिना कर्म किये भी परिणाम दूसरे व्यक्ति को प्राप्त हो जाता है, जैसे रसोइये द्वारा बनाया गया भोजन सेठ द्वारा किया जाता है। **शं नः सुकृतानि सन्तु। ऋग्वेद।(7–35–4)** अर्थात– जो समाज के अच्छे धार्मिक पुरूष हैं, उनके द्वारा किए गए उत्तम कर्म हमारे लिए सुखदायक व लाभकारी हों। जैसे राजा अच्छे कानून बनाता है, नगर पालिका अच्छी साफ–सफाई रख कर हमें सुख देती है। इसलिए वैदिक सिद्धांत यही बनता है कि अन्यों के कर्मों से अन्यों को लाभ या हानि अथवा सुख–दुख दोनों पहुंचा करते हैं। कर्म फल तो कर्ता को ही मिलता है, किन्तु कर्म के परिणाम व प्रभाव से यह स्थिति निर्मित होती है।

❖❖❖

अध्याय 6

भाग्यवाद

घटनाएं होना, पहले से तय नहीं है

कोई चीज होना पहले से निर्धारित नहीं है। जो निर्धारित होता है, उसको एक्सीडेंट नहीं कहते। एक्सीडेंट उसी को ही कहते हैं, जो अचानक हो जाये।

जो पूर्व निर्धारित (प्रीडिसाइडेड) नहीं है, उसी का नाम तो एक्सीडेंट है, आप इसे अकस्मात् कहते हैं। अकस्मात् का मतलब, जो अचानक हो जाये।

जो पूर्व निर्धारित हो, अर्थात इस आदमी को यहां पर मारना है, ऐसे मारना है, वो एक्सीडेंट थोड़ी हुआ, वो तो हत्या है। उसे सोच–समझकर मारा गया है। वो दुर्घटना नहीं होती। दुर्घटना अलग चीज है, हत्या अलग चीज है।

अब खास बात समझने की यह है कि **यह पहले से तयशुदा (प्री–डिसाइडेड) नहीं है कि कौन जीवात्मा, कब क्या सोचेगा?** इसलिए ईश्वर को यह पहले से पता नहीं। जीवात्मा जो कुछ भी सोचे, उसकी स्वतंत्रता है। पर वो जो भी सोचेगा, भगवान की सूची में जरूर है। वह उससे बाहर नहीं सोच सकता। जीवात्मा की पूरी क्षमता ईश्वर को मालूम है। इसलिए ऐसा कभी नहीं होगा कि जीवात्मा कोई ऐसा विचार या कार्य कर डाले, जो ईश्वर के लिए नया हो। जीवात्मा कुछ भी विचारे, उसकी 'ए टू जेड' पूरी लिस्ट भगवान के पास है। उसकी जानकारी में है, क्योंकि ईश्वर सर्वज्ञ है, गॉड इज ओम्नीशियैन्ट।

न सुदिन होते हैं, न कुदिन होते हैं। जब कोई विशेष उपलिब्ध या लाभ मिलता है तो उस दिन को सुदिन या अच्छा दिन कह दिया जाता है। चूंकि, भविष्य पहले से तय नहीं है, इसलिए–

भविष्य कोई नहीं बता सकता

क्या कोई हमारा भविष्यफल बता सकता है? गणित में नियम है:– संभावना का नियम (लॉ आफ प्रॉबेबिलिटि)। ये ज्योतिषी जितनी भी भविष्यवाणियां करते हैं, वो सारी लॉ ऑफ प्रॉबेबिलिटि पर आधारित है। लॉ ऑफ प्रॉबेबिलिटि आप भी जानते हैं, हम भी जानते हैं, फिर उस ज्योतिषी ने नया क्या बता दिया?

एक विद्यार्थी परीक्षा में बैठा है। वो या तो पास होगा या फेल होगा। सौ विद्यार्थी परीक्षा में बैठे हैं। क्या परीक्षा में बैठे सारे के सारे विद्यार्थी फेल हो

जाएंगे? कुछ तो पास होंगे, कुछ की तो पास होने की संभावना है। यह है 'संभावना का नियम'। वहाँ 'संभावना का नियम' काम करता है। यदि कोई व्यक्ति बीस संभावनाए व्यक्त करता है तो कोई तो सच निकलेगी। वहाँ यह नियम लागू होता है, न कि भविष्यवाणी।

इस संभावना के नियम पर ये ज्योतिषी भविष्यफल बताते हैं। कथित वचनों में कुछ तो ठीक (सच सिद्ध) होना ही है। अगर सारे विद्यार्थी जाकर ज्योतिषी से पूछें कि– हम पास हो जाएंगे या फेल हो जायेंगे। संभावना के नियम के आधार पर, मान लीजिए ज्योतिषी उन सबको यह कह दे कि– तुम पास हो जाओगे या सारे के सारे फेल हो जाओगे, तो क्या, सौ में से सौ पास या फेल हो जाएंगे? नहीं होंगे न। कुछ तो पास होंगे, चालीस, पचास, साठ कुछ तो पास होंगे ही। जो पास हुए, वे संभावना के नियम से पास हुए।

जो पास हुए, क्या ज्योतिषी के कहने पर पास हुए? वे अपनी मेहनत से पास हुए। सारे के सारे इतने फिसड्डी नहीं होते हैं कि फेल हो जाएं?

ज्योतिषियों को कुछ नहीं मालूम, इनके चक्कर में नहीं आना। लोगों में ऐसी भ्रांति फैल गई है कि फलाने ज्योतिषी ने बताया था, इसलिए पास हो गए। अच्छा उसने सबको पास होने को बोला था, फिर बाकी चालीस जो फेल हो गए, उनका क्या? उसका कोई जवाब नहीं। **विद्यार्थी अपनी पढ़ाई–लिखाई करने या न करने से पास–फेल होते हैं। उस ज्योतिषी के कहने पर नहीं होते।**

अखबार में भविष्य नहीं पढ़ना चाहिए, सुनना भी नहीं चाहिए। बिल्कुल बेकार की बातें हैं, व्यर्थ की बातें हैं, हानिकारक हैं। ये सब भविष्यफल सुनने–पढ़ने वाले लोग और ज्योतिषी गलती करते हैं।

ये ज्योतिष वाले भविष्यफल बताते हैं। मेष, वृष, तुला, वृश्चिक इत्यादि बारह राशियाँ होती हैं। भारत में सौ करोड़ से ऊपर जनसंख्या है। कुल राशियाँ हैं, बारह। एक राशि में करीब नौ करोड़ व्यक्तियों के नाम आएंगे।

अब अखबार उठाइए और भविष्यफल देखिए। अखबार में लिखा है कि, ''मंगलवार को तुला राशि वालों को लाभ होगा।'' इसलिए मंगलवार को भारत के नौ करोड़ व्यक्तियों को लाभ होना चाहिए। लेकिन होता है क्या लाभ? नहीं होता। तो मतलब यह हुआ कि, ये झूठ बोलते हैं।

जब आप और खोज करेंगे, तो पता चलेगा कि, मंगलवार को कई तुला राशि वालों का दिवाला पिटता है। लाभ की तो बात क्या? जिनका दिवाला पिट गया, वो जाकर क्यों नहीं ज्योतिषियों की गर्दन पकड़ते कि– ''तुमने तो लिखा

था अखबार में, कि लाभ होगा। तो यहाँ हमारा दिवाला क्यों पिटा?'' **मंगलवार को तुला राशि वाले लोगों को पुत्र की प्राप्ति होती है तो कुछ तुला राशि वालों का पुत्र मर भी जाता है। मंगलवार को ही तुला राशि वाले बीमार भी पड़ते है, और मंगलवार को स्वस्थ भी होते हैं। मंगलवार को ही तुला राशि वालों का विवाह भी होता है और तलाक भी। मंगलवार को तुला राशि वाले मुकदमा भी हारते हैं, और जीतते भी हैं। श्मशान, अस्पताल, न्यायालय, विवाह–पंजीयन कार्यालय जाकर, इस सत्यता की पुष्टि हम कर सकते हैं।**

ज्योतिषी उपाय की भी गारंटी नहीं लेते कि यह उपाय करो, आपको निश्चित लाभ होगा। अगर वो उपाय की गारंटी भी लें, तो हम मान भी लें। सब के सब जनता को धोखा देते हैं। इसलिए इन लोगों से सावधान रहिए। इनके चक्कर में नहीं आना।

यह केवल तुक्का है। सौ बार व्यक्ति अंदेशा लगाता है, दो बार सही निकलता है। यह है– लॉ ऑफ प्रोबेबिलिटी, देयर इज नो इन्ट्यूशन।

व्यावहारिक रूप से ऐसे भविष्य की बातों की कोई भविष्यवाणी नहीं कर सकता। व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है – यह सिद्धांत है। अगर व्यक्ति स्वतंत्र है, तो वह कुछ भी कर सकता है। अगर व्यक्ति स्वतंत्र है, तो वह सुधर भी सकता है, बिगड़ भी सकता है।

यदि भविष्यवाणी सत्य हो, तो इसका अर्थ होगा कि सब कुछ पहले से निश्चित है। तब व्यक्ति कर्म करने में परतन्त्र हो जाएगा। यदि व्यक्ति कर्म करने में परतन्त्र है, तो उसे दण्ड नहीं दिया जा सकता। क्योंकि परतन्त्र को दण्ड देना, अन्याय है।

किसी व्यक्ति ने अपनी बन्दूक से चार व्यक्तियों को मार दिया। अब दण्ड, मारने वाले व्यक्ति को मिलेगा, या बन्दूक को? मारने वाले व्यक्ति को मिलेगा। चारों व्यक्ति गोली से मरे, गोली छूटी बन्दूक से तो बन्दूक को दण्ड मिलना चाहिए। परन्तु बन्दूक को दण्ड नहीं दिया जाता। क्योंकि बन्दूक परतन्त्र है। बन्दूक स्वतन्त्र नहीं है। बन्दूक चलाने वाला व्यक्ति स्वतंत्र है। इसलिए बन्दूक चलाने वाले को दण्ड दिया जाता है। यही न्याय है। इसी प्रकार से **प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वतन्त्रता से किए गए कर्मों का फल (सुख–दुःख) स्वयं ही भोगता है।**

गणित वाला ज्योतिष ठीक है, पर भविष्यफल (प्रिडिक्शन) गलत है। व्यक्ति कर्म करने में स्वतंत्र है। जो अपनी इच्छा से काम करे, वह स्वतंत्र है तो

आपका भविष्य पहले से कोई कैसे लिख देगा? अगर पहले से लिखा है, और वही होना है, तो आप परतंत्र हो गए।

समाज की सुख–शांति में बाधा पहुँचाने वाले लोग 'लोक कण्टक' कहलाते हैं। 'लोक कण्टक' यानी काँटे की तरह चुभकर पीड़ा देने वाले। 'मनुस्मृति' (नवम अध्याय का श्लोक 258 से 261) में लिखा है कि– मंगलादेश वृत्ताः' यानी तुम्हे पुत्र या धन की प्राप्ति होगी, जो ऐसा कहने वाले हैं, 'ईक्षणिकेः सह' यानी जो हाथ आदि देखकर भविष्य बताकर धन ठगने वाले हैं, उनको 'लोक कण्टक' यानी प्रजाओं को पीड़ित करने वाले चोर समझें। फिर 'प्रोत्साद्य' यानी उन्हें पकड़कर 'वशमानयेत' यानी उन्हें काराग्रह में रखें।

मान लो कि हमारे यहां एक वर्ष में 100 व्यक्ति आए और सबने आकर अपनी कोई न कोई मनोकामना–मन्नत मांग ली कि यदि हमारी ये मनोकामना पूरी हो गई तो हम अगले वर्ष फिर आएंगे। खूब सारा दान चढ़ाएंगे। जब वो सारे अपने घर जाएंगे तो अपने–अपने उस कार्य की सिद्धि के लिए वे कुछ तो पुरूषार्थ करेंगे या नहीं? बिल्कुल करेंगे। किसी की परीक्षा की तैयारी है, कोई नौकरी ढूंढ़ रहा है, कोई शादी के लिए लड़की ढूंढ रहा है, कोई कुछ कर रहा है, किसी का मुकदमा चल रहा है, सब मेहनत करेंगे। जब सब लोग मेहनत करेंगे तो क्या सब के सब फेल हो जाएंगे? नहीं होंगे। कुछ तो पास होंगे।

मान लो हमारे यहां आए हुए 100 में से 50 लोग अपने कार्य में सफल हो गए। बाकी 50 का काम नहीं हुआ। उनकी मेहनत कम रही। तो 100 में से जो 50 पास हो गए, वो क्या समझेंगे? यही समझेंगे कि बाबाजी के आशीर्वाद से हमारा कार्य सिद्ध हो गया। वो 50 ग्राहक तो पक्के हो गए न हमारे। वो तो हमारे यहां दोबारा आएंगे या नहीं आएंगे? वो उनकी मेहनत से कार्य सिद्ध हुआ या हमारी वजह से? उनकी मेहनत से। यही तो जनता का भोलापन है, जिसका लोग लाभ उठाते हैं। ये उनकी अपनी मेहनत से काम हुआ और श्रेय हम बाबा जी को मिला। जबकि उनकी सफलता में हमारा योगदान नहीं है।

अब अगला गणित सुनिये। जिन 50 लोगों का कार्य सिद्ध हुआ, मनोकामना पूरी हो गई, वो क्या करेंगे? एक–एक व्यक्ति 10–10 में प्रचार करेगा कि हम स्वामी विवेकानन्द बाबाजी के यहां गए थे, और हमारी मनोकामना पूरी हो गई। एक बार तुम भी चलो। और वे 10 को नहीं तो दो–चार को तो पकड़ के लाएंगे अपने साथ। और क्या बोलेंगे– बस तुम एक बार चलो तो हमारे साथ, तुम्हारा खर्चा हम करेंगे। इस प्रकार, 50 लोगों ने 10–10 में प्रचार किया तो हमारा प्रचार कहां पहुंच गया? 500 तक। तो पिछले वर्ष 100 व्यक्ति आए और हमारा प्रचार 500 लोगों तक पहुंच गया।

जो पहले वाले 50 लोग यहां वापस दान देने के लिए आएंगे, वो दो–दो, तीन–तीन को अपने साथ पकड़ के लाएंगे। यदि एक व्यक्ति तीन व्यक्ति भी अपने साथ पकड़ के लाए तो 50 व्यक्ति 150 को पकड़ के लाएंगे। तो 150 और 50 कितने हो गए? 200 हो गए। पिछली बार 100 आए थे अबकि बार 200 आएंगे। इस तरह हमारे यहां आने वाले लोगों की संख्या बढ़ेगी, ऐसे दान मिलेगा। अधिकांश जनता भोली है, स्वार्थी लोग उसका लाभ उठाते हैं। तो ये सारी कहानी है। चाहे बालाजी के मंदिर की हो, चाहे हनुमान मंदिर की हो, चाहे गणेशजी के मंदिर की हो। अब देखिए कल आ रही है गणेश चतुर्थी। वो गणपति बप्पा मोरया, कहकर मूर्ति को उठाकर समुद्र में डाल देंगे। अरे अपने भगवान को तुम समुद्र में डुबाओगे? कुछ तो सोचो दिमाग से। पर लोग बुद्धि से काम नहीं लेते। और ऐसे अंधविश्वासों में भटकते रहते हैं। तो ये सारे मंदिरों की कहानी है। यही हस्तरेखा की कहानी है। यही भविष्यफल की कहानी है, सब झूठ है। लोग कहते हैं– भाई हस्तरेखा देखो, ये मरने की रेखा है, यह बच्चों की रेखा है, यह धन की रेखा है, यह फलाने की रेखा है। एक व्यक्ति ने ज्योतिषी से पूछा– भई मेरे हाथ में बच्चों की कितनी रेखा हैं? बोले– दो। फिर पूछा और मेरी पत्नी के हाथ में कितनी हैं? बोले–तीन। अब बोलो, तीसरा बच्चा कहां से आएगा?

एक विमान दुर्घटना हुई। उस विमान में 150 आदमी थे, कुछ बच्चे थे, कुछ जवान थे, कुछ बूढे भी थे, सारे मारे गए। क्या मरने वालों की हस्तरेखा एक जैसी थी? क्या सबकी हस्तरेखा एक सी होती है? क्या सबकी एक राशि थी? इसीलिए तो हम कहते हैं– झूठ है ये सब।

भाग्यवाद

भाग्यवादी लोग कहते हैं कि इस बात को मानकर चलना चाहिए कि, कर्म न करने से तो कहीं कोई भी प्रयोजन सिद्ध नहीं होता, परन्तु कर्म करने पर भी जिनका कार्य सिद्ध नहीं होता है, वे निश्चय ही भाग्य के मारे हुए लोग हैं। जगत में भाग्य जीतता है, पौरूष नहीं। जब भाग्य अनुकूल रहता है, तब थोड़ा भी पुरूषार्थ सफल हो जाता है।

ब्रह्म ने भाग्य में जो कुछ लिख दिया है, उसे मिटाकर उससे अधिक कार्य कौन कर सकता है। भगवान की इच्छा को, भाग्य के लेख को कौन टाल सकता है? कोई भी ललाट में लिखी रेखा को मिटाने में समर्थ नहीं है। और तो और, ललाट में लिखी गई लिपि को ईश्वर भी नहीं मिटा सकता।

वे भाग्यवादी ये भी कहते हैं कि हम तो तकदीर के खिलौने हैं, विधाता नहीं। वह हमें इच्छानुसार नचाया करती है। जब भाग्य अनुकूल होता है, तब

जिनके बारे में कुछ सोचा भी नहीं गया हो, ऐसी सब सम्पत्तियां अपने आप हमारे पास में आ जाती हैं। अनुकूल भाग्य दैव, असाध्य कार्य को भी अनायास ही सिद्ध कर देता है। जिस दिन, जिस स्थान पर, जिस समय में जो मृत्यु, मान–अपमान व लाभ–हानि होनी है, उस–उस काल में अवश्य होगी। भाग्यवादी कहते हैं कि चाहे सुमेरू पर्वत अपनी जगह से टल जाये, परन्तु भाग्य की रेखा नहीं टल सकती। चाहे कोई अन्तरिक्ष में उड़े या पाताल में घुसे या सब दिशाओं में घूमे, जो भाग्य में दिया हुआ नहीं है, वह नहीं मिलता। **मुकद्दर के आगे किसी का जोर नहीं।**

इस विचारधारा वाले व्यक्ति जब सब तरफ से असफल हो जाते हैं, उनकी बुद्धि काम नहीं करती है, उनका पौरूष थक जाता है, तब वे अन्त में होनहार की आड़ में अपनी अयोग्यता को छिपाने का प्रयत्न करते हैं। जब उनका कोई बस नहीं चलता, तो अपने को तकदीर पर छोड़ देते हैं। और कह ही देते हैं कि–

''जिस काल में जितना, जैसा और जिस तरह से होना लिखा है, वैसा ही होता है। थोड़ा या बहुत, जितना धन विधाता ने भाग्य में लिख दिया है, उतना तो निश्चय ही मरुस्थल में भी मिल जायेगा, इसमें किसी के कुछ करने–धरने से अन्तर नहीं पड़ता, इसलिए उससे अधिक हमको सुमेरू पर्वत पर भी नहीं मिल सकता।''

तब समझाने वाले भाग्यवीर भी समझाते हैं–

''तुम क्यों माथापच्ची करके मरते हो? इस तरह सन्तोष करो, धनियों के सामने व्यर्थ में दीनता से याचना न करो, क्योंकि देखो, घड़ा समुद्र और कुएं से समान जल ही ग्रहण करता है।''

वे अज्ञानी लोग, ईश्वर पर दोष मढ़ते हुए कहते हैं–

उच्छृंखल विधाता बिना मांगे भी सुख देता है और मांगने पर भी नहीं देता है, साथ ही जब चाहता है, तब मनुष्यों का सर्वस्व छीन लेता है।

ऐसा मानने वाले सारे के सारे लोग मूर्ख हैं। ऐसा इसलिए क्योंकि यदि यह माना जाएगा कि ईश्वर की इच्छा या आदेश से ही हम अच्छे बुरे कर्मों को करते हैं तो इस स्थिति में कर्मों का फल ईश्वर को मिलना चाहिए न कि ईश्वर के अधीन जीवात्मा को। क्योंकि ईश्वर ने तो आदेश दिया है और जीवात्मा के अन्दर उसके आदेश का उल्लंघन करने की क्षमता नहीं है।

भाग्यवाद का दुष्परिणाम

नक्षत्र–तारे देखते रहने वाले अज्ञानी व्यक्ति का काम नष्ट हो जाता है। इसमें कोई शक नहीं कि, भाग्य की कल्पना कर और भाग्य पर आश्रित होकर मूढ़ लोग अपना नाश कर लेते हैं।

इसमें क्या संदेह कि, देने वाला दैव और दिलाने वाला पुरूषार्थ, ये दोनों एक दूसरे के सहारे रहते हैं। कर्मठ, धर्मप्रिय पुरूष सर्वदा शुभ कर्म करते हैं और जो कायर होते हैं, जिनमें पराक्रम का नाम नहीं होता है, जिनमें पौरूष नहीं होता है, वे नपुंसक ही दैव के, भाग्य के भरोसे पर पड़े रहते हैं। और कहते रहते हैं कि जो होना होगा, हो जायेगा या होगा तो वही, जो होना है।

भाग्य के भरोसे बैठे रहने पर उसका भाग्य सोया रहता है। उस अकर्मण्य को कुछ नहीं मिलता। जो होना है, वह होगा, इस प्रकार की सोच रखकर भाग्य पर निर्भर हुए व्यक्ति असफल होकर नष्ट हो जाते हैं। जो उद्योग को छोड़कर भाग्य–परायण होकर बैठते हैं, जो लोग परिश्रम को छोड़कर भाग्य को कोसते और दोष देते हैं, वे अपने ही शत्रु बनकर अपने ही धर्म, अर्थ व काम का नाश करते हैं। उन कर्महीन, दीन–हीन लोगों को बहुत दुःख मिलता है।

जीवन में मिला सारा सुख–दुःख, हमारे कर्मों का फल नहीं होता

एक क्षेत्र ऐसा है, जहाँ हम अपने वर्तमान के कर्मों से, अपनी आज की गलतियों से नुकसान उठाते हैं। अपनी मूर्खता से जो गलतियाँ की, उससे जो दुःख मिला, उसका नाम है– 'आध्यात्मिक दुःख'। जैसे कि सड़क पर केले का छिलका आ गया, हमने उस पर ध्यान नहीं दिया, पाँव पड़ गया, धड़ाम से गिर गए और कमर की हड्डी टूट गई।

भूकंप, तूफान, बाढ़, आँधी, चक्रवात, सूखा, अकाल, वर्षा आदि प्राकृतिक दुर्घटनाओं से भी हमको नुकसान उठाना पड़ता है तो दुःख होता है। इसी का नाम है– 'आधिदैविक–दुःख'। इस दुःख का कारण है– जन्म। हमने जन्म लिया है, इसलिए इनको तो हमें झेलना ही पड़ेगा। इसमें कोई विकल्प नहीं है अब।

एक क्षेत्र ऐसा है, जहाँ हमारी गलती नहीं थी, फिर भी दूसरे प्राणियों की गलतियों से हमको दुःख भोगना पड़ता है। जैसे कि, माँ ने कोई गलत दवा या खान–पान में कुछ गलत चीज खा ली तो गर्भस्थ बच्चे को नुकसान हो गया। किसी पड़ोस के बच्चे ने क्रिकेट में बॉलिंग की और उसकी बॉल हमारी आँख में

लगी। उससे पूरी आँख बेकार हो गई। दूसरे व्यक्तियों के कारण से, साँप से, बिच्छुओं से, शेर आदि दूसरे प्राणियों के कारण से, इनके अन्याय से भी हमको दुःख भोगने पड़ सकते हैं। इसे 'आधिभौतिक–दुःख' कहते हैं।

इसलिए उपरोक्त आधार पर एक सिद्धांत समझने का यह है कि, पूरे जीवन में जितना भी सुख–दुख हमें मिलता है, वो सब का सब हमारे कर्मों का फल नहीं होता। फिर से समझिए, बहुत महत्वपूर्ण बात है कि ये जितना भी सुख–दुख मिलता है, हानि होती है, लाभ होता है, कोई सुख दे जाता है, कोई दुख दे जाता है, ऐसी घटनाएं–दुर्घटनाएं आए दिन होती रहती हैं। **जीवनभर में जितना भी सुख–दुख मिलता है, वो सारा का सारा हमारा कर्मफल नहीं होता। उसमें से कुछ भाग हमारा कर्मफल होता है और कुछ बिना कर्म के भी हमको सुख–दुख भोगना पड़ता है। इस प्रकार, बिना कर्म के कहीं सुख भी मिलता है, कहीं दुख भी मिलता है, दोनों चीजें होती रहती हैं।**

एक उदाहरण से इसको अच्छे से समझने का प्रयास करेंगे। मान लीजिए, कोई व्यक्ति टू–व्हीलर दोपहिया मोपेड–स्कूटर से हाईवे पर जा रहा है, तभी पीछे से कोई ट्रक का ड्रायवर जो शराब के नशे में धुत्त होकर ट्रक चला रहा है, वो बहककर एक्सीडेंट कर दे और दोपहिया वाले की वहीं स्पॉट पर मौत हो जाए। जब ऐसी दुर्घटनाओं में किसी की आकस्मिक अकाल–मृत्यु जैसी घटनाएं सामने आती हैं तो लोग अक्सर कहते हैं कि इसकी मौत यहीं लिखी थी। बहुत सारे लोग ऐसा मानते हैं। जबकि वैदिक सिद्धांत यह है कि उसकी मौत वहां नहीं लिखी थी। वो कोई उसके कर्म का फल नहीं था। इसको हमें समझना है।

प्रश्न होगा कि यदि उसकी मौत वहीं लिखी थी तो किसने लिखी थी? आप जो ये मानते हैं कि इसकी मौत वहीं लिखी थी, तो यही तो बोलेंगे न कि ईश्वर ने लिखी थी और कौन लिखेगा? सबकी किस्मत ईश्वर ही तो लिखता है। अब प्रश्न यह होगा कि ईश्वर किस्मत ठीक लिखता है या गलत लिखता है? ठीक लिखता है। वो तो गलत लिखता नहीं है। तो **थोड़ी देर के लिए मान लेते हैं कि ईश्वर ने उसकी मृत्यु वहीं लिखी थी। इसी दिन, इतने बजे, इस स्थान पर ट्रक के नीचे टकरा कर यह व्यक्ति मरेगा। तो इस स्थिति में ट्रक ड्रायवर ने ईश्वर के लिखे आदेश का पालन किया या नहीं किया? उस हिसाब से तो यही माना जाएगा कि उसने ईश्वर के आदेश का पालन किया। तो जो ईश्वर के आदेश का पालन करे, उसे दण्ड देना चाहिए या ईनाम देना चाहिए?**

अगर हत्यारे ड्रायवर को दण्ड की जगह ईनाम देने लगें तो फिर सोचिए

कि उस एक घंटे में शहर की सड़कों पर क्या घटित होगा? जो भी सामने आयेगा, ईनाम के लालच में ड्रायवर उसको रगड़ते जायेंगे, मरो–मरो तुम्हारी मौत आई है, भगवान ने भेजी है मौत, हमने कुछ नहीं किया, चारों तरफ लाशें ही लाशें पड़ी मिलेंगी, और या फिर सब लोग अपने घरों में घुसकर–छुपकर बैठेंगे, कोई बाहर नहीं निकलेगा। क्योंकि वे जानते हैं कि बाहर निकलेंगे तो लोग रगड़ देंगे, मार डालेंगे, इसलिए घर में अपने छुप के बैठो। एक घंटा भी आप इस कानून पर चलते हुए व्यावहारिक रूप से नहीं जी पायेंगे।

याद रखें, जो भी कहीं मर रहा है, वो भगवान के आदेश से बिल्कुल नहीं मर रहा है। वो टू–व्हीलर वाले की अपनी लापरवाही भी हो सकती है, ट्रक ड्रायवर की अपनी लापरवाही भी हो सकती है, मशीन की खराबी भी हो सकती है, ब्रेक फेल हो सकती है, कुछ भी कारण हो सकता है, पर वो ईश्वर की लिखी मौत कदापि नहीं है। **कर्म का जो फल होता है, वो नापतौल कर होता है, ऐसे नहीं कि जो मर्जी आये, दे दो।**

नियम है कि, जितना कर्म उतना फल। इसलिए कर्म के हिसाब से नापतौल कर ही तो फल दिया जायेगा। आपने एक महीने नौकरी की, तो एक महीने का वेतन मिलेगा, दो साल की तो दो साल के हिसाब से मिलेगा। अब जो दुर्घटना (एक्सीडेंट) होती है, उसमें नुकसान होता है, कहीं हाथ टूटता है, कहीं टांगे भी टूट सकती हैं, कहीं बुरी मौत होती है। जो दुर्घटना में ये सब होता है तो क्या वो ड्रायवर नापतौल करके हाथ–पांव तोड़ता है कि इस दुर्घटना में एक हाथ तोड़ना है, इस दुर्घटना में दो हाथ तोड़ना है। क्या ऐसा होता है?

वो तो अचानक से कुछ भी हो जाता है। एक हाथ टूट सकता है, दो भी टूट सकते हैं, पूरा भी मर सकता है। वहां नाप तौल नहीं होती है। एक्सीडेंट नापतौल कर नहीं होता है, जबकि कर्म फल नापतौल कर दिया जाता है। इसीलिये दोनों में फर्क है। एक्सीडेंट अलग चीज है, और नापतौल कर फल देना अलग चीज है। जितनी भी दुर्घटनाएं होती हैं, उन दुर्घटनाओं में जो भी चोट लगती है या मृत्यु होती है, वो मरने वाले का कोई कर्मफल नहीं है।

कर्म को जानकर ही फल दिया जा सकता है, यह था न आठवां नियम? बिना कर्म को जाने तो फल ठीक से दे नहीं पायेंगे। अब इस नियम के अनुसार सोचिये। जो टू–व्हीलर वाला ट्रक के नीचे दुर्घटना में हाइवे पर मर गया। इस बात का तो स्पष्टीकरण हो चुका है कि वो ईश्वर का लिखा हुआ नहीं है। अगर ईश्वर का लिखा है तो ट्रक वाले को ईनाम देना पड़ेगा। जो ईश्वर के आदेश का पालन करे, उसको इनाम दिया जाता है।

ईश्वर के आदेश का पालन करना धर्म है या अधर्म? धर्म। धर्म का फल सुख होना चाहिये या दुःख होना चाहिये? सुख। अगर मानते हैं कि ईश्वर का आदेश है तो उसको सुख देना पड़ेगा। पर वो तो आप देते नहीं हैं। आप तो उस पर मुकदमा करते हैं। इससे सिद्ध हुआ कि वो ईश्वर का आदेश तो था नहीं। तो फिर किसने मारा? ड्रायवर ने मारा। वो शराब के नशे में था, ठीक से गाड़ी नहीं चलाई और ठोंक दिया उसको। तो जो दुर्घटना में मारा गया, वो ड्रायवर की लापरवाही से मारा गया।

अगर इसको मरने वाले का पिछले जन्म का कर्म माना जाये, कर्म का फल माना जाये, तो आठवां नियम एक प्रश्न खड़ा करेगा। वो प्रश्न ये होगा कि कर्म को जाने बिना फल नहीं दिया जा सकता तो क्या ट्रक का ड्रायवर टू–व्हीलर वाले के पिछले जन्म के कर्म को जानता है? यहां आठवां नियम फेल हो गया। आठवें नियम में बताया था कि जब तक हम कर्म को नहीं जान रहे, तब तक ठीक–ठीक फल नहीं दिया जा सकता। ड्रायवर को पता ही नहीं कि इस मरने वाले ने पिछले जन्म में क्या कर्म किया था, कौन सा बुरा काम किया था, जिसका मैं फल दूं? इस तरह से आठवां नियम फेल हो गया तो नौवां भी फेल हो जायेगा।

नौवां नियम था कि कर्म को जानने के बाद फल को जानना भी आवश्यक है। कितने कर्म का कितना फल दिया जाये, ये भी तो जानकारी होनी चाहिये। जब वो कर्म को ही नहीं जानता तो फल का निर्धारण कैसे करेगा कि एक हड्डी तोड़ूं, दो हड्डी तोड़ूं, टांगें भी साथ में तोड़ूं या पूरा मार डालूं। तो यह नौवां नियम भी फेल हो गया।

और दसवां एक और नियम है। अधिकारी व्यक्ति ही कर्म का फल दे सकता है, हर व्यक्ति नहीं दे सकता। इस नियम के अनुसार क्या ट्रक ड्रायवर को यह अधिकार है कि वो मरने वाले के पिछले जन्म का कर्म फल देवे? नहीं। इसलिए दसवां नियम भी फेल हो गया। अब बताइये कहां है कर्मफल?

यहां आठवां, नौंवा और दसवां, ये तीनों नियम फेल हो गये। इसलिये ये सिद्ध हुआ कि ये टू–व्हीलर वाला जो ट्रक के नीचे मरा, यह कोई पिछले जन्म का कर्मफल नहीं है। बिना कर्म के ही उसको दुःख भोगना पड़ा, बेचारे की जान चली गई और उसके परिवार वाले भी दुःखी हो रहे हैं। तब प्रश्न उठेगा कि जब कर्मफल नहीं था तो क्या था? इसको बोलते हैं, आधिभौतिक दुःख। दूसरे चेतन आत्माओं के कारण अन्याय से जो हमें दुःख मिलता है, उसको आधिभौतिक दुःख कहते हैं। यह बिना कर्म के भोगना पड़ता है और यह सबको भोगना पड़ता है। ये अन्याय से प्राप्त होने वाला दुःख है।

कितने ही सुख–दुःख ऐसे होते हैं, जो पूर्वजन्म के कर्मों का फल नहीं हैं। और उन सुख–दुःख को लोग पूर्व जन्म का कर्म–फल मान लेते हैं।

कल्पना कीजिए कि एक सेठ के यहाँ चोरी कर, दो लाख रूपये की संपत्ति चोर ले गए। इस पर लोगों ने कहा कि– "इस सेठ ने पिछले जन्म में किसी का माल खाया होगा, दो लाख किसी का हड़प गए होंगे। अब इसको पिछले जन्मों के कर्मों का फल मिला है, इसलिए इसके यहाँ चोरी हो गई।"

यह सोचना सही नहीं है। वास्तव में सेठ के यहाँ जो चोरी हुई, वो उसके पिछले कर्म का फल नहीं है। इसे समझें–

पहली बात – न्याय करने के लिए पहली शर्त यह है कि जज साहब को पूरा मामला, कर्म का, अपराध का पता होना चाहिए। तभी तो वो ठीक फल दे सकता है। जब तक कर्म को नहीं जानेगा, जब तक मुकद्मा नहीं सुनेगा, तो ठीक से न्याय कैसे करेगा? नहीं कर सकता।

दूसरी बात – जितना अपराध हुआ, उसका दण्ड कितना दिया जाए। अगर दण्ड का पता नहीं कि कितना दण्ड हो, तो भी वो न्याय नहीं कर पाएंगे।

तीसरी बात – निश्चित व्यक्तियों को दंड देने का अधिकार है, सबको नहीं, और वो ही कर्म का फल दे सकते हैं।

ये तीनों नियम वहाँ लागू करके देखिए। एक– जब चोर को सेठ के कर्म का ही पता नही, चोर को नहीं मालूम कि सेठ ने कौन सा अपराध किया था तो वो फल कैसे माना जाये? दो– जब चोर को दण्ड का पता नहीं कि कितना दण्ड दूं, तो न्याय नहीं हुआ, इसलिए वह 'कर्म–फल' नहीं हुआ। तीन– चोर को सेठ के पूर्व जन्म के कर्म का दंड देने का अधिकार नहीं। इस प्रकार न्याय की कसौटी पर तीनों बातें फेल हो गईं।

चौथी बात – जो कर्म का फल दिया जाता है, ठीक–ठीक न्याय से दिया जाता है, उसको चुपचाप भोगना पड़ता है, उसका विरोध नहीं कर सकते।

चोरों ने सेठ के यहाँ दो लाख की चोरी की। इस पर कुछ लोगों ने कहा कि– "यह तो सेठ के पिछले जन्म का कर्म–फल है। इसलिए सेठ को चुपचाप दंड भोगना चाहिए, चोरी का विरोध नहीं करना चाहिए, पुलिस में रिपोर्ट नहीं करना चाहिए।" लेकिन ऐसा तो कोई नहीं करता।

पाँचवी बात – एक न्यायाधीश महोदय ने एक हत्यारे आतंकवादी को फाँसी का दंड दिया। तो जल्लाद ने उस आतंकवादी को फाँसी पर चढ़ा दिया। न्यायाधीश महोदय के आदेश का पालन करने पर जल्लाद को वेतन मिलेगा, ईनाम मिलेगा। दंड नहीं मिलेगा। ऐसे ही चोर ने भी सेठ के यहाँ चोरी की, उसने

भगवान के आदेश का पालन किया तो उसको ईनाम दिलवाओ। जो लोग कर्मफल मानते हैं, उनको चोर को ईनाम दिलवाना चाहिए, कोर्ट में मुकदमा नहीं करना चाहिए। अगर स्वीकार हो, तो आप मान सकते हैं कि यह कर्मफल है।

इस कानून से तो आप एक घंटा भी नहीं जी सकते। जो भी चोर चोरी करे, उसको ईनाम दिलवाओ। अपने–अपने नगर में अहमदाबाद में, उदयपुर में, जबलपुर में, मुम्बई में, दिल्ली में एक घंटे के लिए यह नियम लागू कर दो कि जो भी चोर चोरी करेगा, उसको ईनाम मिलेगा, फिर देखो क्या होता है। आपका जीना मुश्किल हो जायेगा। इसलिए यह बात सत्य नहीं है।

प्रश्न– जो हम भोग रहे हैं, वह कर्मफल है तो भाग्य क्या है?

जो हम भोग रहे हैं, वो यदि कर्मफल है तो फिर भाग्य क्या है? इसका उत्तर यह है कि सुख या दुःख, जो भी हम भोग रहे हैं। उसमें से एक भाग तो हमारे कर्मों का फल है, दूसरा भाग ऐसा है, जो हमारे कर्मों का फल नहीं है। जीवन में हमें बहुत सारा सुख–दुःख बिना कर्मफल के भी भोगना पड़ता है। ऐसा भी सुख–दुःख आता है जीवन में।

जैसे अभी पिछले उदाहरण में बताया था– ट्रक वाले ने स्कूटर वाले को ठोंक दिया और मार दिया। यह स्कूटर वाला जो मरा, यह उसके कर्म का फल नहीं था। बिना कर्म के उसको दुःख भोगना पड़ा। इसको क्या बोलेंगे? अन्याय। यह भाग्य नहीं है। अन्याय की परिभाषा क्या है? मैं दो विकल्प रखता हूं, उसमें से आप बताईये कि अन्याय किसको कहते हैं?

पहला विकल्प– बुरे कर्म के आधार पर किसी को दुःख दिया जाए।

दूसरा विकल्प– बिना कुछ भी बुरा कर्म किए, किसी को खामखां दुःख दिया जाए।

जो बिना बुरे कर्म के दुख दिया जाए, इसका नाम अन्याय है। इससे सिद्ध हुआ कि बिना कर्म के भी हमको बहुत सारा दुःख भोगना पड़ता है। ये जो सारा अन्याय है, वो कर्मफल नहीं है। और जो कर्म का फल है, उसका नाम है– न्याय, इसी का नाम भाग्य है। दोनों एक ही हैं।

अब भाग्य में दो भाग हैं। एक तो पिछले जनम के कर्म का फल जो जाति, आयु, भोग के रूप में मिल गया और समाप्त हो गया। और दूसरा इस जन्म में किए गए कर्म का फल। जो इन दोनों को घुला–मिला देते हैं, इसलिए वे उलझ जाते हैं। ये समझ में नहीं आता कि हम जो सुख–दुःख भोग रहे हैं– इस जनम का है या पिछले जन्म का है? भाग्य के इन दो भागों के

अलावा अन्याय से भी हमें सुख–दुःख मिलता है। हमें इन तीनों तथ्यों को अलग–अलग समझना चाहिए।

अगर आप कर्मफल के उन दस नियमों से परीक्षण करेंगे तो आपको मोटा–मोटा पता चल जाएगा कि ये कर्म का फल है अथवा नहीं। और यदि कर्म का फल है तो पिछले जनम का है या इस जनम का।

हमें जो सुख–दुःख मिलता है, उसके दो भाग हैं :–

(एक) व्यक्ति के अपने कर्मों का फल है। और (दूसरा) अन्यों के कारण से भी हमको बिना हमारे दोष (गलती) के यानि अन्यायपूर्वक दुःख मिलता है। अगर पूरा का पूरा हमारे ही कर्मों का फल मान लिया जाए, तो अपराधी तो दुनिया में कोई भी नहीं है। तो फिर किसी पर कोर्ट केस क्यों?

जीवन में जितने भी सुख–दुःख मिलते हैं, वो सब के सब हमारे कर्मों का फल नहीं होते हैं। कुछ कर्मों का फल (भाग्य) है, और कुछ अन्याय से भी हमें मिलता है।

अन्याय किसको कहते हैं? **बिना अपराध के, बिना दोष के, किसी को दुःख दे देना अथवा सुख दे देना, भी अन्याय है।**

दुःख वाला उदाहरण पकड़कर चलते हैं। बिना अपराध के किसी को दुःख दे देना, अन्याय है। और अपराध करने पर उसके अपराध के अनुसार उसको दंड देना, यह न्याय है।

चोरों ने सेठ के यहाँ जो दो लाख रूपये की चोरी की, यह था–अन्याय। सेठ निर्दोष था। उसका कोई दोष नहीं था। फिर भी चोरों ने सेठ के यहाँ चोरी करके सेठ को दुःख दिया। इसका नाम अन्याय है। यह पिछला कर्म–फल नहीं है।

अन्याय से कोई नहीं बच सकता

ऋषि लोग कहते हैं कि चपरासी (नौकर) से लेके और राष्ट्रपति (राजा) तक कोई भी हो, जो भी इस संसार में जन्म लेगा, सब के साथ अन्याय होगा। **एक भी व्यक्ति आपको दुनिया में ऐसा नहीं मिलेगा, नॉट ए सिंगल परसन, जो हाथ ऊँचा करके ऐसा कह दे कि, मेरे साथ आज तक एक बार भी अन्याय नहीं हुआ।** वेद और ऋषि लोग क्या कहते हैं? जो संसार में जन्म लेगा, उसके साथ अन्याय होना निश्चित (गारंटेड) है। **यहां अन्याय की गारंटी है, न्याय की कोई गारंटी नहीं।**

लोग कहते हैं, साहब हमारा कोई दोष नहीं था, हमको क्यों भोगना पड़ा?

वो तो भोगना ही पड़ेगा। आपने क्या गलती की? संसार में जन्म लिया, ये ही गलती की। अब आप सोचेंगे, संसार में जन्म लेना भी कोई गलती है क्या? आपको बड़ी अजीब–अजीब बातें जानने को मिलेंगी। शायद आपने पहली–पहली बार ये बात सुनी होगी। आज तक किसी वक्ता के मुंह से ये नहीं सुना होगा कि, संसार में जन्म लेना भी कोई गलती है। पर वेद और ऋषि ये ही कहते हैं कि **संसार में जन्म लेना ही सबसे बड़ी गलती है। अगर जन्म ले लिया तो फिर दुःख आयेगा, उस दुःख से बच नहीं सकते।**

यहां किसी के साथ कम अन्याय होगा, किसी के साथ अधिक होगा, किसी के साथ घर में होगा, किसी के साथ बाजार में होगा, किसी के साथ ट्रेन में होगा, किसी के साथ बस में होगा, किसी के साथ जंगल में होगा, किसी के साथ नगर में होगा, कहीं न कहीं होगा, कुछ न कुछ होगा। यहां किसी को भी पूरा–पूरा न्याय नहीं मिलता।

संसार में दुःख मिलता है। दुःख भोगना बुद्धिमत्ता नहीं है। इसलिए कहा जाता है कि– **''यह संसार मूढ़ व्यक्तियों के लिए है।''** क्योंकि जिसने संसार में जन्म लिया, उसे कुछ न कुछ दुःख भोगना ही पड़ेगा। उसने संसार में जन्म लेकर दुःख भोगा है, तो इसका मतलब हुआ कि अभी उसमें कुछ न कुछ मूढ़ता अर्थात् कुछ अविद्या बाकी है।

बहुत सारा दुःख, हमको अन्याय से भोगना पड़ता है। उस दुःख व अन्याय की क्षतिपूर्ति कैसे होती है? कुछ तो न्यायाधीश, राजा आदि कर देते हैं और :–

कुछ अन्याय की, भगवान क्षतिपूर्ति करेगा

भगवान कैसे क्षतिपूर्ति करेगा, कहाँ करेगा, कब करेगा, वो हम नहीं जानते। ईश्वर की कर्म–फल व्यवस्था, 'न्याय–व्यवस्था' बड़ा विस्तृत, जटिल विषय है, सूक्ष्म विषय है। बड़े–बड़े ऋषि–मुनियों ने इस विषय पर बहुत चिन्तन किया, बहुत मनन किया और कुछ बातें जो उनको समझ में आईं, वो उन्होंने बताईं। फिर आगे चलकर के उन्होंने भी हाथ खड़े कर दिये कि– ''भई अपने बस का नहीं है, यह बहुत कठिन है। इसको कोई भी नहीं समझ सकता।''

इतना जरूर निश्चित है कि जो भी क्षति हुई, जो भी नुकसान हुआ, उसकी पूर्ति तो मिलेगी, इसमें कोई शंका नहीं है। इस बात को एक उदाहरण से समझेंगे :–

एक सेठ के यहाँ चोरी हुई। पुलिस पीछे लग गई। चोर पकड़ा गया और चोरी में जो सामान गया था, वह सामान भी मिल गया। अब न्याय करना है, तो दो पात्र हैं हमारे सामने, एक तो सेठ और एक चोर। सेठ के यहाँ चोरी हुई, चोर

ने चोरी की। अब दोनों के साथ न्यायाधीश कुछ न कुछ व्यवहार करेगा। चोर को तो न्यायाधीश जेल में डाल देगा। और जो चोरी का माल बरामद हुआ था, वो माल सेठ साहब को वापस मिलेगा। तभी तो इसे न्याय कहेंगे। यह जिम्मेदारी सरकार की और न्यायाधीश की है। अगर चोरी का माल सरकारी खजाने में चला जाए, तो सेठ कहेगा– ''साहब, मेरे साथ तो न्याय नहीं हुआ। मेरी तो संपत्ति व्यर्थ में चली गई।''

भगवान तो पूर्ण न्यायकारी है। तो आपकी जो क्षति हुई, वो ईश्वर पूरी नहीं करेगा क्या? न्याय का नियम है कि जो क्षति हुई, उसकी पूर्ति तो होनी ही चाहिए। नहीं तो फिर, अंधेर नगरी चौपट राजा। न्याय तो तभी होता है कि जो सामान चुराया गया है, वह वापस मिले अथवा उतना मूल्य वापस मिले। **ईश्वर भी न्यायकारी है, जिसका जो भी नुकसान हुआ, ईश्वर उसकी पूर्ति करेगा। कब करेगा, कहाँ करेगा, कैसे करेगा, यह वही जाने, यह हम नहीं जानते।**

सरकार न्याय कर सकती है तो ठीक है, नहीं कर सकती, तो उसके नुकसान की पूर्ति अंत में ईश्वर करेगा। इस प्रकार कम्पन्सेशन की गारंटी तो है, लेकिन वो भी पूरी सुरक्षा तो नहीं है न। एक बार तो मार खानी पड़ी न। पूरी तरह से सुरक्षा केवल मोक्ष में है। वहाँ पर कोई व्यक्ति हम पर आक्रमण कर ही नहीं सकता। अगर आपको ऐसा ठीक समझ में आता हो कि कोई हमारा नुकसान कर ही नहीं पाए तो फिर 'मोक्ष' की तैयारी करो।

अन्याय से बचना है तो मोक्ष में जाओ

अविद्या (मूर्खता) को मारने के लिए ही हमें मनुष्य जन्म मिला है। मनुष्य जन्म प्राप्त किया है, तो समाधि लगाओ, शास्त्र पढ़ो, समाज की सेवा करो, निष्काम कर्म करो और मोक्ष में जाओ। संसार में पड़े–पड़े दुःख मत भोगो। यही तो मनुष्य जीवन का उद्देश्य है।

लोग पूछते हैं कि दूसरों के अन्याय से बचने का क्या तरीका है, क्या उपाय है? तो उसका उपाय जो वेदों में बताया गया है, मोक्ष।

आपने जन्म ले लिया तो कहीं भी सुरक्षा नहीं। कोई न कोई दुःख आएगा ही। धरती पर कहीं भी कोई भी व्यक्ति पूरा सुखी नहीं है। तीन दुःखों से छूटना, यह मनुष्य का सबसे ऊँचा लक्ष्य है। पूरी सुरक्षा केवल मोक्ष में है। इसलिए फटाफट मोक्ष में सरक जाओ।

अगर छह घंटे तक भूख के दुःख से छुटकारा पाने के लिए आप भोजन करते हैं, तो इकतीस नील, दस खरब, चालीस अरब वर्षों तक दुःख से छुटकारा

पाने के लिए (मोक्ष के लिए) प्रयास क्यों न करें? करना चाहिए। इसलिए मोक्ष के लिए अभी प्रयास करो। जब दोबारा भूख लगेगी तो दोबारा खा लेंगे, और जब दोबारा मोक्ष से वापस लौट कर आएंगे तो दोबारा फिर मोक्ष में चले जाएंगे।

ऐसा तो नहीं है कि हमे मोक्ष केवल एक ही बार मिलेगा, फिर मिलेगा ही नहीं। भगवान ने कोई रोका थोड़े ही है। वो कहता है– दोबारा फिर कर्म करो, फिर आ जाना मोक्ष में। दोबारा रास्ता खुला है। हम बार–बार मोक्ष में जाएंगे और वहाँ अपना कर्मफल भोगेंगे और फिर वापस आएंगे। फिर दोबारा कर्म करेंगे, फिर चले जाएंगे। इसलिए बार–बार मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयास करना चाहिए।

वहां गारंटी है कि वहां कोई आप पर अन्याय नहीं कर पायेगा। वहां कोई आपको दुःख नहीं दे पायेगा। मोक्ष में केवल सुख होता है लेकिन कोई दुःख नहीं होता है, पर संसार में तो होता है। यहां तो सुख भी मिलता है, दुःख भी मिलता है, कहीं न्याय, कहीं अन्याय।

प्रश्न – मोक्ष में जाने के पश्चात् कर्मफल भोगना शेष बचा रहता है क्या?

मोक्ष में जाने के बाद भी हमारे कुछ कर्म बचे रहते हैं। जो सकाम कर्म हैं, जिनका फल जाति, आयु, भोग है, वो कर्म बचे रहते हैं। उन्ही कर्मों की वजह से हमको मोक्ष से वापस लौटना पड़ता है। और उन्हीं कर्मों के आधार पर फिर लौटने के बाद हमको आगे मनुष्य जन्म मिलता है। **कर्म बचे रहेंगे तभी हमको मुक्ति से लौटकर आगे मनुष्य जन्म मिलेगा।** मुक्ति से लौटकर जो सबसे पहला जन्म होगा वो मनुष्य का होगा, कीड़े–मकोड़े का नहीं होगा।

प्रश्न – सबसे पहली बार जब ईश्वर ने सृष्टि बनाई तो किन कर्मों के आधार पर बनाई?

इसका उत्तर है कि, सबसे पहली बार ईश्वर ने कभी सृष्टि बनाई ही नहीं। कठिन है इसको समझना। लोग कहते हैं कि कितना भी पीछे चले जाओ, कभी तो शुरू हुआ होगा। वेद ऐसा स्वीकार नहीं करता है। वेद कहता है कि तीन वस्तुएं अनादि हैं, ईश्वर, जीव, प्रकृति। अनादि का मतलब जो कभी पैदा नहीं हुई, जिनका आदि नहीं, आरंभ नहीं है, उत्पत्ति नहीं है, नो बिगनिंग। सदा से है, एटरनल। जो वस्तु पैदा होती है, वो नष्ट भी होती है। जो पैदा नहीं होती, वो नष्ट भी नहीं होती। ईश्वर, जीव और प्रकृति, तीन वस्तुएं अनादि काल से हैं। इसलिये इसका आरंभ नहीं है। जीवात्मा हमेशा से कर्म कर रहा है। और ईश्वर उसके कर्मों का फल दे रहा है। और प्रकृति में से उठा–उठा के दे रहा है।

जिसने अच्छे कर्म किये, उसको मनुष्य का शरीर दे दिया। जिसने बुरे कर्म किये, उसको कुत्ते, गधे का शरीर दे दिया। प्रकृति में से बना–बना के दे रहा है। इस प्रकार से पहली बार ईश्वर ने सृष्टि कभी नहीं बनाई। इसको कैसे समझे?

ईश्वर न्यायकारी है और न्यायकारी कर्म के आधार पर फल देता है। अब कल्पना कीजिये कि जब सबसे पहली बार ईश्वर सृष्टि बनायेगा तब केवल मनुष्य बनायेगा या कुत्ते, गधे, गाय, घोड़े भी चाहिये? अकेला मनुष्य तो जी नहीं सकता, उसको गाय भी चाहिये, घोड़ा भी चाहिये, गधा भी चाहिये, सब कुछ चाहिये। कल्पना कीजिये कि ईश्वर ने पहली बार सृष्टि बनाई, कुछ मनुष्य बनाये, कुछ गाय, घोड़े, कुत्ते, बिल्ली, सारे प्राणी बना दिये। अब जब पहली बार बनायेगा तो बिना कर्म के बनाना पड़ेगा, पीछे स्टाक में तो कर्म हैं ही नहीं। और जब बिना कर्म के किसी को कुत्ता, गधा, आम, पीपल बनायेगा तो क्या होगा? वह अन्यायकारी माना जायेगा। तो परिणाम क्या निकला, यदि पहली बार सृष्टि आरंभ हुई, ऐसा मानते हैं, तो यह भी मानना पड़ेगा कि ईश्वर अन्यायकारी है। अब बताइये, क्या आप ईश्वर को अन्यायकारी मानने के लिये तैयार हैं? इसलिये मैं कह रहा हूँ कि संसार पहली बार कभी नहीं बना। पहली बार बना मानते ही ईश्वर अन्यायकारी हो जायेगा और जब वह पहले दिन अन्याय करे, उससे आप आगे क्या उम्मीद रखेंगे न्याय की?

एक आदमी आपकी कंपनी में पहले दिन आया नौकरी करने और आते ही पहले दिन चोरी की। बताओ उस पर क्या भरोसा करेंगे आप, कि आगे ठीक काम करेगा? तो इसीलिये ईश्वर ने कभी भी पहली बार सृष्टि आरंभ नहीं की। वो न्यायकारी है, हमेशा कर्म के आधार पर ही सृष्टि बनाता है।

ईश्वर ने संसार हमारे लाभ के लिये बनाया। हमको क्या चाहिये, खीर चाहिये, पूड़ी चाहिये, मिठाई चाहिये, केला चाहिये, अंगूर चाहिये, संतरा चाहिये, अनार चाहिये। अगर ईश्वर सृष्टि नहीं बनायेगा तो आपको ये केला, अंगूर, संतरा, तरबूज खाने को मिलेगा क्या? नहीं मिलेगा न। तो आप खाना चाहते हैं या नहीं? इसीलिये आपके, हमारे, सबके लाभ के लिये बनाई। ईश्वर ने कहा कि देखो, आपके जो पिछले वाले कर्म हैं, उन पिछले कर्मों का फल भोग लो। इसीलिये संसार बनाता हूँ, और दूसरा प्रयोजन अब अच्छे–अच्छे काम करो और मोक्ष में जाओ। इस प्रकार दो कारण हैं, सृष्टि बनाने के। पहला हमारे पिछले कर्मों का फल देने के लिये ईश्वर ने सृष्टि बनाई। दूसरा आगे हम अच्छे–अच्छे

काम करके मोक्ष में चले जायें, इसीलिये भगवान ने सृष्टि बनाई।

ईश्वर ने पशु पक्षी आदि को सृष्टि नियमन के लिए भी बनाया है, और कर्म फल देने के लिए भी बनाया है। सृष्टि की व्यवस्था, नियंत्रण, संतुलन भी चलता रहे और जीवात्माओं को उनके कर्मों का फल भी दिया जाए, ये दोनों ही कारण हैं।

प्रश्न – जब भगवान हमें कभी आज तक मिले नहीं, तो उन पर विश्वास कैसे करें?

अच्छा यह बताइये कि आपके दादा जी के दादा जी कभी मिले थे आपको? नहीं मिले न। तो आप उन पर विश्वास करते हैं या नहीं करते? करते हैं न। देखो बिना मिले विश्वास कर रहे हैं। जापान के प्रधानमंत्री आपको कभी मिले थे क्या? नहीं मिले न। तो आप उन पर विश्वास करते हैं, कि जापान में कोई प्रधानमंत्री हैं। तो प्रत्यक्ष देखना, मिलना कोई आवश्यक नहीं है, उसके बिना भी खूब विश्वास होता है। हमारे दादा जी की पांचवी पीढ़ी, आठवीं पीढ़ी, दसवीं पीढ़ी, पचासवीं पीढ़ी सब तो थे, हम तो किसी से नहीं मिले, पर हम सब पर विश्वास करते हैं, हां बिल्कुल करते हैं। प्रत्येक देश में राष्ट्रपति है, प्रधानमंत्री है। हम कितने देशों के राष्ट्रपति से नहीं मिले, शायद अपने देश के प्रधानमंत्री से भी न मिले हों, अखबार में भले ही फोटो देख लेते हैं, टेलीविजन में न्यूज देख लेते हैं, पर प्रधानमंत्री से साक्षात् तो कभी भी नहीं मिले। तो भी हम मानते हैं।

विश्वास करने का कारण है प्रमाण। प्रत्यक्ष प्रमाण एक प्रमाण है, जिससे हम किसी बात पर विश्वास करते हैं। पर सब चीजों का प्रत्यक्ष हम नहीं कर पाते। सब देशों के प्रधानमंत्रियों का प्रत्यक्ष नहीं किया। फिर भी हम विश्वास करते हैं, किस आधार पर? अन्य प्रमाणों के आधार पर। अन्य प्रमाण कौन से हैं? पहला प्रत्यक्ष प्रमाण बता चुके हैं। दूसरा अनुमान प्रमाण, तीसरा उपमान प्रमाण, चौथा शब्द प्रमाण। ये प्रमाण हैं, जिनसे हम विश्वास करते हैं। ईश्वर का विश्वास भी हम शब्द प्रमाण से, अनुमान प्रमाण से कर सकते हैं।

हमारी इस प्रकृति में आकर्षण बल है या नहीं? क्या किसी ने देखा आकर्षण बल? 'एक्स रे' होती है या नहीं होती, अल्फा, बीटा, गामा किरणें (रेज) होती हैं या नहीं होती? होती हैं। दिखती है क्या? नहीं दिखती। अगर आप आंख से देखकर ही मानते हैं, बिना देखे नहीं मानते तो मेरा एक सवाल है कि क्या

आपके सर में दिमाग है या नहीं? हां। कब देखा था आपने? आप तो कह रहे हो कि बिना देखे हम मानते ही नहीं, तो आपने तो देखा नहीं, मेरे सर में दिमाग है, तो आप हां कैसे कह रहे हैं? मैंने कहा– आप मानते है या नहीं मानते? प्रश्न पूछने वाले अब चुप।

संसार को उत्पन्न करने वाला, सबकी रक्षा करने वाला, हमको प्राण देने वाला, सब दुःखों को दूर करने वाला, सब प्रकार के सुख देने वाला, सब कुछ देने वाला सबसे बड़ा देव, समस्त क्लेशों को भस्म करने वाला, जो ईश्वर का तेजस–स्वरूप है, ज्ञान–स्वरूप है, जो कि वरण करने योग्य है, उसको हम लोग धारण करें। वह हम सबकी बुद्धियों को अच्छे कार्यों में प्रेरित करे, अच्छे मार्ग में हमको चलाए, हमसे अच्छे–अच्छे काम कराए, हमें बुरे काम से बचाए ताकि हम दण्ड से बच सकें।

हे भगवन! प्रिय भगवन!
हम सबकी, बुद्धि को
तुम, अच्छा बनाओ,
अच्छा बनाओ,
हां.... अच्छा बनाओ,
ताकि हम भी, सुखी रहें
और दूसरे भी, सुखी रहें।

।।समाप्त।।

❖

स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक की अन्य पुस्तकें

1. तत्त्व ज्ञान।
2. दुःख, स्वरूप, कारण और निवारण।
3. उत्कृष्ट शंका–समाधान।
4. संतान–निर्माण।
5. जीवनोपयोगी संदेश।
6. क्रोध को कैसे दूर करें (पत्रक)।
7. आज का सुविचार (कलेन्डर)।

दर्शन योग महाविद्यालय का परिचय

स्थापना – दर्शन योग महाविद्यालय की स्थापना चैत्र शुक्ला प्रतिपदा विक्रम संवत् 2043 (10 अप्रैल 1986) को श्री स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा हुई।

उद्देश्य

(1) महर्षि पतंजलि प्रणीत अष्टांग योग की पद्धति से उच्च स्तर के योग–प्रशिक्षकों को तैयार करना, जो देश–विदेश में प्रचलित मिथ्यायोग के स्थान पर सत्य योग का प्रशिक्षण दे सकें।

(2) विशिष्ट योग्यता वाले वैदिक–दार्शनिक विद्वानों का निर्माण करना, जो सार्वभौमिक युक्तियुक्त, अकाट्य, वैज्ञानिक, शाश्वत वैदिक सिद्धान्तों का बुद्धिजीवी वर्ग के समक्ष प्रभाव–पूर्ण शैली से प्रतिपादन करके, उनकी नास्तिकता मिटाकर उन्हें वैदिक–धर्मानुयायी बना सकें।

(3) निष्काम भावना से युक्त, मनसा, वाचा, कर्मणा एक होकर तन, मन और धन से सम्पूर्ण जीवन की आहुति देनेवाले व्यक्तियों का निर्माण करना, जो अपनी और संसार की अविद्या, अधर्म तथा दुःखों का विनाश करके उसके स्थान पर विद्या, धर्म तथा आनन्द की स्थापना कर सकें।

प्रवेश के लिए योग्यता

- प्रवेश केवल ब्रह्मचारियों के लिए। (आजीवन ब्रह्मचारियों को प्राथमिकता)
- वैदिक सिद्धान्तों में निष्ठा होना।
- योगाभ्यास तथा दर्शनों के अध्ययन में रुचि होना।
- संस्कृत भाषा पढ़ने, लिखने, बोलने में समर्थ होना। (व्याकरणाचार्य, शास्त्री या समकक्ष योग्यता वालों को प्राथमिकता)।
- यम–नियमों का श्रद्धापूर्वक पालन करना।
- निष्काम भाव से समाज–राष्ट्र की सेवा का संकल्प होना। त्यागी, तपस्वी, सदाचारी होना।
- अध्ययन काल में घर से या स्वजनों से सांसारिक सम्बन्ध न होना।
- अवस्था 18 वर्ष से अधिक होना।

संस्थान की विशेषताएँ

1. प्रत्येक ब्रह्मचारी को पक्षपात रहित (समान रूप से) भोजन, वस्त्र, दूध–घी, फल, पुस्तक, आसन इत्यादि सभी वस्तुएं निःशुल्क प्राप्त हैं।
2. प्रतिदिन कम से कम दो घण्टे व्यक्तिगत योगाभ्यास (ध्यान) करना अनिवार्य है।
3. प्रतिदिन क्रियात्मक योग प्रशिक्षण में विवेक, वैराग्य, अभ्यास, ईश्वर–प्रणिधान, मनोनियन्त्रण, ध्यान, समाधि तथा स्वस्वामिसम्बन्ध (ममत्व) को हटाना इत्यादि आध्यात्मिक सूक्ष्म विषयों पर विस्तार से विवेचन किया जाता है।
4. यम–नियमों का मनसा वाचा, कर्मणा सूक्ष्मता से पालन कराया जाता है।
5. दिन में 5.30 घण्टे का मौन रहता है, जिसमें ध्यान, स्वाध्याय आदि सम्मिलित हैं।

6. रात्रि में आत्म–निरीक्षण होता है जिसमें दिन भर के दोषों का सबके समक्ष ज्ञापन तथा भविष्य में सुधार हेतु प्रयत्न किया जाता है।
7. वार्तालाप का माध्यम संस्कृत भाषा है।
8. प्रतिदिन यज्ञ, वेदपाठ तथा वेदमन्त्र का स्वाध्याय होता है।
9. सप्ताह में एक बार आसन–प्रशिक्षण तथा समय–समय पर व्याख्यान – प्रशिक्षण का भी अभ्यास कराया जाता है।
10. दर्शनों की लिखित एवं मौखिक परीक्षाएँ ली जाती हैं।
11. प्रातःकाल 4 बजे से रात्रि 9:30 बजे तक आदर्श एवं व्यस्त गुरूकुलीय दिनचर्या है।

विशेष – प्रवेश लेने वाले ब्रह्मचारियों का तीन मास तक बौद्धिक, आध्यात्मिक तथा व्यावहारिक परीक्षण किया जाता है। ब्रह्मचारी के योग्य सिद्ध होने पर ही स्थायी प्रवेश दिया जाता है।

महाविद्यालय के माध्यम से कार्य एवं उपलब्धियाँ

सन् 1986 से लेकर 2012 तक महाविद्यालय के 27 वर्षों में लगभग 15 प्रान्तों के स्नातक, स्नातकोत्तर (Graduate, Post Gradute) व्याकरणाचार्य, शास्त्री स्तर के लगभग 55 ब्रह्मचारियों को प्रशिक्षण दिया गया। योग, सांख्य, वैशेषिक, न्याय, वेदान्त इन दर्शनों का संस्कृत भाष्यों सहित अध्यापन हुआ। इन दर्शनों की लिखित एवं मौखिक परीक्षाएँ ली गई। दर्शनों के अतिरिक्त ईश आदि 10 उपनिषदों तथा वेद के चुने हुए अध्यायों का भी अध्यापन किया गया एवं आंशिक रूप से व्याकरण तथा संस्कृत भाषा का भी अध्यापन किया गया।

उपर्युक्त दर्शनों को पढ़ाने की योग्यता प्राप्त करने वालों को दर्शनाचार्य, दर्शन–विशारद तथा दर्शन–प्राज्ञ उपाधियाँ प्रदान की गई तथा क्रियात्मक योग प्रशिक्षण देने में समर्थों को योग–विशारद तथा योग–प्राज्ञ उपाधियाँ प्रदान की गईं। ब्रह्मचारियों को वैदिक, दार्शनिक–गंभीर सिद्धान्तों का ज्ञान कराया गया, जिसके फलस्वरूप अनेक ब्रह्मचारी सूक्ष्म विषयों से सम्बन्धित शंकाओं का समाधान करने, गंभीर विषयों पर निबंध लिखने तथा दार्शनिक व्याख्यान देने में निपुण हुए हैं। यम–नियमों का सदा व्यवहार में प्रयोग कैसे किया जाये तथा निष्काम कर्म कैसे किये जाये, इस विषय में भी ब्रह्मचारियों को विशेष प्रशिक्षण दिया गया। ब्रह्मचारियों ने पर्याप्त मात्रा में इन विषयों को समझा और यथाशक्ति जीवन में उतारा।

वर्तमान में महाविद्यालय के स्नातक विभिन्न प्रान्तों में संस्कृत–भाषा, व्याकरण, और दर्शन अध्यापन, योग–प्रशिक्षण तथा वैदिक धर्म के प्रचार कार्यों में संलग्न हैं। प्रवेश के इच्छुक पत्र–व्यवहार करें।।

संस्थापक
स्वामी सत्यपति परिव्राजक

निदेशक
स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

आचार्य
स्वामी ब्रह्मविदानन्द

उपाध्याय
स्वामी ध्रुवदेव परिव्राजक

व्यवस्थापक
ब्र. दिनेश कुमार